वार्षिक पत्रिका : 2017–18 (वि.स. 2074–75)

चमन संदेश

चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

हमारे प्रेरणा पुंज

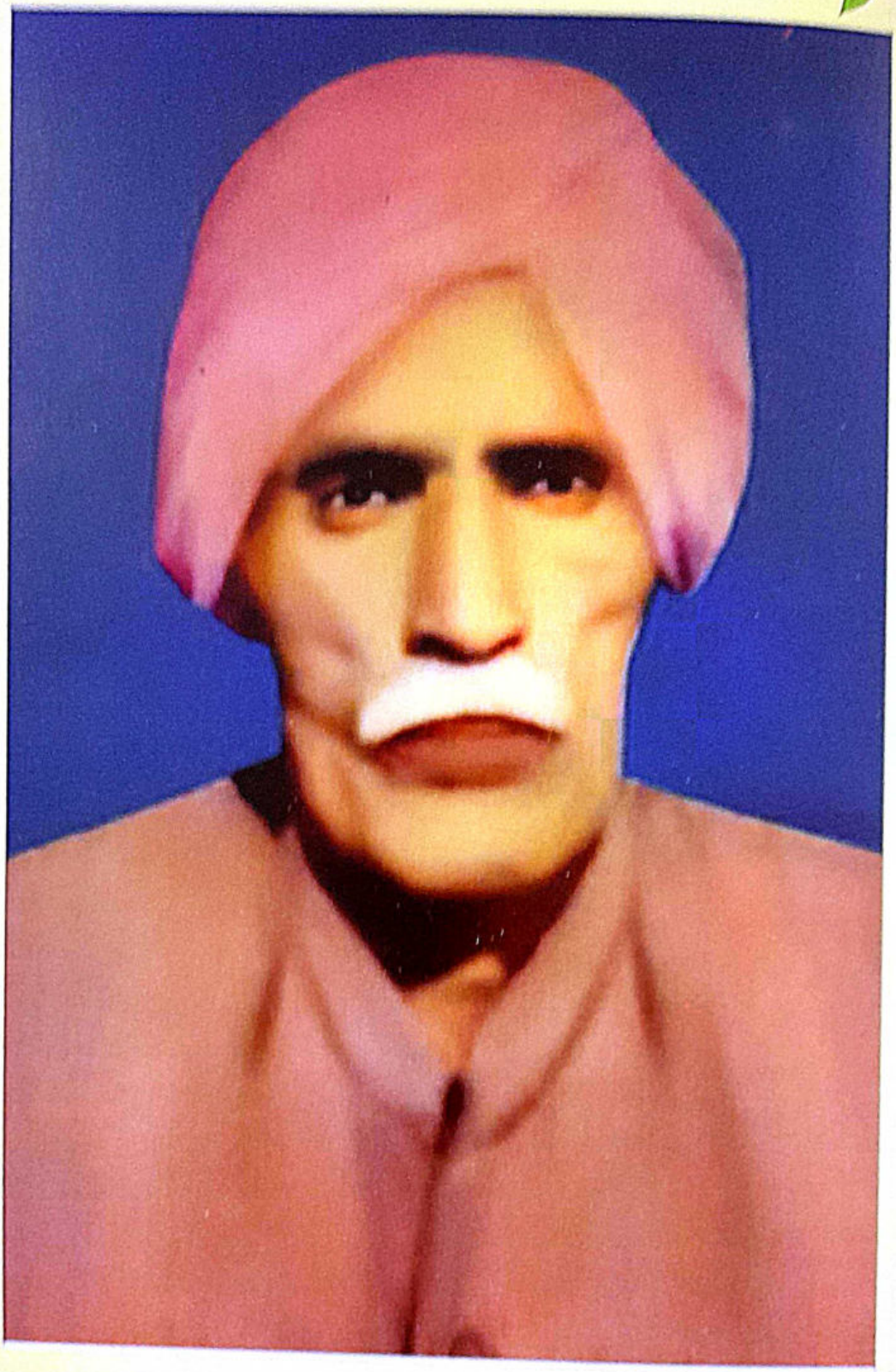

कीर्तिशेष पंडित चमन लाल शर्मा

।। चमन संदेश ।।

वार्षिक पत्रिका : 2017–18 (वि.स. 2074–75)

मुख्य संरक्षक : श्री ईश्वर चन्द शर्मा, संस्थापक (चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार)
: श्री राम कुमार शर्मा, अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

संरक्षक : श्री अरूण कुमार हरित, सचिव, प्रबन्ध समिति
: श्री अतुल हरित, कोषाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

मार्गदर्शक : डॉ. सुशील उपाध्याय, प्राचार्य

मुख्य सम्पादक : डॉ. दीपा अग्रवाल

सम्पादक : डॉ. तरूण कुमार गुप्ता

सम्पादक मण्डल

डॉ. किरण शर्मा
डॉ. नीशू कुमार
डॉ. मीरा चौरसिया
श्री आशुतोष शर्मा

छात्र सम्पादक

कार्तिक (बी.ए.–प्रथम वर्ष)
साहिस्ता परवीन (बी.ए.–द्वितीय वर्ष)
स्वाति भारती (बी.कॉम–प्रथम वर्ष)
अजय गिरि (बी.कॉम–द्वितीय वर्ष)
मोहित कुमार (बी.एससी.–प्रथम वर्ष)
सचि बंसल (बी.एससी.–द्वितीय वर्ष)

नोट : रचनाओं की अन्तर्वस्तु के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक मण्डल के किसी भी व्यक्ति पर इसका कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

नोट : आगामी अंक के लिए आपके सुझाव हेतु

ई.मेल : chamansandesh2017@gmail.com
दूरभाष नं. : 9997998050, 9758243800, 9917489599

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

महाविद्यालय के संस्थापक

पंडित ईश्वर चन्द शर्मा

श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति)

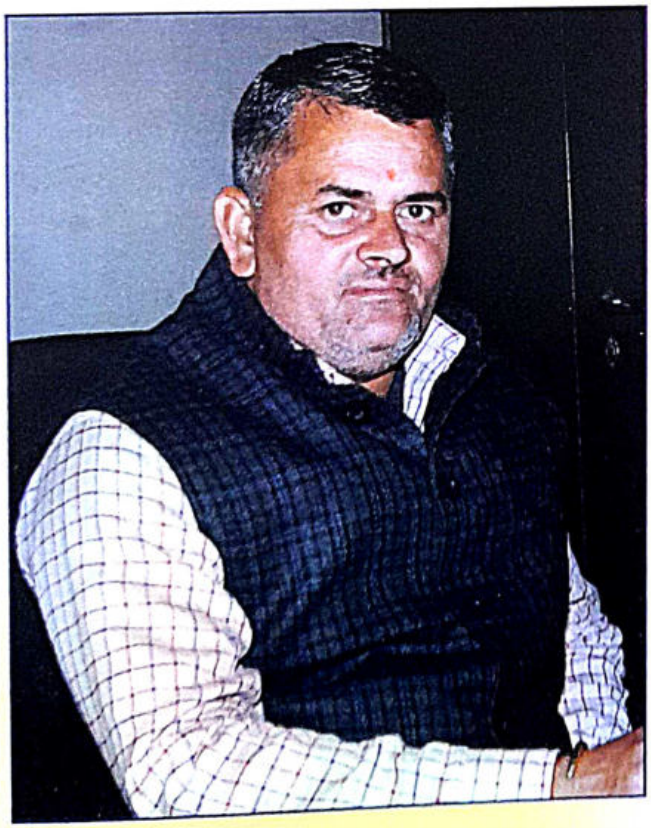

श्री अरूण कुमार हरित
(सचिव, प्रबंध समिति)

श्री अतुल हरित
(कोषाध्यक्ष, प्रबंध समिति)

त्रिवेन्द्र सिंह रावत

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय,
देहरादून-248001
फोन : 0135-2755177
0135-2650433 (का.)
फैक्स : 0135-2712827

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, जनपद हरिद्वार द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका '**चमन संदेश**' का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्र-पत्रिकाएँ, छात्र-छात्राओं को ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उनके विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सशक्त मंच उपलब्ध कराती हैं।

मुझे आशा है कि पत्रिका '**चमन संदेश**' में प्रकाशित होने वाले लेख व अन्य जानकारियाँ छात्र-छात्राओं के साथ-साथ अन्य पाठकों के लिये भी लाभप्रद होंगी।

पत्रिका '**चमन संदेश**' के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

(त्रिवेन्द्र सिंह रावत)

मदन कौशिक
मंत्री
शहरी विकास, आवास, राजीव गांधी
शहरी आवास, जनगणना, पुनर्गठन एवं निर्वाचन

उत्तराखण्ड सरकार

विधान भवन, देहरादून
फोन: (0135) 2666304
फैक्स : (0135) 2666308

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा जनपद हरिद्वार द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका '**चमन संदेश**' का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय में उच्चकोटि की गुणवत्तापरक शिक्षा, अनुसंधान, प्रशिक्षण, व्यवसायिक शिक्षा, परामर्श एवं न्याय इत्यादि विषयों की शिक्षा प्रदान की जायेगी, जो महाविद्यालय परिवार के साथ ही उत्तराखण्ड के शैक्षणिक क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। नि:सन्देह आपका यह प्रयास सराहनीय ही नहीं बल्कि प्रेरणादायक भी सिद्ध होगा।

मैं चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका '**चमन संदेश**' की सफलता हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

भवनिष्ठ,

Madan.

(मदन कौशिक)

प्रकाश पन्त
मंत्री
विधायी, संसदीय कार्य, भाषा, वित्त, आबकारी,
पेयजल एवं स्वच्छता, गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग

उत्तराखण्ड सरकार

विधान भवन
देहरादून-248001
दूरभाष : 0135-2665088 (का.)
0135-2665988 (फै.)
Email : pant174@gmail.com

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा-रूड़की जनपद हरिद्वार द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका '**चमन संदेश**' का प्रकाशन किया जा रहा है। महाविद्यालय से सम्बन्धित गतिविधियों एवं अन्य उपयोगी जानकारियां सर्व-सुलभ हों, यह प्रयास प्रत्येक शिक्षण संस्थान को करना चाहिये। इस दिशा में चमन लाल महाविद्यालय द्वारा आगे बढ़कर अन्य संस्थानों को भी प्रोत्साहित करने का कार्य किया है, जिसकी मैं प्रशंसा करता हूँ। आशा है पत्रिका आम जनमानस एवं महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं, शिक्षकों के लिये उपयोगी होगी तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति करेगी।

चमन लाल महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका '**चमन संदेश**' के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रकाश पन्त)

श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय

बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड-249 199

Sri Dev Suman Uttarakhand Vishwavidhyalaya

Badshahithaul, Tehri Garhwal - 249 199

डॉ. यू.एस. रावत

कुलपति

Dr. U.S. Rawat

Vice Chancellor

Tel : 01376 - 2541110 (O)
Fax : 01376 - 254109
Website : www.sdsuv.ac.in

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा रूड़की जनपद हरिद्वार द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'चमन संदेश'** का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें छात्र-छात्राओं में छिपी हुई प्रतिभा तथा महाविद्यालय की विकासात्मक गतिविधियों को पत्रिका के माध्यम से उजागर किया जा रहा है। मुझे आशा है कि प्रकाशित वार्षिक पत्रिका **'चमन संदेश'** के माध्यम से छात्र-छात्राओं तथा उच्च शिक्षा एवं शिक्षा जगत के क्षेत्र में बेहतर सवांद कायम करने में सिद्ध होगी।

मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'चमन संदेश'** छात्र-छात्राओं में छिपी हुई प्रतिभा तथा महाविद्यालय की विकासात्मक गतिविधियों से बनी पत्रिका समग्र रूप से अत्यन्त प्रेरणादायक होगी। पत्रिका की भव्यता एवं सफल संचालन हेतु हार्दिक मंगलकामनाएं।

(डॉ. यू.एस. रावत)

Ph. : 01332-251492
Mob. : 09927027669
E-mail : cldegree21@gmail.com
website : www.cldcollege.com

चमन लाल महाविद्यालय

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA

सम्बद्ध - श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)

लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक :

दिनांक.....

शुभकामना सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड की वार्षिक पत्रिका '**चमन संदेश**' का प्रथम संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका की सामग्री मौलिक, स्तरीय एवं पठनीय होगी। पत्रिकाएं सदैव समाज का प्रतिबिम्ब दर्शाने का सशक्त माध्यम रही हैं। ये न केवल ज्ञानार्जन एवं भाषा-शैली के परिमार्जन का माध्यम हैं अपितु यह उन चिन्तनशील लेखकों/विचारकों को एक ऐसा मंच प्रदान करती हैं जिनकी शब्द अभिव्यक्ति हमारा मार्गदर्शन करने के साथ-साथ समाज में वैचारिक क्रान्ति का वातावरण सृजित करती है। '**चमन संदेश**' की सामग्री निश्चित रूप से ऐसी होगी जो विद्यार्थियों का ज्ञान वर्धन करने के साथ-साथ उन्हें अनुशासित नागरिक बनाने हेतु उन्हे सद्मार्ग दिखायेगी।

मैं महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों व विशेष रूप से सम्मादक-मण्डल एवं प्राचार्य जी को बधाई देता हूँ जिनके इस रचनात्मक प्रयास से पत्रिका आपके हाथ तक पहुँचेगी पत्रिका के सफल एवं श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राम कुमार शर्मा)
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

Ph. : 01332-251492
Mob. : 09927027669
E-mail : cldegree21@gmail.com
website : www.clcollege.com

चमन लाल महाविद्यालय

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA

सम्बद्ध - श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)
लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक :

दिनांक.................................

शुभकामना सन्देश

यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। वस्तुतः किसी भी महाविद्यालय की महत्ता उसके शिक्षण कार्य से है। महाविद्यालय का स्तर भी शिक्षण कार्य से निर्धारित किया जाता है। लेकिन पत्रिका जैसा रचनात्मक मंच भी छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का विकास करता है। महाविद्यालय जिन संकल्पों को लेकर स्थापित किया गया था, उन्हीं संकल्पों को और अधिक मूर्त रूप प्रदान करने के लिए यह वार्षिक पत्रिका निरन्तर कार्य करेगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर महाविद्यालय परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपने नाम के अनुरूप शिक्षण कार्य की गुणवत्ता को स्थापित करती हुई विद्वज्जनों में प्रिय बनेगी।

(अरूण कुमार हरित)
सचिव, प्रबंध समिति

वट वृक्ष बनेगा ये पौधा

भारत में उच्च शिक्षा के लिए पंजीकरण कराने वालो का अनुपात मात्र 11 प्रतिशत है। यानि विद्यालयी शिक्षा हासिल करने वाले 9 छात्रों में से मात्र एक ही कॉलेज पहुँच पाता है। ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए पंजीकृत होने वाले छात्रों का आंकडा राष्ट्रीय आंकडे से भी कम हो जाता है। हरिद्वार जिले का लंढौरा भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा माना जाता था। उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए छात्र-छात्राओं को रूडकी जाना पडता था। ऐसे समय में श्री ईश्वर चन्द शर्मा शिक्षा ऋषि के रूप में सामने आये। उन्होने लण्ढौरा में एक सितम्बर,2013 को चमनलाल महाविद्यालय के रूप में शिक्षा का एक पौधा लगाया जो आज प्रबन्ध समिति अध्यक्ष श्री राम कुमार शर्मा एवं सचिव श्री अरूण हरित के निर्देशन में फल-फूल रहा है। चमनलाल महाविद्यालय श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय से संबद्ध है। एक अगस्त 2010 में हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाया गया तब सरकार ने संबद्ध कॉलेजों के लिए श्रीदेव सुमन के नाम से नया विश्वविद्यालय बनाया। चमनलाल महाविद्यालय को भी इसी से संबद्ध किया गया। चमनलाल महाविद्यालय में क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को योग जैसे प्राचीन विषयों से लेकर कम्प्यूटर की आधुनिक शिक्षा हासिल करने का मंच मिल गया है। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका '**चमन संदेश**' का उद्देश्य भी छात्रों में रचनात्मक अभिरूचि पैदा करना है। पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं को अभिव्यक्ति का एक माध्यम मिला है। प्रबन्ध समिति पदाधिकारियों के आशीर्वाद एंव प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय के निर्देशन में तैयार '**चमन संदेश**' पत्रिका को आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है।

पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग के लिए मैं सम्पादक मण्डल, सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं का आभार व्यक्त करती हूँ।

यह अंक आपको कैसा लगा आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा। आप सभी कं प्रति आभार।

डॉ. दीपा अग्रवाल

मुख्य सम्पादक

सम्पादक की लेखनी से.....

प्रिय विद्यार्थियों एवं सहृदय पाठकों !

नवसंवत्सर 2074-75 की मंगल कामनाओं के संग महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'चमन संदेश'** का प्रथम अंक अपने गौरवशाली स्वरूप को धारण किए नवीनता एवं सृजनात्मकता के साथ आप सभी के समक्ष समुपस्थित है।

पत्रिका विचार अभिव्यक्ति का माध्यम है। पत्रिका के लिए रचनाओं के लेखन हेतु मैने छात्र एवं छात्राओं को प्रेरित कर अपने दायित्व को निभाने का प्रयास किया है। जिससे पत्रिका विद्यार्थियों का अधिक से अधिक मार्गदर्शन कर सके तथा उनमे लिखने की रूचि पैदा कर सके। चूँकि आज लिखने की प्रथा कम होती जा रही है। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के बीच में आज की पीढी भी मानो यन्त्र बनती जा रही है। उनके पास विचार तो पर्याप्त हैं, परन्तु अभिव्यक्ति की गौणता है। जिसमें **'चमन संदेश'** एक प्रकाशगम्य साधन के रूप में सभी छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति को सृजनात्मकता प्रदान करने का कार्य करेगी।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इसमे प्रकाशित शिक्षाप्रद लेख इत्यादि सुसंस्कृति के नवीन आयामों को स्थापित करने में सहायता प्रदान करेंगे।

मैं महाविद्यालय प्रबन्ध समिति, प्राचार्य, सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से महाविद्यालय पत्रिका **'चमन संदेश'** आप तक पहुँच सकी।

समस्त विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामनाओं के साथ।

लक्ष्य न ओझल होने पाये कदम मिलाकर चल।
मंजिल तेरे कदम चुमेगी आज नहीं तो कल।।

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता
सम्पादक

संपादक मण्डल

सम्पादक मण्डल

(बाँये से दाँये)– डॉ. मीरा चौरसिया, डॉ. नीशू कुमार, डॉ. दीपा अग्रवाल, श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य), श्री आशुतोष शर्मा, डॉ. तरुण कुमार गुप्ता, डॉ. किरन शर्मा

अनुक्रमणिका

- शुभकामना संदेश
- प्राचार्यीय
- सम्पादकीय

हिन्दी अनुभाग

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	पादपों में जैव–प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग	7
2	आधुनिक वैज्ञानिक जीवन शैली की चुनौतियां	8
3	उत्तराखण्ड राज्य में कृषि की समस्याएँ	10
4	बिट्क्वाइन– एक संक्षिप्त परिचय	11
5	कम्प्यूटर का युग	12
6	फोरेंसिक परीक्षण	14
7	विज्ञान के विद्यार्थी का प्रेम गीत	15
8	गणित शास्त्र का उद्भव	15
9	महिला गणितज्ञ : एम्मी नोएथेर	16
10	कम्प्यूटर के रोचक तथ्य	16
11	क्रायोजेनिक इंजन	17
12	कुतुबमीनार का इतिहास	18
13	हड़प्पा सभ्यता	19
14	दिल्ली सल्तनत में एक मात्र मुस्लिम	
15	शासिका–'रज़िया सुल्तान'	20
16	भारत में आतंकवाद : समस्या और समाधान	21
17	वात कहूं मैं खरी	22
18	भ्रष्टाचार	22
19	मंगल पाण्डे की वीरता	23
20	संस्कृत साहित्य में नीति का स्वरूप	24
21	कला का महत्त्व	25
22	विद्यार्थी की दिनचर्या	25
23	आदर्श विद्यार्थी	26
24	गणेश की प्रतीकात्मता तथा प्रासंगिकता	27
25	चरित्र गठन	29
26	विपत्तियां करें जीवन का विकास	29
27	सुदृढ़ संकल्प	30
28	संकल्प की शक्ति	31
29	कर्त्तव्य	31

संस्कृत अनुभाग

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	संस्कृतवाङ्मये वैकल्पिकचिकित्सापद्धतयः	87
2	भारतीय संस्कृतिः	88
3	माननीयः नरेन्द्रमोदीवर्यः	88
4	संस्कृत-भाषायाः महत्वम्	89
5	वर्णव्यवस्था आश्रम व्यवस्थाश्च	90
6	स्त्रीशिक्षाया आवश्यकतोपयोगिता च	91
7	सत्सगंति का महत्व	92
8	विद्या और वाणी का महत्व	93
9	पर्यावरणम्	94

हिन्दी अनुभाग

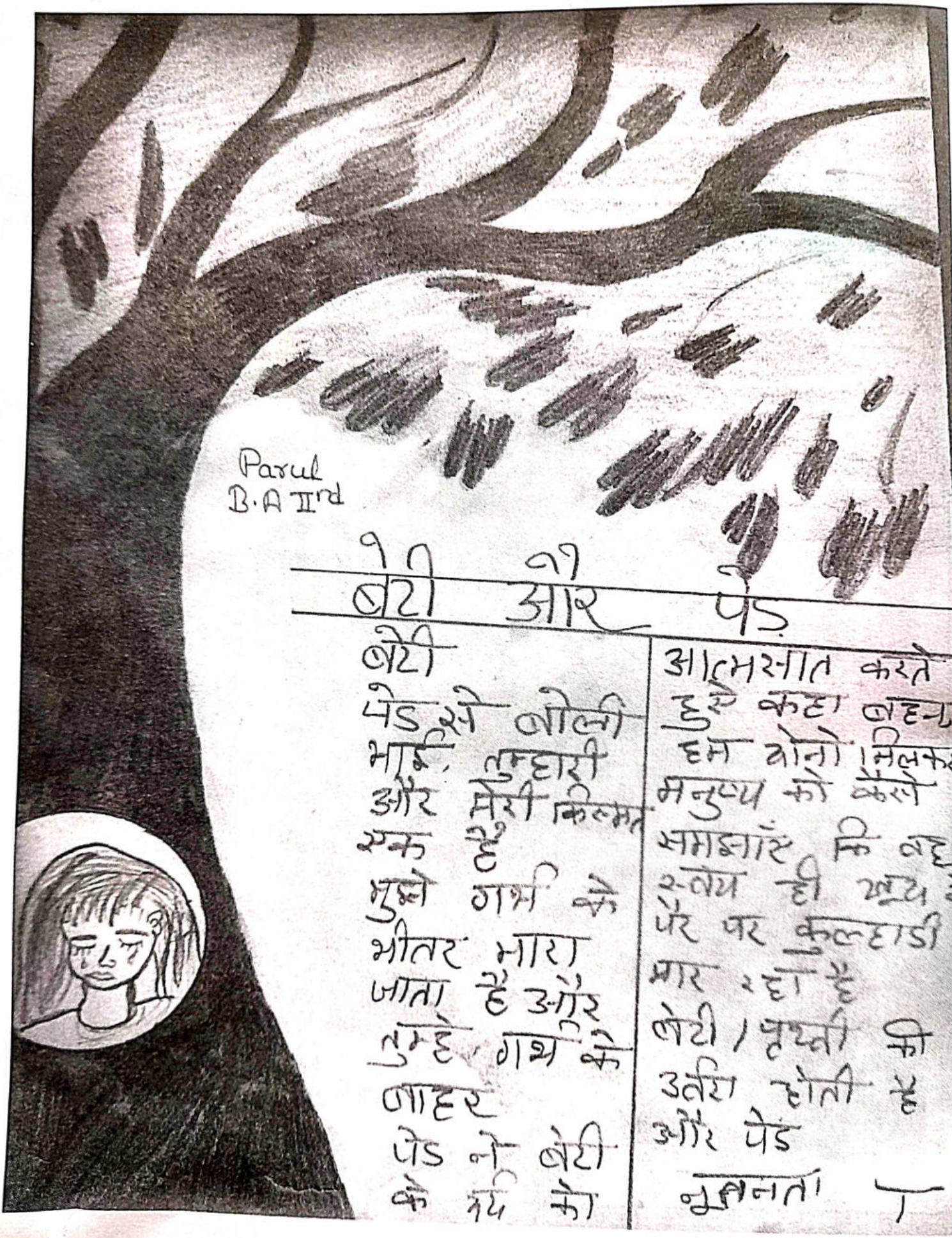

Parul
B.A IInd

बेटी और पेड़

बेटी
पेड़ से बोली
भाई, तुम्हारी
और मेरी किस्मत
एक है
मुझे गर्भ के
भीतर मारा
जाता है और
तुम्हें, गर्भ के
बाहर
पेड़ ने बेटी
के दर्द को

आत्मसात करते
हुए कहा बहन
हम दोनों मिलकर
मनुष्य को कैसे
समझाएं कि वह
स्वयं ही स्वयं के
पैर पर कुल्हाड़ी
मार रहा है
बेटी / पृथ्वी की
उर्वरा होती है
और पेड़
गहनता ।

पादपों में जैव–प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग

डॉ. ऋचा चौहान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग

कृषि फसलों के सफल उत्पादन में विभिन्न प्रकार की समस्यायें आती हैं, जिनमें कीट एवं विभिन्न प्रकार की बिमारियां प्रमुख स्थान रखती हैं। एक तरफ बिमारियां पौधों की कायिक अवस्था को प्रभावित कर उनकी वृद्धि एवं उत्पादन को प्रभावित करती हैं, तो दूसरी तरफ कीट फसलों को खेतों से लेकर भण्डार गृह तक क्षतिग्रस्त कर सर्वाधिक आर्थिक नुकसान पहुँचाते हैं, जिससे अन्ततः उत्पाद की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इन समस्याओं के कारण कीट एवं पादप रोग वैज्ञानिकों का ध्यान जैव–प्रौद्योगिकी की ओर आकर्षित हुआ है। जैव –प्रौद्योगिकी एक ऐसी तकनीक है जो पौधों के उत्पादन की दिशा में क्रांति ला सकती है। जैव–प्रौद्योगिकी के द्वारा विभिन्न प्रकार के कीट रोधी एवं रोग–प्रतिरोधी पौधों का विकास किया जा रहा है। उपरोक्त पौधों के विकास के लिए मुख्यतः ऊतक संवर्धन, मोलिक्युलर बायोलॉजी एवं जेनेटिक इंजीनियरिंग का इस्तेमान किया जा रहा है।

ऊतक संवर्धन वह प्रक्रिया है जिससे विविध ऊतक अथवा कोशिकाएँ किसी बाह्य माध्यम में उपयुक्त परिस्थितियों के विद्यमान रहने पर पोषित की जा सकती है। पादप ऊतक संवर्धन में विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हुए पादप अंगों का निर्जीव अवस्था में पोषक माध्यम पर उगाया जाता है। बीज रहित फल, बिना बीज के उत्तम गुणवत्ता वाले फल, बीज के उत्पादन के लिए आवश्यक परागण के अभाव में पौधों के गुणो का उत्पादन किया जाता है। इस तकनीक द्वारा पादपों में आनुवांशिक रूप से संशोधन किया जा सकता है। एकल कोशिका से पूरे पौधे का निर्माण किया जा सकता है। इस तकनीक द्वारा रोग प्रतिरोधी, कीट रोधी तथा सूखा प्रतिरोधी किस्मों को उत्पादित किया जा सकता है। पादप ऊतक संवर्धन तकनीकी इस बात पर निर्भर करती है कि कोशिकाओं में सम्पूर्ण पादप को पुनः उत्पादित करने की क्षमता होती है। इसे पूर्णशक्ता तथा कोशिका को पूर्णशक्त कोशिका कहते हैं।

जेनेटिक इंजीनियरिंग द्वारा बाहरी जीन स्थानान्तरित किये जाते हैं, उन्हें पराजीन कहते हैं तथा इस प्रकार जो पौधे प्राप्त होते हैं उन्हें पराजीनी पौधे कहते हैं। जैव–प्रौद्योगिकी के उपयोग से पौधों में पराजीन के द्वारा विषाणु रोधी पौधे प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई है। उपरोक्त सफलता तम्बाकू, आलू, टमाटर, सोयाबीन, धान, नींबू, संतरा, मक्का आदि फसलों में प्राप्त हुई है। आजकल अनाजों के बीजों में निहित प्रोटीन की गुणवत्ता तथा मात्रा बढ़ाने के लिए भी प्रयास किये जा रहे हैं। सम्बद्ध जीनों के प्रत्यारोपण से इस प्रकार के बीजों का उत्पादन किया जा सकेगा जिनमें प्रोटीन की मात्रा तथा गुणवत्ता तो अधिक होगी ही, साथ ही साथ वांछित प्रकार के प्रोटीन का उत्पादन ऐसे पौधों से किया जा सकेगा। प्रयोग के तौर पर राजमा के फासयोलिन नामक विशेष प्रोटीन पदार्थो को बनाने वाले जीनों का सफल प्रत्यारोपण तम्बाकू के पौधों में किया जा चुका है।

इस प्रकार जैव–प्रौद्योगिकी एक अनुप्रयोगिक विज्ञान है जिसके द्वारा पादप उत्पादन की दिशा में क्रांति लाई जा सकती है।

आधुनिक वैज्ञानिक जीवन शैली की चुनौतियां

डॉ. संजीव कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आज का युग वैज्ञानिक चमत्कारों का युग है, और इन चमत्कारों के पीछे विज्ञान का बहुत बड़ा हाथ है। आज हम सभी के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने आश्चर्यजनक रूप से बदलाव कर दिये हैं। आज हमारे समाज की सम्पूर्ण गतिविधियाँ विज्ञान से ही परिचालित हो रही हैं, और इसी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। विज्ञान कुछ मायनों में आज मनुष्य का भाग्य विधाता बन गया है। विज्ञान ने हम सभी के जीवन को हर तरफ से इतना प्रभावित कर दिया है कि आज विज्ञान शून्य विश्व की कोई कल्पना नहीं कर सकता। विज्ञान ने हमारी आधुनिक जीवनशैली को प्रभावित किया है। जिस तरह से विज्ञान ने मनुष्य को असीम ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। उसी तरह से कुछ रूप में विज्ञान के अविष्कारों का दुरूपयोग भी किया जा रहा है। और इस स्थिति में हमें यह सोचना पड़ता है कि विज्ञान को वरदान समझा जाए या अभिशाप।

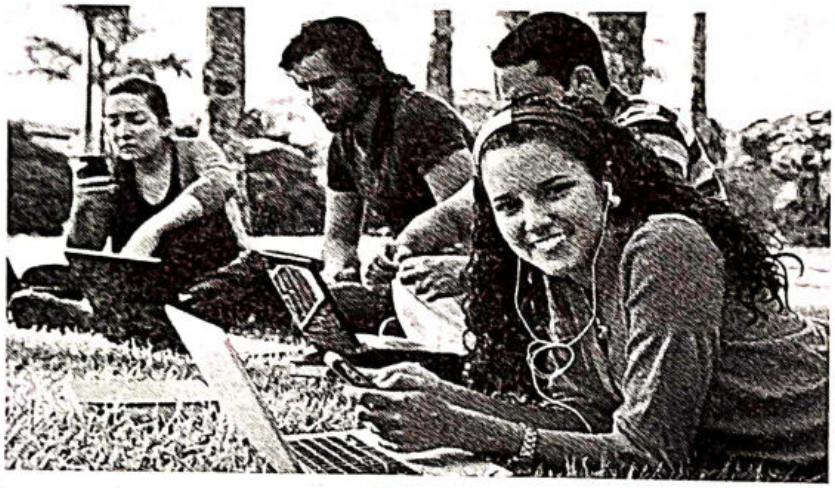

विज्ञान वरदान के रूप में (Science a boon) :-

आज के इस नये युग में मनुष्य जितने भी साधनों का उपयोग अपने जीवन में करता है, वह विज्ञान के ही वरदान है। और विज्ञान के चमत्कारों के कारण ही यह सब सम्भव हो सका है। इसलिए यह भी कहा जाता है कि आज का मनुष्य विज्ञान के माध्यम से प्रकृति पर विजय पा चुका है। विज्ञान के वरदान अग्रलिखित है-

संचार के क्षेत्र में - विज्ञान के वरदानों ने संचार के क्षेत्र में नई क्रांति ला दी है। आज आकाशवाणी, तार, टेलीफोन, मोबाइल फोन, दूरदर्शन, फैक्स, ई-मेल, रेडियो की सहायता से कोई भी समाचार पल भर में विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचाया जा सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में - विज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक योगदान दिया है। इंटरनेट व कम्प्यूटर इसका साक्षात् उदाहरण है। इसके अतिरिक्त मुद्रण यन्त्रों के आविष्कारों ने संख्या में पुस्तकों का प्रकाशन सम्भव बनाया है।

स्वास्थ्य चिकित्सा के क्षेत्र में - विज्ञान के चमत्कार के कारण ही हम अल्ट्रासाउण्ड टेस्ट, एक्स किरणें, सी.टी. स्कैन आदि परिक्षणों के माध्यम से किसी भी मानव शरीर के अन्दर के रोगों का शीघ्र व सरलतापूर्वक पता लगा सकते हैं।

कृषि के क्षेत्र में - विज्ञान ने आज किसान को अत्याधिक विकसित तकनीक उर्वरक, उत्तम से उत्तम बीज और कीटनाशक व बिजली प्रदान की है।

दैनिक जीवन में - जैसा कि हम सभी जानते हैं कि विद्युत के आविष्कारों ने मानव जीवन की दैनिक सुख सुविधाओं को बहुत बढ़ा दिया है। विद्युत आविष्कार वॉशिंग मशीन, इलैक्ट्रिक

प्रेस आदि से हम अपने दैनिक काम आसानी से कर सकते हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में- विज्ञान के वरदान से ही मशीनों का निर्माण सम्भव हो सका है, और इन मशीनों ने ही बड़े-बड़े कल कारखाने का विस्तार किया, इन मशीनों के कारण ही श्रम धन व समय की बचत होने लगी और साथ ही साथ अत्याधिक मात्रा में उत्पादन सम्भव हो सका।

विज्ञान अभिशाप के रूप में- (Science as curse)

विज्ञान का दूसरा पक्ष है। विज्ञान की बुराईयाँ। आज मनुष्य नये-नये हथियारों व बमों का आविष्कार कर रहा है। जिसे मानव सभ्यता के अस्तित्त्व पर एक बहुत बड़ा खतरा अभिशाप के रूप में देख सकते हैं। इसी प्रकार कृषि के क्षेत्र में अत्याधिक उत्पादन के लिये कीटनाशक व रासायनिक खाद के प्रयोग से कैंसर जैसी भयंकर बीमारी उत्पन्न होती है। विज्ञान की मदद से किए जाने वाले हमारे दैनिक कार्यों में कई ऐसी बातें जुड़ती चली गयी हैं जिनके कारण धरातल के सम्पूर्ण जीव जगत पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। मनुष्य ने अपना दैनिक जीवन तो सुलभ बना लिया है परन्तु आने वाली पीढ़ी के लिए मुसीबतें खड़ी कर दी हैं। जिसके कारण जीवन शैली में परिवर्तन होने से हार्ट अटैक, पैरालिसिस आदि भयंकर बीमारियाँ होने लगी हैं।

बढ़ते प्रदूषण के कारण दिन-प्रतिदिन प्रकृति का असंतुलन बढ़ता जा रहा है। हमारी पृथ्वी का रक्षा कवच 'ओज़ोन परत' निरन्तर प्रभावित हो रही है। जो पृथ्वी पर सम्पूर्ण जीवन के लिए खतरा बन सकता है।

इसी प्रकार त्यौहारों पर अत्याधिक आतिशबाजी के कारण श्वसन रोग उत्पन्न होते हैं।

विज्ञान ने यदि मनुष्य को चन्द्रमा पर पहुँचाया है तो उसने उसे विनाश के गर्त पर भी लाकर खड़ा कर दिया है। वास्तविक रूप से यदि इसका अवलोकन किया जाए तो हम देखते हैं कि इसकी शक्ति अपार है। यह मनुष्य के अपने विवेक पर है कि वह इसका प्रयोग किस प्रकार करता है।

मानव द्वारा विज्ञान का समुचित दिशा में किया गया उपयोग उसके लिए वरदान सिद्ध हो सकता है वहीं दूसरी ओर इसका दुरूपयोग उसके लिए अभिशाप भी बन सकता है।

मोहित कुमार
(बी.एससी. प्रथम वर्ष)

कम्प्यूटर का युग

विपिन कुमार
कनिष्ठ सहायक

कम्प्यूटर एक आधुनिक तकनीक की महान खोज है जिसे सीखना और समझना बेहद आसान है। कम्प्यूटर एक उच्च तकनीकी खोज है, जिसके बारे में और जीवन में इसके इस्तेमाल के महत्त्व को समझना और सीखना चाहिए। इसे बच्चों द्वारा बहुत पसंद किया जाता है। इसके माध्यम से बच्चों की शिक्षा में कुछ रचनात्मक प्रयास किया जा सकता है। ये एक सामान्य मशीन है जो अपनी मेमोरी में ढेर सारे डाटा को सुरक्षित रखने की क्षमता रखता है, इसलिए कोई बच्चा भी इस पर काम कर सकता है। ये बहुत ही भरोसेमंद है जिसे हम अपने साथ रख सकते हैं और कहीं भी और कभी भी प्रयोग कर सकते हैं। हम इससे नया डेटा और पुराने डेटा में बदलाव भी कर सकते हैं जो कार्यालय, बैंक, शिक्षण संस्थान आदि में उपयोग किया जाता है।

कम्प्यूटर आज लोगों के जीवन में बेहद सहज और प्राथमिक बन चुका है। ये कम समय में एक से अधिक कार्य सम्पन्न कर सकता है। ये कम समय खर्च करते हुए अकेले ही कई इंसानों के बराबर काम करने की योग्यता रखता है। ये उच्च सामर्थ्य की सार्थकता है इसके जन्म दाता चार्ल्स बैबेज है।

भावी पीढ़ी के कम्प्यूटर और प्रभावी होंगे, साथ ही कार्यात्मक क्षमता भी बढ़ती चली जाएगी। इसने हम सबके जीवन को आसान बना दिया है। इसके माध्यम से हम कुछ भी आसानी से सीख सकते हैं तथा अपने हुनर को और निखार सकते हैं। हम लोग कुछ सैंकेण्डो में किसी भी सेवा, उत्पाद या दूसरी चीज़ों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कम्प्यूटर को इंटरनेट से जोड़कर किसी भी प्रकार की जानकारी और खरीदारी कर सकते हैं जिससे घर में बैठे-बैठे मुफ्त डिलीवरी प्राप्त कर सकते हैं। इससे हमारे स्कूल प्रोजेक्ट में भी खूब मदद मिलती है। अपने सुगमता और कार्यक्षमता के कारण इसका प्रयोग व्यापक तौर पर होता है जैसे-ऑफिस, बैंक, होटल, शिक्षण संस्थान, स्कूल, कॉलेज, दुकान, उद्योग आदि। हम इसका प्रयोग बड़े और छोटे गणितीय गणनाओं के लिए सटीक ढंग से कर सकते हैं। इसका इस्तेमाल दुनिया कि किसी भी कोने में ऑनलाईन रेलवे आरक्षण, होटल या रेस्टोरेंट की बुकिंग के लिए किया जाता है। बड़ी एमएनसी कम्पनियों में भी इसका प्रयोग व्यापक है जिसमें खाता, इन्वॉइस, पे-रोल, स्टॉक नियन्त्रण आदि के लिए होता है।

तकनीकी उन्नत्ति के आधुनिक संसार में हमारे लिए विज्ञान के द्वारा कम्प्यूटर एक अद्भुत भेंट है जिसने लोगों की जीवन शैली और आदर्श को बदल दिया है। कोई भी बिना कम्प्यूटर के खुद को नहीं सोच सकता क्योंकि इसने कम समय में ज्यादा कार्य को आसान बना दिया है। विकसित देशों के विकास में कम्प्यूटर का बड़ा योगदान रहा है। ये केवल स्टोरेज और प्रोद्यौगिकी डिवाइस नहीं है बल्कि ये किसी फरिश्ते की तरह है जो कुछ भी कर सकता है। लोगों द्वारा इसे मनोरंजन और संचार के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

कम्प्यूटर के अविष्कार ने बहुतों के सपनों को साकार किया है। यहाँ तक कि हम अपने जीवन की कल्पना बिना कम्प्यूटर के नहीं कर सकते। सामान्यतः ये एक ऐसी युक्ति है जिसका इस्तेमाल कई सारे उद्देश्यों के लिए किया जाता है जैसे सूचनाओं को सुरक्षित रखना, ई-मेल, मैसेजिंग, सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग, गणना, डेटा प्रोसेसिंग आदि।

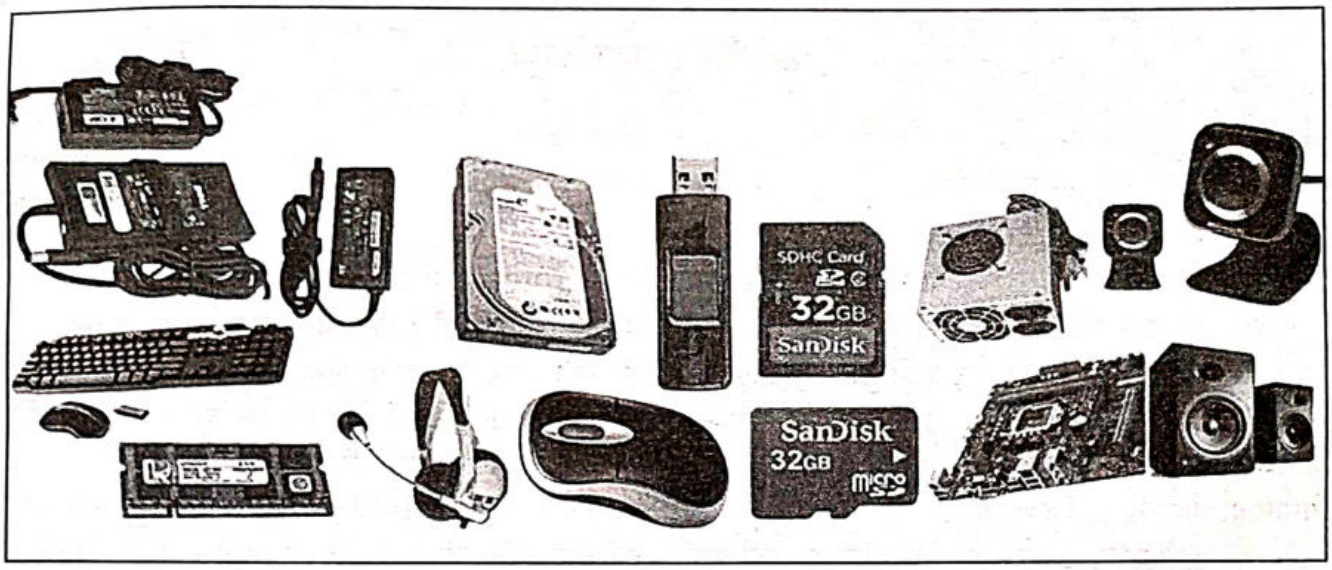

प्रथम पीढ़ी के कम्प्यूटर कुछ सीमित कार्य करते थे, जबकि आधुनिक समय के कम्प्यूटर ढेर सारे कार्यों को अंजाम दे सकता है। चार्ल्स बैबेज ने पहला मैकेनिकल कम्प्यूटर बनाया था जो आज के ज़माने में कम्प्यूटर से बहुत अलग था। कम्प्यूटर के आविष्कार का लक्ष्य था एक ऐसी मशीन को उत्पन्न करना जो बहुत तेज़ी से गणितीय गणना कर सके। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान दुश्मनों के हथियारों की गति और दिशा का अनुमान तथा उनकी सही स्थिति का पता लगाना था। आज के कम्प्यूटर कृत्रिम बुद्धिमता तकनीक से युक्त है जो जीवन के हर क्षेत्र में मदद करते हैं।

नई पीढ़ी के कम्प्यूटर अत्यधिक उन्नत होते हैं। अर्थात् छोटे, हल्के, तेज़ और बहुत शक्तिशाली। आज के दिनों में इसका इस्तेमाल हर क्षेत्र में हो रहा है जैसे-परीक्षा, मौसम की भविष्यवाणी, शिक्षा, खरीदारी, ट्रैफिक नियंत्रण, उच्च स्तर की प्रोग्रामिंग, रेलवे टिकट बुकिंग, मेडिकल क्षेत्र, व्यापार आदि। इंटरनेट के साथ ये सूचना तकनीक का मुख्य आधार है और इसने साबित किया है कि आज के समय में कुछ भी असम्भव नहीं है। इन्सानों के लिए कम्प्यूटर के बहुत फायदे हैं तो साइबर अपराध, अश्लील वेबसाईट जैसे नुकसान भी शामिल हैं जिसकी पहुँच हमारे बच्चों और विद्यार्थियों तक आसानी से हो जाती है। कुछ उपायों के द्वारा हम इसके नकारात्मक प्रभावों से बच सकते हैं।

आज मानव बिरादरी की कम्प्यूटर तकनीक पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। कोई भी अपने जीवन की कल्पना बिना कम्प्यूटर के नहीं कर सकता, क्योंकि इसने हर जगह अपने पैर पसार लिये हैं और लोग इसके आदि बन चुके हैं। कम्प्यूटर विद्यार्थियों के कौशल विकास में बढ़ोत्तरी के साथ नौकरी पाने में भी सहायक होता है।

फोरेंसिक परीक्षण

विशाखा शर्मा
बी.एससी.- प्रथम वर्ष

नार्को विश्लेषण शब्द नार्क से लिया गया है, जिसका अर्थ है नार्कोटिक। हॉर्सले ने पहली बार नार्को शब्द का प्रयोग किया था। 1922 में नार्को एनालिसिस शब्द मुख्यधारा में आया जब 1922 में रॉबर्ट हाउस नामक टैक्सास में एक ऑब्सेट्रेशियन ने स्कोपोलेमाइन ड्रग का प्रयोग दो कैदियों पर किया था।

नार्को परीक्षण करने के लिए सोडियम पेंटोथॉल, सोडियम एमेटल इथेनॉल, बार्बिचेरेट्स, स्कोपोल-अमाइन, अेपाजेमैन आदि को आसुत जल में मिलाया जाता है। परीक्षण के दौरान व्यक्ति को सोडियम पेटोथॉल का इंजैक्शन लगाया जाता है। व्यक्ति को दवा की मात्रा उसकी आयु, लिंग, स्वास्थ्य और शारीरिक परिस्थिति के आधार पर दी जाती है। यदि परीक्षण के दौरान अधिक मात्रा दे दी जाए तो वह कोमा में भी जा सकता है या उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

नार्को परीक्षण का प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति से जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है, जो या तो उस जानकारी को प्रदान करने में असमर्थ होता है या फिर वो उसे उपलब्ध कराने को तैयार नहीं होता। दूसरे शब्दों में यह किसी व्यक्ति के मन से सत्य निकलवाने के लिए प्रयोग किया जाता है। अधिकतर आपराधिक मामलों में ही नार्को परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। बहुत कम ही सही किंतु यह भी सम्भव है कि नार्को टेस्ट के दौरान भी व्यक्ति सच न बोले। इस टैस्ट में व्यक्ति को टुथ सीरम, इंजैक्शन के द्वारा दिया जाता है जिससे व्यक्ति स्वाभाविक रूप से बोलता है। नार्को विश्लेषण एक फोरेंसिक परीक्षण होता है, जिसे जाँच अधिकारी, मनोवैज्ञानिक चिकित्सक और फोरेंसिक विशेषज्ञ की उपस्थिति में किया जाता है। भारत में हाल के कुछ वर्षो से ही ये परीक्षण आरम्भ हुए हैं, किन्तु बहुत से विकसित देशों में वर्ष 1922 में मुख्यधारा का भाग बन गए थे, जब रॉबर्ट हाउस नामक टैक्सास के डॉक्टर ने स्कोपोलामिन नामक ड्रग का दो कैदियों पर प्रयोग किया था।

परीक्षण में प्रश्नों के उत्तर देते हुए पूरी तरह से व्यक्ति होश में नहीं होता है और इसी कारण से वह प्रश्नों के सही उत्तर देता है क्योंकि वह उत्तरों को घुमा-फिरा पाने की स्थिति में नहीं होता है। इस ड्रग को प्रभाव में न केवल वह अर्ध बेहोशी की हालत में चला जाता है बल्कि उसकी तर्क बुद्धि (रिजिड़िंग) भी कार्यशील नहीं रहती है। वह व्यक्ति जो एक तरह से अधिक कुछ सवालों के बारे में ही कुछ बता सकता है। यह भी माना जाता है कि नार्को टेस्ट में व्यक्ति हमेशा सच ही उगलता है, जबकि बहुत कम किन्तु फिर भी उस अवस्था में भी वह झूठ बोल सकता है, एवं विशेषज्ञों को गुमराह कर सकता है।

विश्व में प्रयोग जहाँ विकसित विश्व के बहुत से देशों ने ऐसे परीक्षणों को अन्वेषण से मुख्य रूप से पृथक कर दिया हो। अधिकतर गणतांत्रिक विश्व जिनमें अमेरिका और ब्रिटेन भी शामिल है, वहाँ ऐसे परीक्षण कुछ समय से प्राय: लुप्त हो गए हैं। भारत में इसका प्रयोग आरम्भ होने के बाद किसी अपराध के संदिग्ध को पकड़ते ही लोग उसके नार्को परीक्षण की मांग करने लगते हैं। उनका ये मानना होता है कि इस परीक्षण के बाद सच्चाई सामने निश्चित् ही आ जायेगी, जबकि इसके पूरे प्रतिशत नहीं होते हैं। भारतीय संविधान का एक प्रमुख तत्त्व है धारा 20, अनुच्छेद 3 इसके तहत् 'किसी व्यक्ति को जिस पर कोई आरोप लगे हैं, उसे अपने विरूद्ध गवाह के रूप में प्रयोग नहीं किया जाएगा।' यदि नार्को परीक्षण की मूल अंतर्वस्तु को समझाने की कोशिश करेंगे तो इसके द्वारा व्यक्ति को किसी भी रूप में स्वयं के विरूद्ध ही गवाह के रूप में प्रयोग किए जाने की सम्भावना बनी रहती है। लेकिन उच्चत्तम न्यायालय का निर्णय 4 मई 2010 को दिये अपने एक निर्णय में भारत के उच्चत्तम न्यायालय ने बिना सहमति के कराये गये नार्को, ब्रेन मैपिंग और पॉलीग्राफ आदि परीक्षणों को अवैधानिक या अवैध करार दिया है। न्यायालय ने व्याख्या दी है कि ऐसा करना व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का हनन है।

विज्ञान के विद्यार्थी का प्रेम गीत

दीपांशु शर्मा
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

अवकलन समाकलन
फलन हो या चलन कलन,
हरेक ही समीकरण,
के हर में तू ही आ मिली।

धुली थी अम्ल क्षार में,
विलायकों के जार में,
हर इक लवण के क्षार में,
तू ही सदा घुली मिली।

घनत्व के महत्व में,
गुरुत्व के प्रभुत्व में,
हर एक मूल के तत्व में,
तू ही सदा घुली मिली।

तुझे ही मैंने था पढ़ा,
तेरे सहारे ही बढ़ा,
हूँ आज भी वहीं खड़ा,
जहाँ मुझे भी तू मिली।

गणित शास्त्र का उद्‌भव

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गणित विभाग

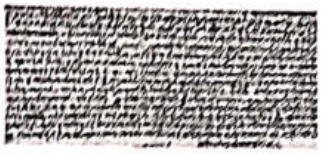

इस विश्व में गणित शास्त्र का उद्‌भव तथा विकास उतना ही प्राचीन है, जितना मानव-सभ्यता का इतिहास है। मानव जाति के उस काल से ही उसकी गणितीय मनीषा के संकेत प्राप्त होते है। प्रत्येक युग में इसे सम्मानित स्थान प्रदान किया गया।

विश्व के पुस्तकालय के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद संहिताओं से गणित तथा ज्योतिष को अलग-अलग शास्त्रों के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी थी। वेद में शास्त्र के रूप में 'गणित' शब्द का नामत: उल्लेख तो नहीं किया है पर यह कहा है कि जल के विविध रूपों का लेखा-जोखा रखने के लिए 'गणक' की सहायता ली जानी चाहिए।

शास्त्र के रूप में 'गणित' का प्राचीनतम प्रयोग लगध ऋषि द्वारा प्रोक्त वेदांग-ज्योतिष नामक ग्रन्थ के एक श्लोक में माना जाता है पर इससे भी पूर्व छान्दोग्य उपनिषद् में सनत्कुमार के पूछने पर नारद ने जो 18 अधीत विधाओं की सूची प्रस्तुत की है, उसमें ज्योतिष के लिए 'नक्षत्र विद्या' तथा गणित के लिए 'शशि विद्या' नाम प्रदान किया है। आगे चलकर इस शास्त्र के लिये अनेक नाम विकसित होते रहे।

सर्वप्रथम ब्रह्मगुप्त ने पाट या पाटी का प्रयोग किया। बाद में श्रीधराचार्य ने 'पाटी गणित' नाम से महान ग्रन्थ लिखा। तब से यह नाम लोकप्रिय हो गया। अरब में भी गणित की इस पद्धति को अपनाने से इस नाम के वजन पर 'इल्म हिसाब अल तख्त' नाम प्रचलित हुआ। भास्कराचार्य के समय मन्दमति लोगों की प्रतिभा को बढ़ाने के लिए सुन्दर बुद्धि वाले विद्वानों ने पाटी गणित शास्त्र को विकसित किया है।

महिला गणितज्ञ : एम्मी नोएथेर

सचि बंसल
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

एम्मी का जन्म एरलांगेन (जर्मनी) में 23 मार्च 1882 को हुआ था। उसके पिता मैक्स नोएथेर (1844-1921) एरलांगेन विश्वविद्यालय में गणित के प्राध्यापक थे। इसी विश्वविद्यालय में फेलिक्स क्लाइन ने सभी ज्यामितियों के एकीकरण के लिए एक योजना (एरलांगेन प्रोग्राम) प्रस्तुत की थी। एम्मी के पिता ने एक बीज गणितज्ञ के रूप में ख्याति अर्जित की थी। उस समय बीज गणितज्ञ पॉन गोर्डोन (1837-1912 ई.) भी उसी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे और नोएथेर परिवार के घनिष्ठ मित्र थे। एम्मी ने उसी विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और वह भी बीज गणितज्ञ बनी। गोर्डोन की देखरेख में खोजकार्य करके उसने 1907 में डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। आज इस महिला को आधुनिक बीज गणित की एक जन्मदाता के रूप में स्मरण किया जाता है।

कम्प्यूटर के रोचक तथ्य

अजय कुमार
बी.एससी.- तृतीय वर्ष

1. जब हम गूगल पर सर्च करने के लिए कोई शब्द टाइप करते हैं तो गूगल उससे सम्बन्धित जानकारी हम तक पहुँचाने के लिए 0.2 सैकण्ड्स में लगभग 1000 कम्प्यूटर्स का इस्तेमाल करता है।
2. हर रोज़ की जाने वाली सर्च में से 16 प्रतिशत से 20 प्रतिशत सर्च गूगल के लिए होती है, जिनको पहले कभी किसी ने सर्च नहीं किया होता।
3. भारत की कुल 125 करोड़ जनसंख्या में से लगभग 20 प्रतिशत लोग इंटरनेट का उपयोग करते हैं।
4. यू-ट्यूब पर अपलोड किया जाने वाला पहला वीडियो 'मी एट द ज़ू' था जो कि 23 अप्रैल 2005 को अपलोड किया गया था।
5. आज इंटरनेट 8354 दिन पुराना है। इंटरनेट की उम्र को 'हाऊ ओल्ड इज़ दि इन्टरनेट' से मालूम किया जा सकता है।

क्रायोजेनिक इंजन

अभिनव त्यागी
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए GSLV क्रायोजेनिक इंजन की सफलता बेहद जरुरी है। GSLV तभी अपने कार्यकारी स्वरूप में आ सकता है जब भारत के पास एक क्रायोजेनिक इंजन हो। पहले तो भारत ने इस इंजन की तकनीक को रूस और अमेरिका से खरीदने का प्रयास किया परन्तु दोनों देशों ने साफ इन्कार कर दिया अब भारत स्वयं का क्रायोजेनिक इंजन बनाने का प्रयास कर रहा है।

क्रायोजेनिक इंजन में क्रायोजेनिक शब्द क्रायो और जेनिक दो शब्दों से मिलकर बना है। क्रायो का अर्थ कम तापमान तथा जेनिक का तात्पर्य उत्पन्न करना है। अर्थात क्रायोजेनिक का अर्थ कम तापमान उत्पन्न करने वाला इंजन होता है।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में क्रायोजेनिक इंजन पर आधारित GSLV द्वारा अधिक वजन के उपग्रह जो अधिक से अधिक उपकरणों को लेकर प्रक्षेपित किया जा सकता है। अधिक प्रक्षेपण बल प्राप्त होने की वजह से उपग्रह को सीधे भू-स्थैतिक कक्षा में प्रक्षेपित किया जा सकता है जो पृथ्वी से लगभग 36000 किमी. की ऊँचाई पर स्थित है।

अत: भारत द्वारा अंतरिक्ष कार्यक्रम व प्रक्षेपास्त्र युद्धक प्रणाली में आत्मनिर्भर होने के लिए इस क्रायोजेनिक इंजन का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है।

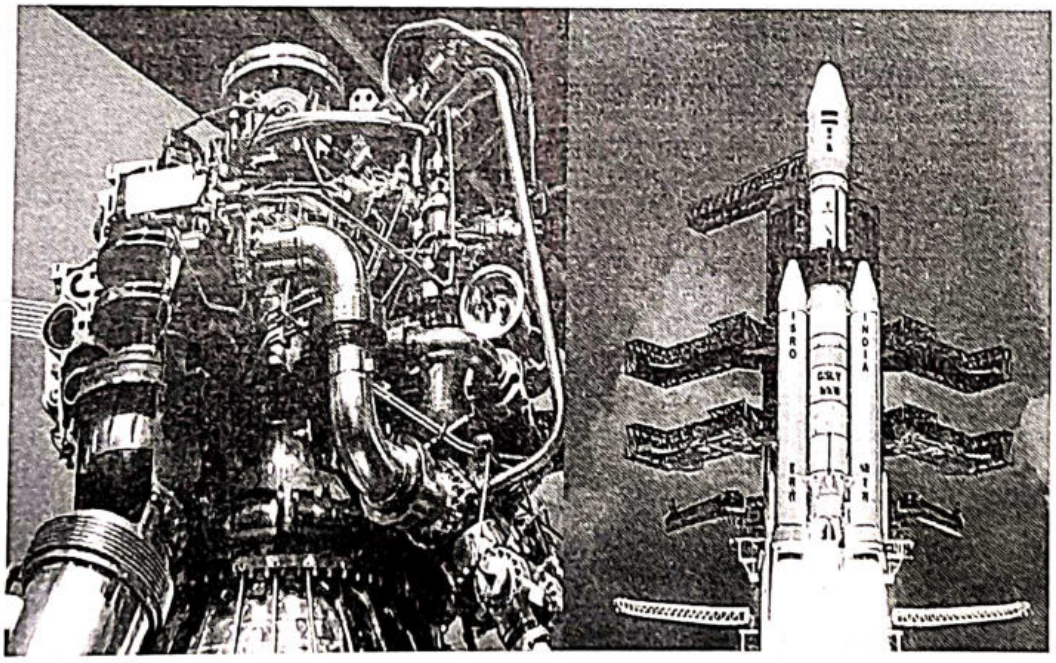

कुतुबमीनार का इतिहास

साक्षी चौहान
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

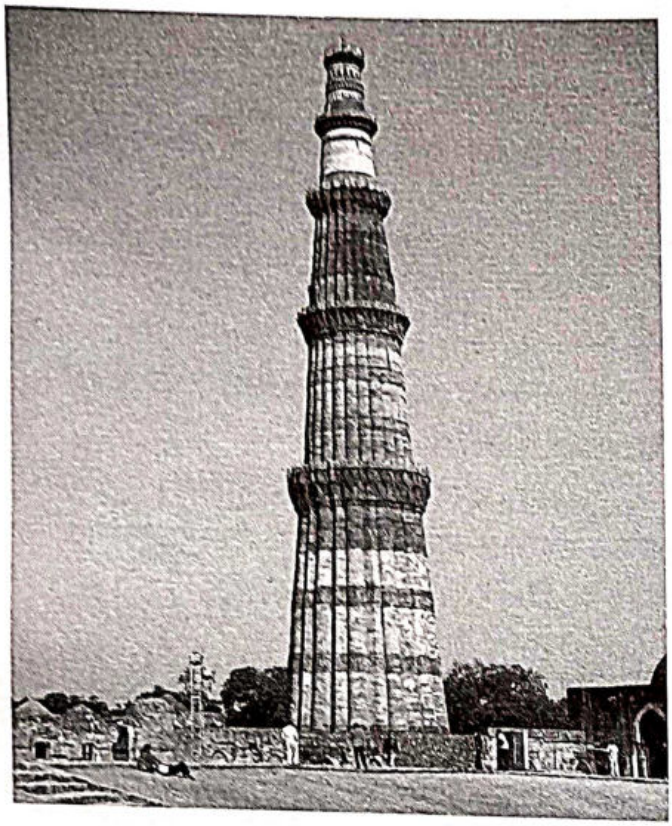

कुतुबमीनार कुतुबुद्दीन ऐबक के काल की दूसरी इमारत है। यह दिल्ली के महरौली नामक गाँव में यह स्थित है। कुतुबमीनार का नाम कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया था। कुछ विद्वानों का मत है कि इसका निर्माण पृथ्वीराज चौहान, विजय स्तम्भ के रूप में करना चाहता था। बाद में अपनी विजय के प्रतीक के रूप में मुस्लिम आक्रान्ताओं ने इस मीनार का निर्माण कराया। हिन्दू शैली के अनेक तत्त्व मीनार में प्राप्त होते हैं जैसे इसका दरवाज़ा मेहराबदार होता है हिन्दू शैली के अनुसार तीरा और ब्रेकेट का प्रयोग इसमें किया गया है। इसका अलंकरण भी हिन्दू शैली के अनुसार है। हाल में पुरूषोत्तम नागेश ओक ने इसे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा निर्मित्त वैज्ञानिक वैधशाला बताया है। उनका कहना है कि हिन्दू शैली के पुष्प, चित्र, अधखिले कमल, मीनार में अनेक स्थानों पर अंकित हैं और संस्कृत लेखों को खुरचकर उन पर कुरान की आयते और कलमा अंकित कराये गये हैं। मस्जिदों के पास अज़ान देने के लिए ऐसी मीनार बनाना परम्परा थी, लेकिन यह मीनार इतनी ऊँची बनाई गई कि इसका अज़ान के लिए उपयोग होना सम्भव नहीं था। इतनी ऊँची मीनार बनाने का कारण यह भी हो सकता था कि इस्लाम की शक्ति और ऊँचाई के भाव को विजेता तुर्क व्यक्त करना चाहते थे। इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में आरम्भ कराया था, इसकी ऊँचाई 225 फीट और चार मंजिलें होनी थी। इसकी एक मंजिल ही उसके समय में बन सकी। इल्तुतमिश के काल में शेष निर्माण पूरा किया गया। पहली मंजिल 65 फीट, दूसरी 51 फीट, तीसरी 41 फीट, चौथी 26 फीट, पाँचवी 25 फीट है। चौथी मंजिल को फिरोज़ तुगलक के काल में तूफ़ान के कारण क्षति पहुँची थी। उस समय इसमें दो मंजिलों का निर्माण करा दिया गया था। इसकी मरम्मत सिकन्दर लोदी ने भी कराई थी। इस मीनार की प्रथम तीन मंजिलें लाल पत्थर की हैं जिनका बाहरी आवरण लाल है। ऊपर की दो मंजिलों में बाहर सफेद तथा अन्दर की ओर लाल पत्थर है। इस समय मीनार की कुछ ऊँचाई 240 फीट है। मीनार के आधार का व्यास 10 फीट है। प्रत्येक मंजिल को अलग-अलग ढंग से निर्मित्त किया गया है। प्रथम मंजिल सितारेनुमा है और दूसरी वक्राकार, तीसरी दोनों की सम्मिलित शैली से सितारेनुमा और वक्राकार है। इनमें ऊर्ध्वाकार रेखाऐं बनाई गई हैं जिससे ऊँचाई अधिक ज्ञात होती है। प्रत्येक मंजिल के बाद आलिन्द है जिन्हें मेहराबों पर बनाया गया है। निःसंदेह कुतुबमीनार का स्थापत्य अनुपम है।

हड़प्पा सभ्यता

सोमेश
बी.ए.-प्रथम वर्ष

सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है। सम्मानित पत्रिका नेचर में प्रकाशित शोध के अनुसार यह सभ्यता कम से कम 8000 वर्ष पुरानी है। यह हड़प्पा सभ्यता और सिन्धु सरस्वती सभ्यता के नाम से भी जानी जाती है। इसका विकास सिन्धु और घग्गर हकड़ा (प्राचीन सरस्वती) के किनारे हुआ। मोहन जोदड़ो काली बंगा, लोथल-घोलवीरा, राखागढ़ी और हड़प्पा इसके प्रमुख केन्द्र थे। 1826 चार्ल्स मैसेन ने पहली बार इस पुरानी सभ्यता को खोजा कनिंघम ने 1856 में इस सभ्यता के बारे में सर्वेक्षण किया। 1856 में कराची से लाहौर के मध्य रेलवे लाईन के निर्माण के दौरान बर्टन बंधुओं द्वारा हड़प्पा स्थल की सूचना सरकार को दी। भारतीय पुरातन विभाग की स्थापना 1904 में लार्ड कर्जन द्वारा की गई। सर जॉन मार्शल को भारतीय पुरातात्त्विक विभाग (ए.एस.आई) का महानिदेशक बनाया गया। सर जॉन मार्शल की अध्यक्षता में 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा का उत्खनन किया। इस प्रकार सर्वप्रथम खोजे गये स्थानों के आधार पर इस सभ्यता सिन्धु नदी घाटी में फैली थी, इसलिए इसका नाम सिंधु घाटी सभ्यता रखा गया। प्रथम बार नगरों के उदय के कारण इसे प्रथम नगरीकरण भी कहा जाता है। इस सभ्यता के 1400 केन्द्रों को खोजा जा सका है जिसमें से 925 केन्द्र भारत में हैं। 80 प्रतिशत स्थल सरस्वती नदी और उसकी सहायक नदियों के आसपास हैं। अभी तक कुल खोजों में से 3 प्रतिशत स्थलों का ही उल्लंघन हो पाया है।

इस सभ्यता की प्रमुख विशेषता यहाँ की नगर योजना, जल निकास प्रणाली प्रमुख है। यहीं पर सर्वप्रथम कपास का प्रयोग हुआ। हड़प्पा सभ्यता का व्यापार इतना उन्नत है कि लोथल (गुजरात) हड़प्पा सभ्यता का ऐसा स्थल है जिसका प्रयोग बन्दरगाहों के रूप किया जाता है। यहाँ से शुपती शिव की मूर्ति प्राप्त हुई थी। जिसके चारों ओर हाथी, गैंडा, चीता तथा भैंसा है। मोहन जोदड़ो से एक नर्तकी की कांस्य की मूर्त्ति मिली थी मातृशक्ति के रूप में इस सभ्यता में मातृ देवी की पूजा की जाती थी। यहाँ से मातृ देवी की मूर्त्ति प्राप्त हुई है। इस सभ्यता की ये विशेषताएँ ही इस सभ्यता को विश्व में अलग आयाम प्रदान करती है।

दिल्ली सल्तनत में एक मात्र मुस्लिम शासिका–'रज़िया सुल्तान'

अंग
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

दिल्ली सल्तनत पर कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश और बलबन जैसे महान् शासकों का ही शासन नहीं रहा बल्कि रज़िया जैसी महिला ने भी दिल्ली की सल्तनत पर हुकूमत की है।

रज़िया ने तीन वर्ष, पांच माह और छः दिन शासन किया और वह भी ऐसे समय जब महिलाओं को घर के बाहर कदम नहीं रखने दिया जाता था। यहां तक कि बाहर के लोग यह भी नहीं जानते थे कि घर में कौन महिलाएं हैं।

ऐसे समय में रज़िया ने सल्तनत की बागडोर सम्भाली। इल्तुतमिश ने रज़िया को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया किन्तु दिल्ली के उलेमा, अमीर, दरबारी सभी ने एक स्त्री के शासन में रहने से इंकार कर दिया। यह उनको शर्मनाक बात लगी कि एक स्त्री उन पर हुकूमत करे। अतः उन्होंने इल्तुतमिश के सबसे बड़े बेटे रूकनुद्दीन फिरोज़ को दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर बैठा दिया। इस समय के शासन का सारा काम उसकी माँ शाह तुर्कान के हाथों में आ गया। वह बहुत ही चालबाज़ औरत थी। सल्तनत का सारा खज़ाना खत्म होने लगा। सभी प्रजा रज़िया के भाई व माँ के आतंक से त्राहि–त्राहि करने लगी। सल्तनत के लोग रज़िया को सुल्तान बनाने की मांग करने लगे।

रूकनुद्दीन ने रज़िया और याकूत पर बहुत जुल्म ढाये किन्तु प्रजा ने रज़िया को सुल्तान बनाने की ठान ली तथा एक बहुत बड़ी भीड़ रूकनुद्दीन पर टूट पड़ी। रूकनुद्दीन मारा गया। रज़िया ने जनता व सेना की मदद से सन् 1236 को दिल्ली सल्तनत की गद्दी हासिल की और जमालुद्दीन याकूत को अपना सलाहकार बनाया। किन्तु दरबार के उच्च लोगों को रज़िया द्वारा याकूत को इतना महत्त्व देना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने धीरे–धीरे रज़िया के खिलाफ़ बग़ावत करने की ठान ली। वह धीरे–धीरे एक होकर फौज बनाने लगे और तुर्की सरदार एक हो गये। उन्होंने रज़िया के खिलाफ जंग छेड़ दी। रज़िया भी बहुत बहादुर थी, वह बहादुरी के साथ घोड़े पर सवार होकर तलवार लेकर निकल गई और बहुत ही बहादुरी से जंग में उतर गई, किन्तु याकूत और कुछ सेना के लोगों के सिवाय उसके साथ कोई नहीं था। उसकी हार हो गई किन्तु रज़िया ने हार न मानी। वह घोड़े पर सवार एक जंगल की ओर भागी लेकिन वहां कुछ डकैतों के हाथों पड़ गई जिन्होंने उसे मार डाला। इस तरह 1240 में रज़िया जैसी बहादुर महिला जिसको उस समय के समाज ने यातनाएँ दीं, चल बसी।

इतिहासकार मिनहाज–उस–सिराज अपनी रचना तबक़ात–ए–नासिरी में रज़िया के गुणों की प्रशंसा करते हुए लिखता है कि "सुल्तान रज़िया एक महान् शासिका थी– बुद्धिमान, न्यायप्रिय, उदारचित्त और प्रजा की शुभचिन्तक, समदृष्टा, प्रजापालक और अपनी सेनाओं की नेता। उसमें बादशाही के समस्त गुण विद्यमान थे–सिवाय नारीत्व के और इसी कारण मर्दों की दृष्टि में उसके सब गुण बेकार थे।

भारत में आतंकवाद : समस्या और समाधान

अर्पित कुमार
बी.ए.- तृतीय वर्ष

विश्व धरातल में भारत एक नई शक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रहा है। विश्व स्तर पर भारत को एक महाशक्ति के रूप में स्थापित होने के लिए अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें आतंकवाद सबसे बड़ी चुनौती है। वर्तमान समय में देश के कई भागों में इस प्रकार की हिंसक गतिविधियों से अराजकता व्याप्त है जो कि देश की शान्ति एवं एकता के लिए सबसे बड़ी बाधा है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उस राष्ट्र की आंतरिक व बाह्य सुरक्षा पर निर्भर करती है। किन्तु दुर्भाग्यवश हम इस प्रकार की हिंसक गतिविधियों को रोकने में असफल हो रहे हैं। जिसके कारण हमें भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। जम्मू व कश्मीर में आतंकवाद, बिहार व छत्तीसगढ़ में नकसलवाद तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों असम, मणिपुर तथा मिज़ोरम में नागा एवं बोडो उग्रवाद की समस्या के रूप में भारत के सामने अनेक सवाल हैं जिनका समाधान होना अतिआवश्यक है। स्थानीय समस्याओं को शस्त्र प्रयोग के माध्यम से सुलझाना पूर्ण रूप से असंवैधानिक है, परन्तु इन क्षेत्रों के लोगों ने अपनी समस्या के समाधान के लिए जो रास्ता चुना है वह बिल्कुल भी सही नहीं कहा जा सकता है।

अत: इन भटके हुए युवाओं को पुन: मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार को प्रयास करना चाहिए। हिंसा के उत्तर में प्रतिहिंसा आवश्यक नहीं है, परन्तु किसी भी प्रकार के अराजक तत्त्व राष्ट्र की प्रगति संप्रभुता एवं अखण्डता पर प्रतिघात करने की कोशिश करे तो उसको बलपूर्वक कुचल देना सर्वथा उचित है।

गीता में उपदेश दिया है कि अपनों की रक्षा के लिए शस्त्र उठाना भी धर्म है। आज हमें भारत में शांति स्थापित करने के लिए गीता के इसी उपदेश का अनुसरण करने की आवश्यकता है। भारत में व्याप्त आतंकवाद के इस दानव को जड़ से खत्म करने के लिए देश की जनता एवं सत्तारूढ़ सरकार को दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए सख्त कदम उठाने अति आवश्यक हैं, तभी इस क्षेत्र एवं देश का विकास सम्भव हो पाएगा।

बात कहूं मैं खरी

डॉ. नीशू कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

"भ्रष्टाचार एक रोग है और वह भी संक्रामक"

'ऊँ भ्रष्टाचाराय नमः! जय हो....' जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता के शासन को संचालित करने वाले प्रतिनिधियों की-जय हो। आपको शर्म नहीं आती अपने भाग्यविधाता के सामने हाथ जोड़ते हुए, खोखले आश्वासन देते हुए। धन्य हो आप, जो गणतन्त्र भारत में आपने 'गण' की अनदेखी कर दी। राजा तो राजा हो गया लेकिन प्रजा रंक हो गई। घटिया और दूषित राजनीति के सहारे आपने मतदाताओं को जातियों, धर्मों, अगड़ों-पिछड़ों और ऊंचे-नीचे वर्गों में बांट दिया और लड़ा दिया अपनी जनता को आपस में। देश की व्यवस्था को मानवद्वेषी बना दिया आपने। भ्रष्टाचार तो आज एक परासंवैधानिक संस्था का रूप ले चुका है। इसमें कोई एक नहीं, इस हमाम में सभी नंगे हैं। भ्रष्टाचार प्रत्येक स्तर और हर क्षेत्र में अपना क्रीड़ा-स्थल बना चुका है। पांच रुपये पर धरम-ईमान डिग गया है। अपने-अपनों को लाभ पहुंचाने के लिए नियम-कानूनों की धज्जियां उड़ा दी गई हैं।

भ्रष्टाचार

अभिषेक
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

मन में उठा विकार, बन गया उनका आधार
उसी पल बदल गया व्यवहार, जन्म ले बैठा भ्रष्टाचार
नन्हा था, नन्हे ही पग थे, छुटपन में प्यारा लगता था,
जब-जब हम इसको छूते थे, गंगा की धारा लगता था
बीबी बच्चे, रिश्तेदार देखो फूले नहीं समाते,
कालेधन की चकाचौंध में तन खुश मन खुश उपवन खुश।
बनी बनाई शोहरत का फिर क्या होता हर कोई जाने
खुद अपना साया था बन्धु अपने नाम को न पहचाने।
मीठे जहर के इस प्याले का, कटु सत्य कैसे बतलाए,
स्वयं करो निर्णय, इसको हम अपनाएं या न अपनाएं।

मंगल पाण्डे की वीरता

पारस कुमार
बी.एससी.-प्रथम-वर्ष

अंग्रेजी शासन काल की एक घटना है कि जब अंग्रेज सारजेन्ट हासन विश्राम कर रहा था कि एक सिपाही भागता हुआ उसके पास आया। वह भय से कांप रहा था।

"साहब! साहब!"

"क्या बात है?" सारजेन्ट हासन ने पूछा।

"एक सिपाही क्वार्टर गार्ड के सामने भरी हुई बन्दूक लेकर खड़ा है। वह चिल्ला-चिल्लाकर सिपाहियों को अंग्रेजों के खिलाफ भड़का रहा है।" घबराये हुए सिपाही ने बताया।

"क्या नाम है उसका?"

"मंगल पाण्डे सर"

"जाओ एडजुटेन्ट को बुलाओ। मैं भी वहां पहुंच रहा हूँ।" क्वार्टर गार्ड (जहाँ सेना के शस्त्र रखे जाते हैं) का दृश्य विचित्र था। मंगल पाण्डे हाथ में बन्दूक लेकर सामने खड़े सिपाहियों से कह रहा था- "उठो सिपाहियों! हाथ में हथियार लेकर खड़े हो जाओ। अरे आलसियों! उठो, इससे पहले कि अंग्रेज हमारा धर्म भ्रष्ट करने के लिए हमें आदेश दें, तुम हथियार उठा लो। आओ! मेरा साथ दो, नहीं तो कुत्ते की जिन्दगी जीनी पड़ेगी। तुम्हारी कायरता पर स्त्रियां भी हंसेंगी।" उसने हवा में बन्दूक घुमाकर कहा- "आओ!"

अंग्रेज अधिकारियों में दहशत फैल गई। मंगल पाण्डे खूंखार शेर की तरह दहाड़कर अपने साथियों को ललकार रहा था। जब जनरल हेंरसे अपने दो पुत्रों सहित वहां पहुंचा और उसने चालाकी से मंगल पाण्डे की कनपटी पर अपनी पिस्तौल तान दी। मंगल पाण्डे समझ गया कि अब खेल खत्म हो रहा है। अंग्रेजों की कैद में सड़ने से अच्छा अपनी गोली से मरना है। उसने अपनी बन्दूक से अपनी छाती पर गोली चला दी। वह मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा, मरा नहीं।

मंगल पाण्डे पर मुकदमा चला और 8 अप्रैल 1857 को अंग्रेजों ने पूरी रेजीमेन्ट के सामने मंगल पाण्डे को फांसी दे दी।

संस्कृत साहित्य में नीति का स्वरूप

नीरू
बी.ए.-तृतीय वर्ष

संस्कृत भाषा भारतियों की प्राणभूत भाषा है। संस्कृत भाषा में ही उसका मनन, चिन्तन, गवेषण और अनुभूति समन्वित है। इसका इतिहास कम से कम पाँच सहस्त्र वर्ष का है। वैदिक काल से लेकर आज तक इसकी अक्षुण्ण धारा प्रवाहित हो रही है। 'संस्कृत' शब्द का अर्थ है- परिष्कृत, निर्दोष, निर्मल, शुद्ध और अलंकृत। भारतीय आर्यो ने जिस भाषा को अशुद्धि, अपभ्रंश, अपशब्द और भाषागत दोषों से पृथक् रखकर परिष्कृत रूप में रखा, उसे संस्कृत भाषा नाम दिया गया। संस्कृत को देवभाषा, देववाणी, गीर्वाणवाणी आदि नामों से व्यवहत किया जाता है। 'विद्वांसों हि देवाः' विद्वानों को देवता कहते हैं, इस आधार पर संस्कृत को देवभाषा कहा जाता था। यह विद्वानों, मनीषियों, शिष्टों और तत्त्वज्ञानियों की भाषा थी। ईसवीय सन् के प्रारम्भ से पूर्व तक संस्कृत का प्रयोग विद्वाज्जन-भाषा और राजभाषा के रूप में प्रचलित था।

संस्कृत साहित्य में वैदिक युग से ही नीति परक उपदेशों की परम्परा चली आ रही है जिसमें विभिन्न मनीषियों ने अपने अनुसार नीति कथाओं एवं नीति के वचनों के प्रणयन किये। जिस मार्ग (व्यवहार) से व्यक्ति और समाज का जीवन सरलता के साथ व्यतीत हो उसे नीति कहते हैं। नीति का अर्थ सही मार्ग की ओर ले जाना है। नीति का सही रूप में पालन करने से व्यक्ति एवं समाज दोनों का कल्याण होता है। आदि काल से ही मानव को सही मार्ग पर चलने के लिए नीति वचनों का प्रतिपादन होता आ रहा है।

नीति के अर्थ को हम अनेक प्रकार से समझ सकते हैं। मनुष्य जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये साधन रूप में जिन बातों की आवश्यकता होती है वही नीति है। यदि वास्तव में देखा जाए तो नीति का अर्थ है 'कर्माकर्मविवेक'। समाज में रहने वाले व्यक्ति, वर्ग, जाति, राष्ट्र आदि भिन्न-भिन्न घटक हैं। यहाँ रहकर उनको परस्पर कैसा व्यवहार करना चाहिए इसके कुछ विशेष नियम होते हैं तथा चार पुरूषार्थो -धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्राप्त करने के उपायों का निर्देश जिस के द्वारा होता है वही नीति है। नीति शब्द का अर्थ होता है-ले जाना, पहुँचाना, दिग्दर्शन कराना, नेतृत्व करना तथा उपायों को बताना है 'नीयन्ते संलभ्यन्ते उपायादय इति वा नीति'। नीति वचनों के अनुसार यदि मनुष्य व्यवहार करता है तो अभिष्ट फल प्राप्त करता है, इस प्रकार मनुष्य जीवन के लक्ष्य की सिद्धि में नीति के द्वारा ही उचित मार्ग का निर्देश होता है। मनुष्य यदि नीति के विरूद्ध आचरण करता है, तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाता है।

नीति शास्त्र के ज्ञाता चाणक्य का सर्वप्रथम वाक्य - 'सुखस्य मूल धर्मः' सुख का मूल आधार धर्म है इसीलिए सबसे उत्तम नीति धर्माचरण ही है क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी सदैव सुख की ही आकांक्षा रखता है और नीति का सहारा भी वह केवल अपने सुख के लिये ही लेता है। विषय की दृष्टि से नीति को दो भागों में विभाजित किया जाता है- पहली राजनीति तथा दूसरी धर्मनीति। संस्कृत भाषा में नीति साहित्य का विशाल भण्डार है। इसमें नीति उपदेशों का संग्रह है, नीति शास्त्र के उद्भावक परमपिता ब्रह्मा, प्रतिष्ठापक भगवान विष्णु तथा प्रवर्तक भगवान शंकर हैं। यदि एक तरफ नीति साहित्य में नीति-वचनों का प्रचुर भण्डार है तो वहीं दूसरी ओर लौकिक संस्कृत साहित्य में पुराणों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों एवं विभिन्न नाटकों में भी भिन्न-भिन्न धाराओं से परिपूर्ण नीति भण्डार दृष्टिगोचर होता है। नीति-वचनों के विशेष संग्रह वाल्मीकीय रामायण के सप्तम काण्ड में भरे पड़े हैं। महाभारत में भी उद्योग पर्व के आठवें अध्याय में महात्मा विदुर द्वारा कथित नीति-वचन विदुर नीति के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार महाभारत के ही भीष्म पर्व के 25वें तथा 42वें अध्याय में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात श्रीमद्भगवद् गीता तथा योग शास्त्र के साथ-साथ ब्रह्म विद्या से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण नीति शास्त्र है।

कला का महत्त्व

कल्पना पंवार
लेक्चरर, चित्रकला विभाग

कला हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। कला के बिना मानव रसहीन फल के समान है। मानव जीवन के क्रिया-कलापों में कला का पूर्ण समावेश होता है। कलाकार के मन से निकली हुई, कल्पना कागज़ पर अभिव्यक्त होती है। इस अभिव्यक्ति से कलाकार को कितना आनन्द मिलता है, इसकी कल्पना वह स्वयं कर सकता है। चित्रकला का इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना कि मानव का। बहुत सी वस्तुएं हमारी ज्ञान की सीमा से परे होती हैं। परन्तु जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता जाता है, वस्तु की उपादेयता का ज्ञान भी उसी अनुपात में बढ़ता चला जाता है। प्राकृतिक पदार्थो में उपादेयता के अतिरिक्त दूसरा गुण उसका सौन्दर्य हैं। वस्तु में सौन्दर्य भी तभी होगा, जब उसे हम अपनी इन्द्रियों से महसूस करेंगे। तभी हमें ज्ञात होगा कि यह कला है।

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को कलात्मक अभिव्यक्ति की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है। हमारे लोक जीवन में कला का बहुत महत्त्व है। हमारे जीवन में कला का स्वरूप इतना व्याप्त हो गया है, कि उसे अलग करना असम्भव है। हम वस्त्रों, पर्दों, टाइल्स, कालीन, फर्श या वॉल पेपर पर डिज़ाइन बनाकर इस कला द्वारा धनोपार्जन भी कर सकते हैं।

ललित कलाएं पांच प्रकार की मानी जाती हैं। काव्य कला, संगीत कला, चित्र कला, मूर्त्ति कला, स्थापत्य कला। हमारे भारत में प्राचीन कलाओं के अनेकों दर्शन देखने को मिलते हैं। जैसे -अजंता, बाघ, एलोरा, बादामी, सित्तनवासल गुफाएँ। अजंता, बाघ आदि के गुफा चित्रों की कलाकृत्तियाँ पूर्व बौद्धकाल के अन्तर्गत आती हैं। भारतीय कला का उज्ज्वल इतिहास भित्ति चित्रों से ही प्रारम्भ होता है। और संसार में इनके समान चित्र कहीं नहीं बने, ऐसा विद्वानों का मत है। अजंता के कला मन्दिर प्रेम, धैर्य, उपासना, भक्ति, सहानुभूति, त्याग तथा शान्ति के अपूर्व उदाहरण हैं।

आज भारत का वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण 'ताजमहल' है, जिसने विश्व की अपूर्व कलाकृत्तियों के सात आश्चर्य में शीर्षस्थ स्थान पाया है।

विद्यार्थी की दिनचर्या

डॉ. मौ. इरफान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग

ब्रह्म मुहूर्त में उठो प्रातः शरीर सफाई पूर्ण करो।
भक्ति भाव से अल्प समय में उस प्रभु का ध्यान करो॥

अध्ययन करने बैठो फिर, ध्यान लगाकर खूब पढ़ो।
ठीक समय पर होकर तैयार, विद्यालय की ओर बढ़ो॥

विद्यालय एक पूज्य स्थल है, शुद्ध भाव से प्रवेश करो।
सद्गुणों की है जननी यह, आत्मज्ञान से ध्यान करो॥

विद्यालय सरस्वती का मन्दिर, गुरू इसका पुजारी है।
विद्यार्थी है भक्तजन इसके, गुरू सबका हितकारी है॥

सम्मुख गुरू के नतमस्तक हो, सद्भाव तुम्हारे मन में हो।
गुरू आज्ञा का पालन करना विद्यार्थी का परम धर्म हो॥

शिष्य श्रद्धा और समर्पण से गुरू आशीष पा सकता है।
सुप्त ज्ञान को अंकुरित कर जीवन सफल बना सकता है॥

समय अध्ययन का पूरा हो, घर सीधे पथ जाता है।
अमूल्य निधि है समय यह, न व्यर्थ इसे गँवाना है॥

अध्ययन एक तपस्या है, उपासक तुम बन जाओगे।
साधना में कमी न रहने दो, सच्चे शिष्य कहलाओगे॥

स्वस्थ मन है स्वस्थ शरीर में खेल से इसको पूर्ण करो।
समय खेल में गंवा न देना, हरदम इसका ध्यान करो॥

विद्यार्थी की दिनचर्या यह तन मन से अपनाओगे।
जीवन के चिर सफर में, सफलता से चल पाओगे॥

आदर्श विद्यार्थी

आशु
बी.ए.- प्रथम वर्ष

विद्यार्थी ही देश का भविष्य होते हैं। एक राष्ट्र की प्रगति का आधार उसके विद्यार्थी ही हैं। अगर विद्यार्थी आदर्शवादी होंगे तो देश का भविष्य उज्जवल होगा। आदर्श विद्यार्थी युवा पीढ़ी का पथ प्रशस्त करते हैं।

आदर्श विद्यार्थी वह नहीं है जो कक्षा में बहुत अच्छे अंक लाता है या नए-नए प्रतिमान स्थापित करता है, बल्कि वहीं विद्यार्थी आदर्श कहला सकने का अधिकारी हैं जो न केवल पढ़ाई में अच्छा है बल्कि अच्छा इन्सान भी है। जो कर्त्तव्यनिष्ठ व ईमानदार हैं, सत्यवादी और न्यायप्रिय है।

जो सदैव सभी की सहायता के लिए तत्पर रहता है, पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी गम्भीर है।

जो खेलकूद में भी रूचि रखता है। वाद-विवाद कि भी योग्यता रखता है। आदर्श विद्यार्थी में पुरस्कार जीतने के साथ-साथ हृदय जीतने की क्षमता होना भी जरुरी है।

आदर्श विद्यार्थी का अर्थ

ऐसा विद्यार्थी जिसका आचरण एवं व्यवहार अन्य विद्यार्थी के लिए उदाहरण बने। जिसका सोचने का दायरा, जिसकी सोच अपने तक सीमित न हो, जो देश-विदेश के बारे में भी ज्ञान रखता हो, और जो एक अच्छा नागरिक व देश प्रेमी हो।

अच्छा विद्यार्थी ही अच्छे नागरिक का पर्याय हो सकता है। अच्छा विद्यार्थी आदर्श बालक बालिका वही है जो बड़ों का सम्मान करे और छोटों से स्नेह रखे।

विद्यार्थी राष्ट्र के कर्णधार होते हैं। उन्हीं पर देश की उन्नति और अवनति आधारित रहती है। आदर्श विद्यार्थी अपने गुरुजनों की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते हैं। अपने माता-पिता की आमदनी को मौज-मस्ती में नहीं उड़ाते बल्कि कम से कम खर्च में अपने जीवन की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इससे उनके जीवन में मितव्ययिता आ जाती है। समय पर स्नान, शयन, समय पर उठना, समय पर व्यायाम करना, समय पर भोजन करना, समय पर अध्ययन करना, विद्वानों की संगति में बैठना, दूषित विचारों और कुसंगति से दूर रहना आदि आदर्श विद्यार्थी के प्रमुख लक्षण हैं। आदर्श विद्यार्थी के लिए शास्त्रों में भी कहा गया है। जो इस प्रकार है।

काक चेष्टा, बको ध्यानम्, श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्च लक्षणम्।।

विद्यार्थी के पांच लक्षण हैं - कौए की तरह चेष्ठा, बगुले की तरह ध्यान, कुत्ते की तरह नींद, अल्पाहारी (कम भोजन करने वाला), गृहत्यागी (अपने घर और माता-पिता का अधिक मोह न रखने वाला)।

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेद् सुखम्।।

जिसे सुख की अभिलाषा हो उसे विद्या कहां से? सुख की इच्छा रखने वाले को विद्या की आशा छोड़नी चाहिए, और विद्यार्थी को सुख की।

गणेश की प्रतीकात्मता तथा प्रासंगिकता

डॉ. मीरा चौरसिया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

हिन्दी में एक मुहावरा है श्री गणेश करना जिसका अर्थ है किसी कार्य का शुभारम्भ करना। इस मुहावरे से जन-जीवन में गणेश की सर्वव्यापकता का ही पता चलता है। उर्दू वाले या कहें कि अहले-इस्लाम भी इसी के समकक्ष एक मुहावरे का प्रयोग करते हैं और वह है- बिस्मिल्लाह करना। इसका अर्थ भी ठीक वही है जो श्री गणेश करने का। अगर ध्यान करें तो हम पाते हैं कि इस्लाम में अल्लाह एक और केवल एक सर्वोच्च शक्ति है, हिन्दुओं में ईश्वर के अतिरिक्त अनेक देवी-देवता हैं तो फिर किसी भी कार्य की शुरूआत पर श्री गणेश करना ही क्यों कहा जाता है? वस्तुत: किसी भी कार्य के प्रारम्भ में सबसे पहले गणेशपूजा या गणेश को स्मरण करने का ही विधान है और वो इसलिए कि गणेश को गणधिपति या गणाध्यक्ष माना जाता है।

पुराणों में वर्णन मिलता है कि जब शिव ने गलती से अपने ही पुत्र गणेश का सिर काट दिया तो पार्वती जी बहुत दु:खी हो गई और शोक में डूब गई। पार्वती जी का शोक दूर करने और अपनी भूल सुधार करने के लिए शिव ने अपने गणों को दौड़ाया और कहा कि ऐसे प्राणी का सिर काटकर ले आओ जो उत्तर दिशा की ओर सिर करके सोया हो। गण इस अवस्था में सोये हुए हाथी का सिर काट कर ले आये। शिव ने उसी हस्तिमुख को गणेश के धड़ पर लगाकर उन्हें पुनर्जीवित कर दिया और साथ ही उनको सेना का नायक भी बना दिया। तभी से गणेश गणपति कहलाये। गणपति के इस रूप की पूजा या स्मरण मन्त्र है- ओउम् गणं गणपत्यै नम:। इसका एक दूसरा रूप ओउम् गं गणपत्यै नम: भी मिलता है।

कार्य निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो जाये इसके लिए गणेश की निम्न स्तुति ही सबसे पहले की जाती है।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ:
निर्विघ्न कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा

एक विद्यार्थी भी बुद्धिप्रदांत गणेश की स्तुति ही सर्वप्रथम करता है ताकि उसे बुद्धि की प्राप्ति हो और साथ ही इस प्राप्ति में कोई विघ्न भी पैदा न हो।

विधाता गणाधीश सूर्यकोटि समप्रभ:
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा

रामचरितमानस का प्रारम्भ करते हुए बालकांड के प्रथम सोपान के पहले श्लोक में तुलसीदास मिलते हैं-

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि
मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ

अर्थात् अक्षरों, अर्थसमूहों, रसों, छन्दों और मंगलों की करने वाली सरस्वती जी और गणेश जी की मैं वंदना करता हूँ। 'विनय पत्रिका' में तुलसीदास अपनी विनय सीता के माध्यम से राम तक पहुंचाने की प्रार्थना करते हैं लेकिन विनय पत्रिका में जो सबसे पहला पद है वह है श्री गणेश स्तुति जो निम्न प्रकार से है-

"गाइये गणपति जगबंदन, संकर सुवन भवानी नंदन,

सिद्धि सदन, गज बदन, विनायक।
कृपा सिंधु, सुन्दर सब लायक॥
मोदक प्रिय, मुद मंगल दाता।
विद्या बारिधि, बुद्धि विधाता॥
मांगत तुलसीदास कर जोरे,
बसहिं रामसिय मानस मोरे॥"

तुलसीदास राम के अनन्य भक्त हैं, इसलिए हृदय में राम और सीता को ही बसाये रखना चाहते हैं लेकिन इसकी प्राप्ति के लिए सबसे पहले गणपति से ही याचना करते हैं।

असंख्य नाम हैं गणेश के लेकिन कहा जाता है कि गणेश के निम्नलिखित बारह नाम प्रातः, दोपहर और सायंकाल लेने मात्र से व्यक्ति के सब कष्ट दूर होकर सफलता मिलती है- वक्रतुण्ड, एकदंत, कृष्णाविंगाक्ष, गजवक्त्र, लंबोदर, विकट, विघ्नराज, धूम्रवर्ण, भालचंद्र, विनायक, गणपति और गजानन श्रद्धापूर्वक स्मरण करने से कार्य में सफलता अवश्य मिलती है। कहीं पर गणेश के एक सौ आठ नामों की सूची भी मिलती है लेकिन गणेश के नामों की कोई सीमा नहीं।

गणेश ऐसे देवता हैं जो सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों में भी किसी न किसी रूप में प्रतिष्ठित हैं। पड़ोसी देश नेपाल में गणेश को सूर्य विनायक, सूर्यगणपति अथवा हेरंब के नाम से जाना जाता है। यहां हेरंब गणेश के पांच सिर और दस हाथ मिलते हैं। यूनान के प्राचीन ग्रंथों के बुद्धि के देवता के रूप में जानस का जिक्र मिलता है, वह गणेश का ही एक रूप है जिसके सात सिर, एक सूण्ड है। अन्य पड़ोसी देशों और दूसरे महाद्वीपों में भी गणेश से मिलती-जुलती अनेक प्रतिमाएं मिलती हैं जिन्हें गणेश की तरह ही पूजा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वैदिक काल से लेकर आज तक सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति में गणेश किसी न किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान हैं।

यदि धर्म की बात करें तो गणेश मात्र हिन्दुओं के ही नहीं बल्कि जैन और बौद्धों के भी आराध्य देव हैं। जैन सम्प्रदाय में ज्ञान का संकलन करने वाले गणाध्यक्ष हैं गणेश। महाभारत के लेखक के रूप में तो गणेश जाने ही जाते हैं, ऋषिवेद व्यास ने महाभारत की रचना की, लेकिन उनके सहायक हुए गणेश। वेदव्यास बोलते गये और गणेश अपने हाथों से लिखते गए। गणेश के हस्तिमुख पर स्थित दंत-द्वय में से एक टूटा हुआ है, कहा जाता है कि इसी टूटे हुए दंत से गणेश ने महाभारत की कथा का लिपिबद्ध किया था। बौद्ध धर्म की अनेक शाखाओं में मान्यता है कि गणेश वंदना के बिना मन्त्रसिद्धि असम्भव है। नेपाल एवं तिब्बत के अनेक मंदिरों में बुद्ध की प्रतिमाओं के साथ-साथ गणेश की प्रतिमाएं भी स्थापित हैं। यह कह सकते हैं कि गणेश किसी धर्म या मत विशेष के नहीं अपितु धर्म का जो मूल तत्त्व है उसके प्रतीक हैं।

सिर या मस्तिष्क अहंकार का प्रतीक है। जब तक सिर रूपी अहंकार को उतार कर नहीं फेंका जाता तब तक आध्यात्मिक उन्नति सम्भव नहीं, तभी कबीर भी कहते हैं-

'यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं।
सीस उतारे भुई धरै तब बैठे घर माहिं॥

अहंकार के रहते आपको महत्त्व नहीं मिल सकता। अहंकार का समापन ही किसी को नायक, गणपति अथवा अग्रपूज्य बना सकता है। हाथी बुद्धिमता का प्रतीक है। हाथी का सिर पुनः स्थापित होने का अर्थ है ज्ञान की प्राप्ति का प्रारम्भ। अहंकार गया तो आत्मज्ञान होते देर नहीं लगती।

गणेश चतुर्थी अर्थात् गणेश जन्मोत्सव भारत के प्रसिद्ध पर्वों में से एक है। महाराष्ट्र और देश के दूसरे भागों में जहां महाराष्ट्र के मूल निवासी रहते हैं वहाँ यह पर्व ग्यारह दिन तक मनाया जाता है। गणेश प्रतिमाओं की स्थापना, पूजा-पाठ, घरों में व्यक्तिगत रूप से गणेश मण्डलों अथवा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा सामूहिक रूप से, दोनों तरह किया जाता है। सामूहिक गणेशोत्सव आयोजन के माध्यम से इसकी चेतना का खूब विकास किया गया है। आज भी गणेश जी की पूजा-अर्चना के साथ-साथ समसामयिक समस्याओं को इन आयोजनों के माध्यमों से बखूबी प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे गणेश और गणेशोत्सव दोनों ही आधुनिक सन्दर्भ में अधिकाधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

चरित्र गठन

गुड्डी
बी.ए.-तृतीय वर्ष

चरित्र समस्त सामाजिक प्राणियों के लिए बहुमूल्य है। चरित्र के अर्थ में मनुष्य की व्यापक विशेषताओं का वर्णन किया गया है। आकस्मिक अवसर तो छोटे से छोटे मनुष्य को भी किसी न किसी प्रकार का बड़प्पन दे देते हैं परन्तु वास्तव में महान् तो वही है जिसका चरित्र सदैव और सदैव सभी अवस्थाओं में महान तथा एक समान रहता है।

इस जगत में श्रेय का मार्ग सबसे दुर्गम और पथरीला है। आश्चर्य की बात है कितने लोग असफल होते हैं और कितने लोग सफलता प्राप्त करते हैं।

सहस्त्रों ठोकरें खाकर चरित्र का गठन होता है। संसार के धर्म प्राणहीन परिहास की वस्तु हो गए हैं। जगत को जिस वस्तु की आवश्यकता है वह है चरित्र गठन संसार को ऐसे लोग चाहिए, जिनका जीवन स्वार्थहीन हो तथा समर्पण की भावना रखते हों। चरित्र की तुलना धन-बल से नहीं की जाती, अपितु मनुष्य के महान कार्यो से की जाती है। यदि किसी व्यक्ति को उसके किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त होती है तो उसमें उसके परिश्रम के साथ-साथ उसके चरित्र भी झलकता है।

1. "मनुष्य की पहचान धनवान होने से नहीं बल्कि चरित्रवान होने से होती है।"

बस केवल सत्कार्य करते रहो सर्वदा पवित्र आचरण करते रहो तभी हम अच्छे विद्यार्थी, सच्चे देशभक्त तथा आदर्श नागरिक बन पाएँगे। चरित्र मनुष्य की सर्वोत्तम पूँजी है।

विपत्तियां करें जीवन का विकास

नीरज
बी.ए.-प्रथम वर्ष

विपत्ति, प्रतिकुल परिस्थिति, विघ्न आदि का भी जीवन में अपना महत्व है। जो विपत्तियों से घबराता है, वह निर्बल है। वह चीख-चिल्लाकर रह जाता है, पर अपनी कमजोरी दूर नहीं करता। आप ऐसे दीन-हीन, दुर्बल न बनें।

विपत्तियां हमें सावधान करती है, सजग बनाती हैं। जो पौरुषपूर्ण है वह विपत्तियों पर विजय प्राप्त करता है। भगवान पर विश्वास रखकर पुरुषार्थ करने से परिस्थितियों व बुरे प्रारब्ध को बदला जा सकता है। पुरुषार्थ से पूर्व के कुसंस्कार नष्ट किये जा सकते हैं। पुरुषार्थ के कारण ही एक साधारण तथा महान व्यक्ति में अंतर है। हमसे प्रायः भूल यह होती है कि हम अपनी त्रुटियों की ओर नहीं सोचते। तत्पर हो जाइये। अपनी कमजोरी और कायरता छोड़ दीजिये। अगर जीवन में आत्मबल, धैर्य, साहस, पुरुषार्थ, विवेक और ईश्वर-आश्रय हो तो हरेक परिस्थिति में विजय प्राप्त कर निरंतर प्रगति के पथ पर बढ़ा जा सकता है। इसलिए जीवन के विकास के लिए जीवन का संतुलन खोना नहीं चाहिए और उच्च आदर्शो को छोड़ना भी नहीं चाहिए।

सुदृढ़ संकल्प

विमल कान्त तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग

इच्छा, संकल्प के पहले की अवस्था है और संकल्प, इच्छा-शक्ति की घनीभूत अभिव्यक्ति है। इच्छा की ऊर्मियां मानव में प्रत्येक क्षण जन्म लेती रहती हैं। फलस्वरूप इच्छा से संलग्न मन चंचल बनकर विकल्पों में भ्रमित होता रहता है। मन की चंचलता पर नियन्त्रण करने के लिए दृढ़ संकल्प अति आवश्यक है। श्री मद्भगवद् गीता में लिखा है कि मन को वश में करना कठिन अवश्य है, परन्तु असम्भव नहीं। वैराग्य एवं अभ्यास द्वारा मन को वश में किया जा सकता है, अर्थात् मन को वैराग्य एवं अभ्यास द्वारा जीता जा सकता है। वैराग्य भाव भी वस्तुत: 'इच्छा' के अधीन रहता है।

इच्छा की पूर्ति न होने पर व्यक्ति को निराशा एवं पीड़ा का अनुभव होता है। मन की चंचलता इसका परिणाम होता है। मन की चंचलता, इच्छा को अस्थिर अथवा दुविधापूर्ण बना देती है। दुविधा व्यक्ति को केवल परेशानी में डालकर नष्ट कर देती है। संशय मनुष्य के नाश का कारण बनता है। इसलिए मनुष्य को संशय नहीं होना चाहिए बल्कि जो भी कार्य वह करे व सुदृढ़ संकल्प के साथ करे।

सुदृढ़ संकल्प के लिए सुदृढ़ इच्छा शक्ति अपेक्षित है। अत: मन के समान इच्छा-शक्ति पर भी व्यक्ति का नियन्त्रण आवश्यक है। इच्छा-शक्ति एवं संकल्प-शक्ति प्राय: अन्योन्याश्रित हैं। इच्छा शक्ति जब घनीभूत होकर स्थिर हो जाती है तब ही संकल्प की दृढ़ता, इच्छा शक्ति की प्रबलता की पहचान बनती है। दृढ़ इच्छा शक्ति का धनी व्यक्ति कठिन से कठिन कार्य करने में समर्थ होता है।

सुदृढ़ इच्छा शक्ति का उदाहरण नेपोलियन में इस घटना में देखा जा सकता है जब नेपोलियन की सेना विश्व जीतने के लिए चली जा रही थी तभी कुछ समय बाद सेना के सामने अल्पस के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ थे तो सैनिक संकोच में आ गये तभी नेपोलियन ने अपनी सेना को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'समझ लो अल्पस हैं ही नहीं' और देखते ही देखते सेना अल्पस को पार कर गई। यह सब नेपोलियन के दृढ़ संकल्प के द्वारा ही सम्भव हो पाया था। नेपोलियन हमेशा कहा करता था कि 'असम्भव' शब्द मेरे शब्द-कोष में नहीं है यह तो मूर्खो के कोष का शब्द है।

संसार में आज तक जितने भी महापुरूष हुए हैं, वह दृढ़ संकल्प के द्वारा ही हुए। दृढ़ संकल्प एक सामान्य आदमी को महापुरुष बना देती है। लाल बहादुर शास्त्री, अब्दुल कलाम, अब्राहम लिंकन, हिटलर, नरेन्द्र मोदी आदि महापुरुष अपनी प्रबल इच्छा शक्ति के द्वारा ही ज़मीन से उठकर उच्चत्तम पदों पर आसीन हुए हैं।

अत: हम अपने जीवन में जो भी कार्य करें वह दृढ़ संकल्प के साथ करें। कभी भी हमें हपने ऊपर संशय नहीं करना चाहिए। दृढ़ संकल्प के साथ किये गये प्रत्येक कार्य में हमें सफलता निश्चित प्राप्त होगी।

संकल्प की शक्ति

हिना
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

मुश्किलें दिल के इरादे आज़माती है,
स्वप्न के इरादे, निगाहों से हटाती है।

हौसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर,
ठोकरें इंसान को चलना सिखाती हैं।

बन्द करने से आँखें, मंजर बदला नहीं करते,
कहने पर से आसमां झुका नहीं करते।

चाहत है अगर कुछ कर गुज़रने की,
तो हौंसले कभी कम हुआ नहीं करते।

पहचानो अपनी काबलियत को समझो,
कि वक़्त हर बार इम्तिहान लिया नहीं करते।

अगर लगन है, कुछ कर गुज़रने की,
बिना किये दम न लेना,
क्योंकि मौके हमेशा मिला नहीं करते।

करो दृढ़ संकल्प कि पाना है मंज़िल को,
फिर असफलताएं भी राहें रोका नहीं करते।

कर्त्तव्य

अर्शी महारूख
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

हममें से प्रत्येक कोई जानता है कि 'कर्म ही पूजा है।' परन्तु कुछ व्यक्ति गलत कर्मों में पड़ जाते हैं और उनका अन्त भी बुरा होता है। हमारे अच्छे जीवन के लिए तथा समाज को ऊंचा उठाने के लिए हमारे कुछ कर्त्तव्य हैं। यथा-

हमारा पहला कर्त्तव्य यह है कि हम अपने प्रति घृणा ना करें, क्योंकि आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि पहले हम स्वयं में विश्वास करें फिर ईश्वर में। जिसे स्वयं में विश्वास नहीं, उसे ईश्वर में कभी विश्वास नहीं हो सकता।

जब तुम कोई कर्म करो, तब अन्य किसी बात का विचार मत करो, और उस समय उसमें अपना सारा तन मन लगा दो।

भविष्य में क्या होगा, इसी चिन्ता में जो रहता है, उससे कोई कार्य नहीं हो सकता। इसलिए जिस बात को आप सत्य समझते हैं, उसे अभी कर डालो, भविष्य में क्या होगा, क्या नहीं होगा इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

अत्यन्त छोटा कर्म भी यदि अच्छे भाव से किया जाए तो उससे अद्‌भुत फल की प्राप्ति होती है। अतएव अच्छे भाव से प्रत्येक कार्य करें।

ये कैसी हक़ीकत है

शीबा परवीन
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

मोमबत्ती जलाकर मुर्दों को याद करते हैं और मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन मनाया जाता है, पायल हजारों रु. में आती है पर पैरों में पहनी जाती है, बिन्दी एक रु. में आती है और माथे पर सजाई जाती है, इसलिए कीमत मायने नहीं रखती कार्य मायने रखते हैं। एक किताब घर में रखी गीता और कुरान आपस में कभी नहीं लड़ते जो उनके लिए लड़ते हैं वो उन्हें कभी नही पढ़ते। नमक की तरह कड़वा ज्ञान देने वाला ही सच्चा मित्र होता है, मीठी बातें करने वाला तो चापलूस होता है। इतिहास गवाह है कि आज तक कभी नमक में कीड़े नहीं पड़े पर मीठे में अक्सर कीड़े पड़ जाया करते हैं। अच्छे मार्ग पर कोई नहीं जाता पर बुरे मार्ग पर सभी जाते हैं इसलिए दारू बेचने वाले को घर-घर नहीं जाना पड़ता। उम्र भर बोझ उठाये उस कील ने, पर लोग तारीफ उस पर लटकी तस्वीर की करते हैं। इन्सान की समझ इतनी सी है कि उसे जानवर कहो तो नाराज हो जाता है और शेर कहो तो खुश हो जाता है। बारात में दूल्हा सबसे पीछे और दुनिया आगे रहती है। मय्यत में जनाज़ा आगे और दुनिया पीछे चलती है। ये दुनिया खुशी में आगे और दु:ख में पीछे हो जाती है। अक्सर रब से लोग ज़िन्दगी माँगते हैं और जब उनसे पूछा जाए तो बचपन वापस माँगते हैं। छोटे थे हर बात भूल जाया करते थे, दुनिया कहती थी कि याद करना सीखो, बड़े हुए तो हर बात याद रहती है, दुनिया कहती है भूलना सीखो। आना जाना तो लगा रहेगा दोस्तों, रच दें कुछ ऐसा इतिहास कि दुनिया बरसों तक याद रखे।

स्वामी विवेकानन्द के सपनों का भारत

कु. हेमा
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

अगर पृथ्वी पर कोई ऐसा देश है, जिसे हम धन्य-पुण्य भूमि कह सकते है, यदि ऐसा कोई देश है जिस पर पृथ्वी के सभी जीवों को अपना कर्मफल भोगने के लिए आना पड़ता हैं, यदि ऐसा कोई देश है, जिस पर भगवान की ओर उन्मुख होने के प्रयत्न में स्वयं संलग्न होना पड़ता है। अंतत: आना पड़ता है, यदि ऐसा कोई देश है, जिस पर सर्वाधिक एवं अधिकतम आत्मन्वेशष का विकास हुआ है, तो वह देश भारत है। हमारे देश के लिए इस समय आवश्यकता है, स्नायु वाले शरीरों की, लोहे जैसी ठोस मांस-पेशियों की आवश्यकता है। इस तरह की इच्छा शक्ति सम्पन्न की, जिसका प्रतिरोध करने में कोई समर्थ न हो। आवश्यकता है, इस तरह की दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न की, जो ब्रह्माण्ड के सभी रहस्यों को भेद सकती है। अगर ये काम करने के लिए हमें समुद्र के मार्ग से या किसी भी तरह मौत का सामना करना पड़ेगा ये हमारे लिए परम आवश्यक है।

राष्ट्र निर्माण और स्त्री

शमा परवीन
बी.ए.- प्रथम वर्ष

नारी का एक रूप शक्ति का भी है। हम यह भूल जाते हैं कि नारी मातृसत्ता का नाम है, जो हमें जन्म देती है और पाल-पोसकर बड़ा करती है। निश्चित ही नारी का मानव जीवन में गहरा योगदान है।

विविध रूपों में नारी का योगदान- किसी भी व्यक्ति को जन्म देकर उसका पालन-पोषण करके उसे राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित करना, यह कार्य नारी का मातृरूप ही कर सकता है। यह राष्ट्र निर्माण करने वाले दूसरे कार्यो से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा एवं कार्यकुशलता का पूर्ण परिचय दे रही है। अन्तरिक्ष यात्रा भी कर रही है, और हिमालय की चोटी पर भी विजय प्राप्त कर रही है।

भारत की नारी- सीता, द्रोपदी, रूपिमाणी, गार्गी गौतमी, कात्यायिनी आदि नारियों को क्या विस्मृत किया जा सकता है। बड़े राष्ट्र के निर्माण में निश्चित रूप से इन सभी का बड़ा योगदान रहा है।

पौराणिक और भारतीय मध्यकाल की नारी- पौराणिक काल में भी कई ऐसे नाम मिलते हैं, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया है। यह राष्ट्र रक्षा में राष्ट्र निर्माण का कार्य था। ऐसा कृत्य करके कैकेयी ने राजा दशरथ को युद्ध से विमुख नहीं होने दिया। मध्यकाल में भी अनेक नारियों ने अपना सर्वस्व राष्ट्र हित के लिए समर्पित कर दिया था। इनमें प्रमुख हैं रज़िया बेगम, चाँदबीबी, जीजा बाई, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई आदि।

स्वतन्त्रता पूर्व नारी का योगदान- राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए भी अनेक नारियों ने अपना अविस्मरणीय योगदान दिया। सरोजिनी नायडू, राजकुमारी अमृतकौर, विजय लक्ष्मी पंडित, अरूणा आसिफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि।

राष्ट्र निर्माण और नारी- यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि नारी कोमलकान्ता होने के साथ-साथ अपने स्वभाव में अधिक कर्मठ एवं सहनशील होती है। उसमें धैर्य अधिक होता है, इसलिए राष्ट्र निर्माण के कार्य में पुरूषों की अपेक्षा अधिक सहायक सिद्ध होने में समर्थ है।

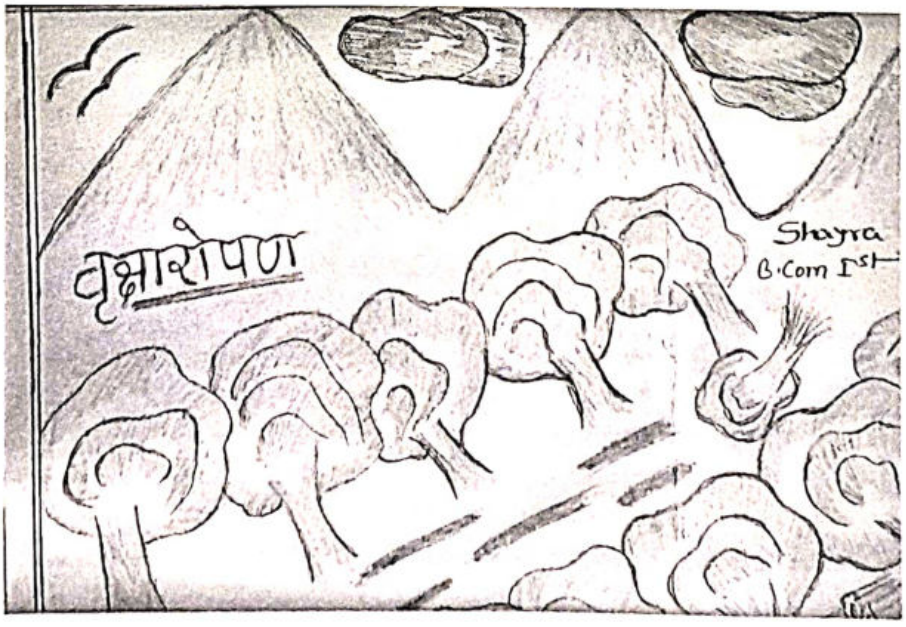

नारी की आजादी

शिवानी धीमान
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

भारत को आजाद हुए 70 साल हो गए हैं लेकिन महिलाओं को आज भी आजादी की जरुरत है वो अभी भी पूरी तरह से स्वतन्त्र नहीं हो पाई है। तब से लेकर आज तक इस देश में महिला सशक्तिकरण की बात की जाती है लेकिन सच तो यह है कि विकास और प्रगति के तमाम दावों के बावजूद देश की आधी आबादी अपने हालातों से जद्दोजहद करती हुई दिखती है। महिला सशक्तिकरण के नारों और दावों के बीच निर्भया जैसी घटनाएं हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति का भयानक चित्र प्रस्तुत करती है।

क्या आजाद भारत में आजाद हैं महिलाएं?

अगर देखा जाए तो भारत स्वतन्त्र है लेकिन क्या महिलाओं को स्वतन्त्रता है? यह प्रश्नचिह्न पहले भी था और अब भी है।

हमारे देश में महिलाओं के साथ अत्याचार और उनका शोषण किया जाता है और हमारा समाज जो कि महिलाओं पर ही बंदिशें लगा देता है, जैसे-

रात को 7.00 बजे के बाद घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए।

आप ये नहीं कर सकते, आप वो नहीं कर सकते, जात-पात के नाम पर बंदिशें लगा दी जाती हैं।

ये उन शहीदों के सपनों का भारत नहीं है जिसका उन्होंने सपना देखा था- उनका सपना था कि, यहाँ की महिलाएं सुरक्षित हों लेकिन आज महिलाएँ असुरक्षित महसूस करती हैं। 'निर्भया' जैसी घटनाएँ रोज़ अखबार में देखने को मिलती हैं। माना कि हम आजाद हैं लेकिन सोच हमारी आज भी 1947 से पहले वाली ही है। हमारे बड़े-बड़े राजनेता बच्चों की यूनिफॉर्म (शर्ट-स्कर्ट) पर बैन लगाने की सलाह देते हैं। लेकिन लोगों की सोच और मानसिकता बदलने को नहीं कहते। आज जो छोटी-छोटी बच्चियों (2-3 साल) के साथ ये दुष्कर्म हो रहे हैं उनको तो फिर साड़ी या बुर्के में स्कूल भेजना चाहिए क्योंकि हमारी सोच ही इतनी घटिया होती जा रही है।

यदि सानिया मिर्ज़ा के माता-पिता उनको स्कर्ट के बजाय बुर्का पहनने को कहते तो शायद वो बैडमिंटन में देश का नाम राशन नहीं कर पाती।

यदि मिथाली राज के माता-पिता उनको लोअर-टी शर्ट की बजाय सूट-सलवार पहनने की सलाह देते तो शायद वो आज क्रिकेट में देश का नाम रोशन नहीं कर पाती।

तो आइए हम सब मिलकर अपनी मानसिकता और सोच बदलने का प्रयास करें और देश में महिला की स्थिति को बेहतर बनाएं।

कन्या भ्रूण हत्या

स्वाति भारती
बी.कॉम.-प्रथम वर्ष

भारत में वर्ष 1901 में प्रति 1000 पुरुषों पर 972 महिलाएँ थीं। वर्ष 1991 में महिलाओं की यह संख्या घटकर 927 हो गई। वर्ष 1991-2011 के बीच महिलाओं की संख्या में वृद्धि दर्ज हुई।

कन्या भ्रूण हत्या आज एक ऐसी अमानवीय समस्या का रूप धारण कर चुकी है, जो कई और गम्भीर समस्याओं की जड़ है। इसके कारण महिलाओं की संख्या दिन-प्रतिदिन कम हो रही है।

वर्ष 2011 के बीच की जनगणना में प्रति हज़ार पुरुषों पर 940 महिला हो गई। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार वर्ष 2013 में भारत में कन्या भ्रूण हत्या के कुल 217 मामले दर्ज किए गए, जिनमें सबसे अधिक 69 मध्य प्रदेश से, 34 राजस्थान से और 30 हरियाणा से सम्बन्धित थे।

वर्ष 2012 में हरियाणा सरकार द्वारा कन्या भ्रूण हत्या की सही-सही जानकारी देने वालों को 20 हज़ार के पुरस्कार देने की घोषणा भी की गई। भारत में 0 से 6 वर्ष की आयु वर्ग वाले बच्चों के लिंगानुपात की स्थिति दयनीय है।

हरियाणा में प्रति हज़ार लड़कों पर केवल 834 लड़कियाँ थीं। किन्तु वर्ष 2013 में लड़कियों की यह संख्या थोड़ी बढ़कर 900 तक जा पहुँची।

संसार का हर प्राणी जीना चाहता है और किसी भी प्राणी के प्राण लेने का अधिकार किसी को भी नहीं है। प्राचीन काल में भारत में महिलाओं को भी पुरुषों के समान शिक्षा दी जाती थी।

भारत में कन्या भ्रूण हत्या के कई कारण हैं। कन्या भ्रूण हत्या का एक बड़ा कारण दहेज प्रथा है। लोग लड़कियों को पराया धन समझते हैं। उनकी शादी के लिए दहेज की व्यवस्था करनी पड़ती है। दहेज जमा करने के लिए कई परिवारों को कर्ज भी लेना पड़ता है। इसलिए भविष्य में इससे बचने के लिए लोग गर्भावस्था में ही लिंग परीक्षण करवाकर कन्या भ्रूण हत्या करवा देते हैं। हमारे समाज में महिलाओं से अधिक पुरूषों को महत्त्व दिया जाता है।

बेटी

रोहित कुमार
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

मिट्टी की खुश्बू सी होती हैं बेटियां
घर की राज़दार होती हैं बेटियां
बचपन हैं बेटियाँ, जवानी हैं बेटियां
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् सी होती हैं बेटियां
फिर क्यों जला देते हैं ससुराल में बेटियां
फिर क्यों न बांटे खुशियां जब होती हैं बेटियां
एक नहीं दो वंश चलाती हैं बेटियां
फिर गर्भ में क्यों मार दी जाती हैं बेटियां
घर की सब चहल-पहल है बेटी
जीवन में खिला कमल है बेटी
कभी धूप गुनगुनी सुहानी
कभी चंदा शीतल है बेटी।
शिक्षा, गुण, संस्कार रोप दो
फिर बेटों सी सबल है बेटी।
सहारा दो गर विश्वास का
तो पावन गंगाजल है बेटी
प्रकृति के सद्गुण से सींचो
तो प्रकृति सी निश्छल है बेटी।
क्यों डरते हो पैदा करने से
अरे आने वाला कल है बेटी॥

बेटी का सम्मान

गायत्री सैनी
बी.ए.-तृतीय वर्ष

बेटी बनकर आयी हूँ, माँ-बाप के जीवन में।
बसेरा होगा कल मेरा, किसी और के आँगन में॥

न जाने क्यों ये रीत भगवान ने बनाई होगी।
कहते हैं आज नहीं तो कल तू पराई होगी॥

देके जन्म पाल-पोसकर जिसने हमें बड़ा किया।
और वक़्त आया तो उन्हीं हाथों ने हमें विदा किया ॥

टूट कर बिखर जाती है, ज़िन्दगी हमारी।
फिर भी उस बंधन में प्यार मिले यह तो जरुरी नहीं॥

क्यूं रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है।
क्या यही हम बेटियों का नसीब होता है॥

एक बेटी की बस इतनी सी विनती है।
मर्द नारी का दर्द समझे॥

नारी, बहु-बेटी का सम्मान करें।
बस इतनी सी विनती है॥

एक अजन्मी बेटी की चिट्ठी माँ के नाम

आशीष कुमार
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

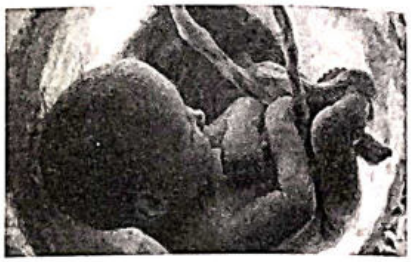

मेरी प्यारी माँ,

मैं खुश हूँ और भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि आप भी सुखी रहें। यह चिट्ठी मैं इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि मैंने एक दिल दहला देने वाली खबर सुनी है।

मैंने सुना है कि मुझ मासूम को मार डालने की साजिश चल रही है। यह सुन मुझे यकीन नहीं हुआ, भला मेरी प्यारे-प्यारे कोमल हृदय वाली माँ ऐसा कर सकती है! माँ बस एक बार कह दीजिए कि यह जो मैंने सुना है सब झूठ है। दरअसल मैं यह खबर सुनकर दहल सी गई हूँ, मेरे तो हाथ इतने कोमल हैं कि डॉक्टर के पास जाते हुए मैं आपका आंचल ज़ोर से भी नहीं खींच सकती कि आपको रोक लूं। माँ मुझे मारने के लिए आप जो दवा लेना चाहती हैं वह मेरे नन्हे शरीर को बहुत कष्ट देगी। मुझे अत्यन्त दर्द होगा। आप तो देख नहीं पाएंगी कि वह दवाई आपके पेट के अन्दर मुझे कितनी बेरहमी से मार डालेगी। मुझे जन्म लेने की बहुत ललक है। माँ अभी तो मुझे आपके आंगन में अपने नन्हे-नन्हे पैरों से छम-छम नाचना है। आपकी ममता भरी गोद में खेलना है। चिंता मत करो माँ मैं आप पर बोझ नहीं बनूंगी। मत लेकर देना मुझे कीमती पायल, मैं दीदी की छोटी पड़ चुकी पायल पहन लूंगी। मत लेकर देना मुझे नई किताबें, मैं भैया की पुरानी किताबों से पढ़ लूंगी। मुझे खाना भी अच्छा नहीं चाहिए, मैं बचा हुआ खाना खाकर अपने इस नन्हे से पेट को भर लूंगी। माँ बस एक बार मुझे इस कोख से निकालकर चांद-तारों से भरे आसमान तले जीने का मौका तो दीजिए। मैं आपका प्यार चाहती हूँ, माँ मुझे मत मारिये।

आपकी अजन्मी बेटी

बेटी की मुस्कराहट

रुबीना
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

शाम हो गई अभी तो,
घुमाने ले चलो न पापा।

चलते-चलते थक गई,
कन्धे पर बिठा लो न पापा।

अंधेरे से डर लगता है,
सीने से लगा लो न पापा।

मम्मी तो सो गई,
आप ही थपकी देकर सुला दो न पापा।

स्कूल तो पूरी हो गयी,
अब कॉलेज जाने दो न पापा।

पाल-पोसकर बड़ा किया,
अब जुदा न करो पापा।

अब डोली में बिठा ही दिया है,
तो आंसू तो मत बहाओ पापा।

आपकी मुस्कुराहट अच्छी है,
एक बार मुस्कुराओ न पापा।

आपने मेरी हर बात मानी,
एक बात और मान जाओ न पापा।

इस धरती पर बोझ नहीं हूँ मैं,
दुनिया को समझाओ न पापा।

लड़की के बोल

सोनम
बी.ए.- प्रथम वर्ष

सुबह की हल्की किरण को, धूप में बदलने तो दो।
गुजरते हुए बादलों को जमीं पर, बरसने तो दो।

खिलते हुए फूलों की खुश्बू, चारों ओर बिखरने तो दो।
मैं लड़की हुई तो क्या हुआ, मुझे जीने तो दो।

चांद की चांदनी को, चारों ओर थिरकने तो दो।
बहती हुई नदी को, सागर में मिलने तो दो।

राह बना लूंगी, पत्थरों में मैं भी अपनी।
नदी की तरह मुझे, खुलकर बहने तो दो।

मैं लड़की हुई तो क्या हुआ, मुझे जीने तो दो।
सपने संजोये हैं जो मैंने, उन्हें पंख लगाकर उड़ने तो दो।

मुझ नन्ही सी जान को, खुलकर जीने तो दो।
मैं लड़की हुई तो क्या हुआ, मुझे जीने तो दो।

मायके का सम्मान रखने का, अवसर तो दो।
बेटे से आगे बढ़ूंगी, विश्वास बना रहने तो दो।

शिक्षा की जरुरत है, जिसमें दुनिया का विकास है।
प्रतिभा बनकर दिखाऊंगी, मुझे शिक्षित होने तो दो।

मैं लड़की हुई तो क्या हुआ, मुझे जीने तो दो।
पर्वत की तरह दृढ़ हूँ, वायु की तरह चंचल।

मातृत्व की कड़ी हूँ, ममता में पली हूँ।
मुझे मेरी तरह जीने तो दो, जीने तो दो... जीने तो दो।

गीता अमृत

मुस्कान
बी.ए.-प्रथम वर्ष

गीता में लिखा है कि अगर कोई इन्सान बहुत हँसता है तो अन्दर से वो बहुत अकेला है।

अगर कोई इन्सान बहुत सोता है तो वो अन्दर से बहुत उदास है।

अगर कोई इन्सान खुद को बहुत मज़बूत दिखाता है और रोता नहीं तो वो अन्दर से बहुत कमज़ोर है।

अगर ज़रा सी बात पर कोई रो देता है तो वो बहुत मासूम और नाज़ुक दिल का है।

अगर कोई हर बात पर नाराज़ हो जाता है तो वो अन्दर से बहुत अकेला है और ज़िन्दगी में प्यार की कमी महसूस करता है।

लोगों को समझने की कोशिश कीजिए, ज़िन्दगी किसी का इन्तज़ार नहीं करती। लोगों को एहसास दिलाइयें कि वो आपके लिए कितने खास हैं। अगर ज़िन्दगी में कुछ पाना हो, तो तरीके बदलें, इरादे नहीं। इस कलयुग में रुपया चाहे कितना भी गिर जाए लेकिन उतना नहीं गिरेगा, जितना इन्सान रुपयों के लिए गिर चुका है। खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते पर अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं।

बेहतरीन इन्सान अपनी बातों से जाना जाता है, वरना अच्छी बातें तो दीवारों पर भी लिखी होती हैं। दुनिया में कोई भी काम नामुमकिन नहीं, बस हौसले और मेहनत की ज़रूरत है।

पहले मैं होशियार था इसीलिए दुनिया को बदलने चला था। आज मैं समझदार हूँ इसलिए खुद को बदल रहा हूँ।

प्रेम चाहिए तो समर्पण खर्च करना होगा, विश्वास चाहिए तो निष्ठा खर्च करनी होगी। साथ चाहिए तो समय खर्च करना होगा और अच्छा जीवन चाहिए तो स्वयं को बदलना होगा।

अमृत वाणी

हिमाँशी चौधरी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

अपने जीवन की दुखद घटनाओं को सोचकर समय एवं शक्ति नष्ट करने के बजाय सुखद घटनाओं को याद करके आनन्द लीजिए एवं सदैव व्यस्त रहिए।

मुसीबतों का सामना पूरी ताकत से कीजिए, क्योंकि भागने से यह आपका पीछा नहीं छोड़ेंगी।

सभी समस्याओं को एक साथ हल करने की चेष्टा मत रखिए। इन्हें एक-एक करके हल कीजिए, और शुरूआत छोटी समस्या से कीजिए।

यदि हम दूसरों को सहयोग देते हैं तो उससे वह सदा के लिए हमारे सहयोगी बन जाते हैं।

कोई भी पराजय यह नहीं बताती कि हम में कोई कमी है, वो बताती है कि कमी हमारे प्रयास में थी जिसे चाहे तो हम दूर कर सकते हैं।

आप जो भी हैं उसी में श्रेष्ठ एवं सुन्दर बनने का प्रयास करें और सदैव खुश रहिए।

मूर्खों के साथ स्वर्ग में रहने से अच्छा है कि ज्ञानी के साथ कारागार में रहें।

ज़िंदगी से आज जो भी बेहतर से बेहतर ले सको ले लो क्योंकि जिंदगी जब लेना शुरू करती है तो साँसें भी नहीं छोड़ती।

सुख अथवा दु:ख देने वाला कोई और नहीं है, बल्कि हमारे अपने किए हुए कर्म ही है।

जो व्यक्ति माता-पिता गुरू या अन्य गुरूजनों के अनुशासन में रहता है वह सदैव सुखी रहता है।

असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं किया गया।

जिन पौधों की परवरिश हमेशा छांव में होती है, वह अक्सर कमज़ोर होते हैं, और जिन पौधों की परवरिश धूप में होती है वो हर मौसम को झेल लेते हैं।

जीवन में तकलीफ उसी को आती है जो हमेशा जिम्मेदारी उठाने को तैयार रहते हैं। जिम्मेदारी लेने वाले कभी हारते नहीं या तो जीतते हैं या फिर सीखते हैं।

अच्छे लोगों की एक खूबी यह भी होती है कि उन्हें याद रखना नहीं पड़ता वह याद रह जाते हैं।

अनमोल वचन

मौ. तुराबी
बी.एससी. द्वितीय वर्ष

जितना कठिन संघर्ष होगा
जीत उतनी ही शानदार होगी।
मौन सबसे सशक्त भाषण है
धीरे-धीरे दुनिया आपको सुनेगी।
कभी भी लोग आपके बारे में टीका या टिप्पणी करें
तो घबराना मत
बस यह बात याद रखना कि हर खेल में
दर्शक ही शोर मचाते हैं खिलाड़ी नहीं।
शतरंज का एक नियम बहुत ही उम्दा है
कि चाल कोई भी चलो पर अपनो
को नहीं मार सकते।
जब तक आप किनारे को छोड़ कर नहीं जायेंगे
तब तक आप समुद्र पार नहीं कर सकते।
चरित्र + अवसर = सफलता

अनमोल विचार

विशाल कुमार
कनिष्ठ सहायक

वक्त भी सिखाता है और
गुरू (टीचर) भी.... पर
दोनों में फर्क सिर्फ इतना है
कि टीचर सिखा कर इम्तेहान लेता है और
वक्त इम्तेहान लेकर सिखाता है।
ईश्वर ने सृष्टि की रचना करते समय तीन विशेष
रचनाएं की....
अनाज में कीड़े पैदा कर दिए
वरना लोग इसका सोने और चांदी की तरह संग्रह करते।
मृत्यु के बाद देह में दुर्गन्ध उत्पन्न कर दी
वरना कोई अपने प्यारों को कभी भी जलाया या
दफनाया नहीं करता।
एक समझदार व्यक्ति वही है,
जो दूसरों को देखकर
उनकी विशेषताओं से सीखता हैं
उनसे तुलना और ईर्ष्या नहीं करता।

सच्ची सीख

दिनेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक

मेरा जन्म एक साधारण परिवार में हुआ। महाविद्यालय पत्रिका में मुझे अपनी बात लिखने का अवसर प्रदान किया गया। इसके लिए मैं सम्पादक मण्डल का आभारी हूँ। मेरा सन्देश उन व्यक्तियों के लिए है जिन्होंने हमेशा दूसरों को धोखा दिया। बचपन से बड़े होने तक जीवन में आपको अनेक प्रकार के व्यक्तियों के सम्पर्क में रहने का अवसर मिलेगा। धन्य है वह जिन्हें अच्छे लोगों का साथ मिलता है, मुझे भी मिला। जिनके कारण मैं आज यहाँ तक पहुंच सका। मुझे गर्व है उन पर। उन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया, अच्छे-बुरे समय में मैं उनका आभारी रहूंगा। पर दुःख इस बात का है कि मैंने जिनके लिए कुछ किया उन्होंने मुझे हमेशा धोखा दिया। मुझसे झूठ बोला, बार-बार उनके लिए सन्देश है मैं साथ हूँ, साथ रहूंगा लेकिन सच्ची, अच्छी, कड़वी बातों के साथ। याद दिलाता रहूंगा हमेशा अच्छी बात तुम्हें ठोकर लगेगी, उठाता रहूंगा हर बार, तुमने धोखा दिया है बार-बार जीवन में कुछ गलत किया होगा मैंने। समझूंगा मैं यही हर बार जीवन धन्य हो जाएगा इस दिन जब तुम समझो कि हमने धोखा दिया। हर बार अब करना है हमको भी कुछ अच्छा काम। जीवन है अनमोल, लगाओ अच्छे कार्य में। मैं अच्छा न लगूं कोई बात नहीं किसी और की अच्छाई लेकर कार्य करना हर बार यही सन्देश है। पर अच्छी बातों को किसी से भी लिया जा सकता है। धोखा न दो दूसरों को खुद भी खाओगे तुम भी इससे बच नहीं पाओगे। अच्छा करोगे, अच्छा पाओगे जिन्होंने किया तुम्हारे लिए बहुत कुछ उनका साथ हमेशा पाओगे। मैं रहूंगा तुम्हारे साथ हमेशा क्या तुम मुझको धोखा बार-बार दे पाओगे, और यदि दे पाओगे क्या जीवन में खुश रह पाओगे।

चाणक्य नीति

अंजली
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

(1) काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, श्रृंगार (रति) कौतिक मनोरंजन अतिनिद्रा स्व अति सेवा विद्या की अभिलाषा रखने वाले को इन आठ बातों को त्याग कर देना चाहिए।

(2) इस बात को बाहर मत आने दीजिए कि आपने क्या करने के लिए सोचा है, इस रहस्य ही बनाये रखना अच्छा है और इस काम को करने के लिए दृढ़ रहिये जब तक कार्य सफल नहीं हो जाता....

(3) कोई काम शुरू करने से पहले स्वयं से तीन प्रश्न कीजिए-मैं ये क्यों कर रहा हूँ? इसके परिणाम क्या हो सकते हैं? और क्या मैं सफल हो पाऊंगा? जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर मिल जाएं, तभी आगे बढ़ना उचित है।

(4) सुख की अभिलाषा रखने वालों को विद्या प्राप्ति की आशा का त्याग कर देना चाहिए। विद्यार्थी को सुख की आशा का त्याग कर देना चाहिए। सुखार्थी के पास विद्या कहां विद्यार्थी को सुख कहां।

(5) पुस्तकों में लिखी विद्या और दूसरों के पास जमा किया गया धन कभी समय पर काम नहीं आते ऐसी विद्या या धन को न होने के बराबर समझना चाहिए।

(6) आलसी व्यक्ति या छात्र का न तो वर्तमान होता है न भविष्य।

(7) कभी भी उनसे मित्रता नहीं कीजिए जो आपसे कम या ज़्यादा प्रतिष्ठा के हों, ऐसी मित्रता कभी आपको प्रसन्नता नहीं देगी।

(8) जल की एक-एक बूंद गिरने से धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है। इसी प्रकार सभी विद्या धर्म और धन संचय धीरे-धीरे ही होता है।

(9) जब आप किसी काम की शुरूआत करते हैं तो असफलता से मत डरें और उस काम को न छोड़ें, जो लोग ईमानदारी से काम करते हैं वो सबसे प्रसन्न होते हैं। और उन्हीं की उन्नति होती है।

विचारणीय तथ्य

स्याति बर्मन
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

1) समय एक सा नहीं रहता यारों सबका समय बदलता है। जो कपड़े अंग्रेजों के गवर्नर पहनकर लोगों को डराते थे आज हमारे बैंड वाले पहनते हैं।

(2) सोच अच्छी होनी चाहिए, क्योंकि नज़र का इलाज तो मुमकिन है, पर नज़रिये का नहीं।

(3) जब तक सत्य घर से बाहर निकल पाता है तब तक झूठ आधी दुनिया घूम चुका होता है।

(4) पीर लिखो तो मीरा जैसी, मिलन लिखो कुछ राधा-सा, दोनों ही हैं कुछ पूरे से, दोनों में ही वो आधा सा।

(5) इन्सान असफल तब नहीं होता जब वह हार जाता है, असफल तब होता है जब वो ये सोच ले कि अब तो जीत नहीं सकता।

(6) हे स्वार्थ तेरा शुक्रिया एक तू ही है जिसने लोगों को आपस में जोड़कर रखा है।

(7) तेरे इस जहां में... मैं किसकी कीमत ज्यादा समझूं ऐ खुदा तू आसमान में मिट्टी से इन्सानों को बनाता है और यहां इन्सान मिट्टी से तुझे।

(8) कितना भी पकड़ लो फिसलता जरुर है। ये वक़्त है साहब बदलता जरुर है।

ज़िम्मेदारी स्वीकार करें

अभिषेक तोमर
बी.ए.-प्रथम वर्ष

1. ज़िम्मेदारियां उस व्यक्ति की तरफ खिंची चली आती हैं, जो उन्हें कंधे पर उठा सकता है।

2. महानता की कीमत ज़िम्मेदारी है।

3. ज़िम्मेदारी के दायरे में सोच विचार कर काम करना भी शामिल है।

4. जो लोग बिना ज़िम्मेदारी स्वीकार किए अपने अधिकारों का प्रयोग करते हैं, वे अक्सर अपने अधिकारों को भी खो बैठते है।

5. जब लोग अतिरिक्त ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करते हैं, तो दरअसल वे अपनी उन्नति का दरवाजा खोल रहे होते हैं।

6. ज़्यादातर लोग कुछ अच्छा होने पर तुरंत श्रेय ले लेते हैं, मगर बहुत कम लोग ऐसे है जो गलती होने पर अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार करते है।

कठिन परिश्रम

गौरव अग्रवाल
प्रयोगशाला सहायक, भौतिक विज्ञान विभाग

मेरे लिए कठिन परिश्रम वह है, जो आपको चुनौती देता है। लेकिन आखिर चुनौती ज़रूरी क्यों है? क्यों न जीवन में उसे ही किया जाए जो सरल और आसान है।

ज़्यादातर लोग यही करते हैं जो आसान है और कठिन परिश्रम से दूर रहते हैं और यही वजह है कि हम लोगों को ठीक उसका उलट करना चाहिए, क्योंकि जहां कठिन चुनौतियां होती हैं वहां पर सफल होने के अवसर ज्यादा होते हैं क्योंकि वहां पर मुकाबला काफी कम होता है।

उदाहरण के लिए अफ्रीका में एक सोने की खदान है जो दो मील गहरी है। इसे बनाने में दस लाख डॉलर का खर्चा आया लेकिन वह अब तक की सबसे ज्यादा मुनाफ़ा देने वाली सोने की खदानों में से एक है। इस खान को खोदने वालों ने एक बहुत मुश्किल चुनौती को कठिन परिश्रम से ही काबू में किया और उन्हें उनकी मेहनत का फल मिला।

इसलिए हमें जीवन में कठिन चुनौतियों से घबराना नहीं चाहिए बल्कि उनका कठिन-परिश्रम के द्वारा डट कर सामना करना चाहिए। कठिन परिश्रम ही हमें जीवन में सफलता के पथ पर अग्रसर करने में सहायक होगा।

स्वास्थ्यवर्धक चोकरयुक्त आटा

बिलाल
बी.एससी.- द्वितीय वर्ष

प्राय: लोग खाना बनाते समय आटे को छानकर चोकर फेंक देते हैं लेकिन उन्हें यह पता नहीं कि चोकर फेंककर उन्होंने आटे के सारे रेशे फेंक दिये हैं। चोकर स्वास्थ्य के लिए बेहद ज़रूरी है। चोकर के सम्बन्ध में शोध कर रहे वैज्ञानिकों ने पाया है कि चोकर रक्त में इम्यूनो-ग्लोब्यूलीन्स की मात्रा बढ़ाता है, जिससे शरीर की रोग प्रतिकारक क्षमता बढ़ती है। इससे रोग प्रतिकारक शक्ति की कमी के कारण उत्पन्न होने चाले कई कष्टदायक रोग दूर रहते हैं। जैसे-

1. चोकर आमाशय के घावों को ठीक करता है।
2. गेहूँ का चोकर कब्ज़ हटाने में रामबाण का काम करता है।
3. मोटापा घटाने तथा मधुमेह निवारण में भी अचूक कार्य करता है।

नेत्रज्योति बढ़ाने के प्रयोग

दीपशिखा शर्मा
बी.एससी.-तृतीय वर्ष

1. पैर के तलवों पर घी की मालिश करके सोयें।
2. रोज़ दिन में दो-तीन बार मुंह में पानी भरकर आंखों पर स्वच्छ, शीतल पानी के छींटे मारें।
3. दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में अच्छी तरह रगड़कर बंद आंखों पर रखें।
4. आंखों में जलन हो या धूप से आए हो तो बर्फ के पानी की पट्टियाँ आंखों के ऊपर रखें।
5. प्रतिदिन 15-20 सेकंड तक किसी स्थिर बिन्दु पर दृष्टि केन्द्रित करें।

हिचकी क्यों आती है?

मनजीत कौर
बी.एससी.- तृतीय वर्ष

जब हम साँस बाहर की ओर छोड़ते हैं तो डायाफ्राम ऊपर की ओर उठता है और हवा फेफड़ों से बाहर निकल जाती है। इसी तरह डायाफ्राम ऊपर नीचे होता रहता है और बिना कोई आवाज़ किए हमारी श्वास लेने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। हमारा डायाफ्राम एक पिस्टन की तरह कार्य करता है। परन्तु कई बार पेट में एसीडिटी के बढ़ने या गैस के कारण डायाफ्राम बाधित हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप यह तीव्रता से सिकुड़ हवा में बाधा पैदा होती है और एक विशेष प्रकार की ध्वनि पैदा होती है। यह ध्वनि और कुछ नहीं बल्कि हिचकी है।

मित्रता

फोज़िया
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

दोस्ती है अनमोल रतन
नहीं तोड़ सकता जिसे कोई धन

सच्ची दोस्ती जिसके पास है,
उसके पास दौलत की भरमार है।

न ही जीत न ही कोई हार है,
दोस्त के दिल में तो बस प्यार ही प्यार है।

भटके जब भी दोस्त संसार के मोहजाल में
खींच लाता है सच्चा दोस्त उसे अच्छाई के प्रकाश में।

छोड़ देता है जग सारा जब मुश्किल भरी राह में
सच्चा दोस्त साथ देता है तब जिन्दगी की राह में।

बने चाहे दुश्मन क्यों न ज़माना सारा
सच्चा दोस्त साथ देता है सदा हमारा

दोस्त के लिए कुर्बान होता है जीवन सारा,
हर मुश्किल में बनता है वो सहारा

सच्ची दोस्ती को वक़्त परखता हर बार है
वक़्त की हर परीक्षा में हँसते

हुए पास करना ही दोस्ती की पहचान है।
दुनिया की किसी शोहरत की न

जिसे दरकार है सच्चा दोस्त
रखने वाला संसार में सबसे धनवान है....

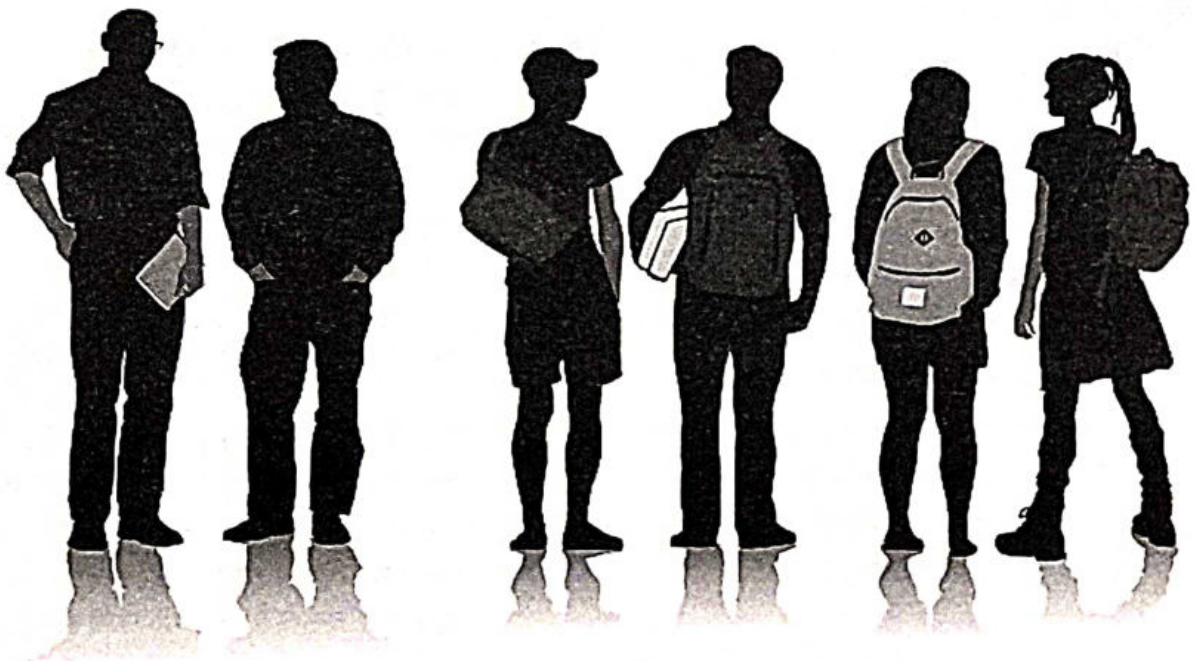

हम तो यूं ही जिये जा रहे थे

चिरंजना गोस्वामी
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

"ज़िन्दगी में कोई दो मिनट मेरे
पास नहीं बैठा और आज सब
मेरे पास बैठे जा रहे थे"

"कोई तोहफ़ा नहीं मिला आज
तक मुझे और आज फूल
ही फूल दिए जा रहे थे"

"तरस गई मैं किसी के हाथ
से दिए एक कपड़े को और
आज नए-नए कपड़े उढ़ाये जा रहे थे"

"दो कदम साथ चलने को न
तैयार था कोई और आज काफिला
बन कर जा रहे थे।"

"आज पता चला कि मौत इतनी
हसीन होती है, कम्बख़्त हम
तो यूं ही जिये जा रहे थे।"

हम जैसे चलते हैं, तुम भी चलो न

रीना गुप्ता
प्रयोगशाला सहायक, गृह विज्ञान विभाग

हम जैसे चलते हैं, तुम भी चलो न।
हम जैसे रहते हैं, तुम भी रहो न।

नदिया यह कहती हैं, मैं सागर के पास जाती हूँ।
सागर के पास जाते-जाते, सागर ही बन जाती हूँ।

हम जैसे करते हैं, तुम भी करो न।
हम जैसे बनते हैं, तुम भी बनो न।

फूल यह कहता है, मैं तो खिलता जाता हूँ।
खिलते जाते-जाते मैं तो खुश्बू फैलाता हूँ।

हम जैसे फैलाते हैं, तुम भी फैलाओ न।
हम जैसे खिलते हैं, तुम भी खिलो न।

हम जैसे रहते हैं, तुम भी रहो न।
हम जैसे चलते हैं, तुम भी चलो न।

बच्चे यह कहते हैं, हम तो स्कूल जाते हैं।
स्कूल जाते-जाते, हम पढ़ना सीख जाते हैं।

हम जैसे पढ़ते हैं, तुम भी पढ़ो न।
हम जैसे करते हैं, तुम भी करो न।

हम जैसे रहते हैं, तुम भी रहो न।
हम जैसे चलते हैं, तुम भी चलो न।

शिक्षक यह कहता है, हम तो स्कूल जाते हैं।
स्कूल जाकर हम तो, बच्चों को पढ़ाते हैं।

हम जैसे पढ़ाते हैं, तुम भी पढ़ाओ न।
हम जैसे करते हैं, तुम भी करो न।

हम जैसे रहते हैं, तुम भी रहो न।
हम जैसे चलते हैं, तुम भी चलो न।

कभी न कभी

शबनम
बी.ए.- तृतीय वर्ष

निराश है ज़िन्दगी उदास है नसीब
फिर भी चल रहा हूँ शायद मंजिल के करीब।
रात में साथियों का साथ छूट गया,
मैं राही राह को भी भूल गया।
था धनवान अब हो गया गरीब,
वही सूना आकाश, वही सूनी धरती।
एक पेड़ हूँ, जिसकी कोई डाल नहीं।
काश सावन को आती दया कभी,
अकेला हूँ छोड़ कर चले गये सभी।
काश होती मेरे पास खुशी थोड़ी ही सही,
सांसे रूकी नहीं है अभी
आशा बंधी कोई है अभी
हिम्मत है मुझमें अभी
मंजिल मिलेगी कभी
कभी न कभी

शिक्षक है भगवान

गुरमीत
बी.एससी-प्रथम वर्ष

मन्दिर सा है कॉलेज हमारा, शिक्षक हैं भगवान।
कर लो पूजा इनकी, प्राप्त करना है यदि ज्ञान।
बड़े-बड़े विद्वान बनें, इनका ही करके ध्यान।
मन में भरकर आदर इनका, अब दूर करें अज्ञान।
वही नरक का भागी है, करे जो इनका अपमान।
बात हमेशा इनकी मानों, करो सदैव इनका सम्मान।
डांट इनकी ऐसी समझो, जैसे आंवले का रसपान।
शिक्षक की अपनी कर सेवा, बन जाओ गुणों की खान।
क्योंकि शिक्षक हैं भगवान, क्योंकि शिक्षक हैं भगवान।
गुरू के चरण सभी पकड़ते हैं, परन्तु आचरण कोई नहीं पकड़ता है।

प्रभु का सच्चा नाम

गुरप्रीत
बी.ए.-प्रथम वर्ष

प्रणाम तेरे चरणों में प्रभु मेरा प्रणाम है।
है तेरा उपकार बख़्शा प्रभु का साचा नाम है।

नाम में वह शक्ति है कर देता है सबको अमर,
नाम के प्रताप दोनों लोक जाते हैं संवर,
जो बसाये दिल में होता जग में वह नेक नाम है।

नाम के अमृत में तो मस्ती निराली है भरी,
है नशा इसका निराला उतरे न जो फिर कभी,
पी जो लेता है इसे हो जाता पूरणकाम है।

मेरा लक्ष्य

आयुषी शर्मा
बी.एससी.-तृतीय वर्ष

दिन रात सोचती हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है?
जहां मैं खड़ी हूँ, वो अक्ष क्या है?
जीवन का किनारा या मझधार कोई,
न बनावट है इसका न आकार कोई।
ये कैसी जगह है, जहां मैं खड़ी हूँ,
जीवन की कैसी मुश्किल में पड़ी हूँ।
जिस ओर सिर्फ मैं हूँ वो पक्ष क्या है?
दिन-रात सोचती हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है?
सितारा मिलेगा या आकाश ही
या मिलेगी मुझे सिर्फ ये ज़मीं,
जिस जगह मैं हूँ वो कक्ष क्या है?
दिन-रात सोचती हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है?

मेरा गांव

दीक्षा
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

बड़ा भोला बड़ा सादा, बड़ा सच्चा है,
तेरे शहर से मेरा गांव अच्छा है।

वहां मैं तेरे पिता के नाम से जाना जाता हूँ,
और यहां मकान शहर से पहचाना जाता है।
वहां फटे कपड़ों में तन को ढका जाता है,

यहां कोठी है, बंगले हैं, और कार
वहां परिवार है और संस्कार

यहां चीखों की आवाज़े दीवार से टकराती हैं।
वहां दूसरों की सिसकियां भी सुन ली जाती हैं।
यहाँ शोर-शराबों में कहीं खो जाती हैं।

मत समझो कम हैं कि हम गांव से आए हैं,
तेरे शहर के बाज़ार मेरे गांव ने ही सजाए हैं।

वहां इज्ज़त में सर सूरज की तरह ढलते हैं,
चल आज हम उसी गांव में चलते हैं।

मेरा कॉलेज महान है

कु. वेबी
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

उत्तम शिक्षा उत्तम दीक्षा उत्तम सारा काम है,
हम सबका प्यारा कॉलेज चमनलाल महाविद्यालय महान है॥

ईश्वर की भक्ति करते कर्मशक्ति से नाता है,
सरस्वती का कल्पवृक्ष है यहां जो मांगे मिल जाता है।

छोटों को भरपूर प्यार और बड़ों को मिलता मान है,
हम सबका प्यारा कॉलेज चमनलाल महाविद्यालय महान है॥

इसमें पढ़ने वाले हरदम आगे बढ़ जाते हैं,
हर कठिनाइयों के पर्वत पर हंसते-हंसते चढ़ जाते हैं।

वसुधा को परिवार समझ कर सबका करना कल्याण है,
हम सबका प्यारा कॉलेज चमनलाल महाविद्यालय महान है॥

सीधा-सादा सच्चा जीवन ऊंचे मगर विचार हैं,
हर कुर्बानी देश की खातिर देने को तैयार हैं।

वतन हमारा गुलशन है, तो यह गुलशन की शान है,
हम सबका प्यारा कॉलेज चमनलाल महाविद्यालय महान है॥

तूफानी लहरों से लड़कर पाना नया किनारा है,
सब क्षेत्रों में सबसे आगे यही हमारा नारा है।

सदा ही कॉलेज का हमको रखना मान है,
हम सबका प्यारा कॉलेज चमनलाल महाविद्यालय महान है॥

कॉलेज... दूजा नहीं

बीना सिंह
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

पढ़ने वालो, पढ़ो कहीं पर, किसी पर कोई ज़ोर नही।
चमनलाल डिग्री कॉलेज जैसा कॉलेज कोई और नहीं॥

इस कॉलेज की टीचर, पीरियड लेने जब आती है।
सारी छात्रायें खड़ी होकर, उनको शीश नवाती हैं॥

छात्राओं का यह व्यवहार देखकर, टीचर भी खुश हो जाती है।
इसीलिए कॉलेज की लड़कियाँ सबसे आदर पाती हैं॥

टीचर के आने पर क्लास में, होता कोई शोर नहीं।
चमनलाल डिग्री कॉलेज जैसा कॉलेज कोई और नहीं॥

इस कॉलेज की सभी लड़कियां, सबका ही सम्मान करें।
हर छात्रा यहाँ की अच्छी, नहीं बुरा व्यवहार करें॥

हर कोई छात्रा यहां की, भाग खेल में लेती है।
जीत-जीत कर दूसरी टीम को, अपना परिचय देती है॥

जैसी होड़ यहां पढ़ने की, नहीं है ऐसी होड़ कहीं।
चमनलाल डिग्री कॉलेज जैसा कॉलेज कोई और नहीं॥

पढ़ने वालों पढ़ो कहीं पर, किसी पर कोई ज़ोर नहीं।
चमनलाल डिग्री कॉलेज जैसा कॉलेज कोई और नहीं॥

हमारा महाविद्यालय

सोनिया चौधरी
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

संस्था हो उन्नत, यही हमारा नारा है।
चमनलाल महाविद्यालय संज्ञा से, हमने इसे पुकारा है।

अवसर मिला यहां पढ़ने का, यह सौभाग्य हमारा है।
जनपद में सबसे उत्तम, शिक्षा-केन्द्र हमारा है।

अपने सीमित ज्ञानकोष से, हमने यही विचारा है।
जनपद में सबसे उत्तम, शिक्षा-केन्द्र हमारा है।

दूर-दूर से छात्र यहां पर, शिक्षा पाने आते हैं।
अपने गुरुओं के आशीष से, जीवन सफल बनाते हैं।

अपना जीवन धन्य हुआ है, मन में यही विचारा है।
अनुशासन, शिक्षा, खेल-कूद में महाविद्यालय हो रहा धनी,
सबका सहयोग ले उन्होंने, संस्था को सुधारा है।

कल्चरल ऐक्टिविटी में सबसे ऊंचे, कॉलेज का नाम हमारा है।
जनपद में सबसे ऊंचा, शिक्षा केन्द्र हमारा है।

'चमनलाल महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं का नारा है-
जनपद में सबसे उत्तम शिक्षा केन्द्र हमारा है।

हिन्दुस्तान का पैग़ाम

जसिका यादव
बी.एससी.- द्वितीय वर्ष

जो एक बार गलती करे,
उसे नादान कहते हैं।
जो दोबारा गलती करे,
उसे अन्जान कहते हैं।
जो तीन बार गलती करे,
उसे बेवकूफ कहते हैं।
जो अपनी गलतियों से गुमराह करे,
उसे अमेरिका कहते हैं।
जो गलतियां देखकर गलतियां करना चाहे,
उसे चीन कहते हैं।
जो कभी गलती न करे
उसे जापान कहते हैं।
जो एक बाद गलती करके सुधारना चाहे,
उसे अफगानिस्तान कहते हैं।
जो गलतियों पर गलतियां करे,
उसे पाकिस्तान कहते हैं।
और जो दूसरों की गलतियों को हमेशा माफ करे,
उसे हिन्दुस्तान कहते हैं।

जय जवान जय किसान

अजय गर्ग
बी.कॉम -द्वितीय वर्ष

आजकल के जमाने में हर कोई नौजवान लड़का या लड़की किसी भी, फिल्मी स्टार के हीरो के फैन हो जाते हैं, उनके फोटो अपने कमरे में लगाते हैं, उनके नाम या फोटो की प्रिन्ट हुई टी.शर्ट पहनते हैं, मगर ये सब गलत है। क्योंकि वे सब तो नकली हीरो हैं, असली हीरो तो वो किसान है जो रातभर जाड़े पाले में हमारा पेट भरने के लिए खेती करता है। हम तो दिसम्बर व जनवरी के माह में गरम कपड़े में अपने घरों में सोते हैं, मगर किसान तो रातभर फसलों को पानी देता है।

ऐसे ही जवान हैं जो हमारी रक्षा करने के लिए सरहद पर तैनात हैं। पता नहीं कौन-सी गोली पर उनका नाम लिखा है। पता नहीं कल का सूर्य दिखेगा भी या नहीं। अपने परिवार से दूर उनको भी तो परिवार अच्छा लगता होगा, मगर वे असली हीरो हैं जो हमारी रक्षा के लिए इसका त्याग करते हैं।

ये है इंसान की हक़ीक़त

मौ. शाबान
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

क्या! खूब लिखा है किसी ने,

"बख्श देता है खुदा उनको जिनकी किस्मत खराब होती है, वो हरगिज़ बख्शे नहीं जाते जिनकी नीयत खराब होती है। न मेरा एक होगा, न तेरा लाख होगा, न तारीफ तेरी होगी, न मज़ाक मेरा होगा, गुरूर न कर शाहे शरीर का मेरा भी खाक़ होगा तेरा भी खाक़ होगा।"

ज़िन्दगी भर ब्रान्डेड-ब्रान्डेड करने वालों, याद रखना कफन का कोई ब्रान्ड नहीं होता, कोई रो कर दिल बहलाता है, तो कोई हंसकर ग़म (दर्द) छिपाता है। क्या करामात है कुदरत की! जिन्दा इंसान पानी में डूब जाता है, और मुर्दा तैर कर दिखाता है। मौत को देखा नहीं पर वो शायद बहुत खूबसूरत होगी, जो भी उससे मिलता है, जीना छोड़ देता है। गज़ब की एकता देखी है लोगों की ज़माने में ज़िन्दों को गिराने में और मुर्दो को उठाने में। ज़िन्दगी में न जाने कौन सी बात आखिरी होगी, न जाने कौन सी रात आखिरी होगी। मिलते जुलते रहो यारों, बातें करते रहो एक दूजे से और न जाने कौन सी मुलाक़ात आखिरी होगी।

किताबों से हक़ीकत की ओर

गौहर अब्बास
बी.ए.- तृतीय वर्ष

मैं समझ नहीं पाता कि मैं गलत हूँ या फिर सही या फिर ये कहिये कि शायद मैं गुमराह हूँ।

कुछ इस तरह से खोया हूँ अपने ही सवालों के जवाबों में, सोचता हूँ कि किताबों से हकीक़त की ओर कब क्यों कैसे मैं इतना दूर आकर खड़ा हो गया हूँ, बेबस हताशा दूर तलक से रूबरू कराने वाली आडम्बरों से सजी इस दुनिया की ओर यूँ बेबस निगाहों से देखता रहता हूँ।

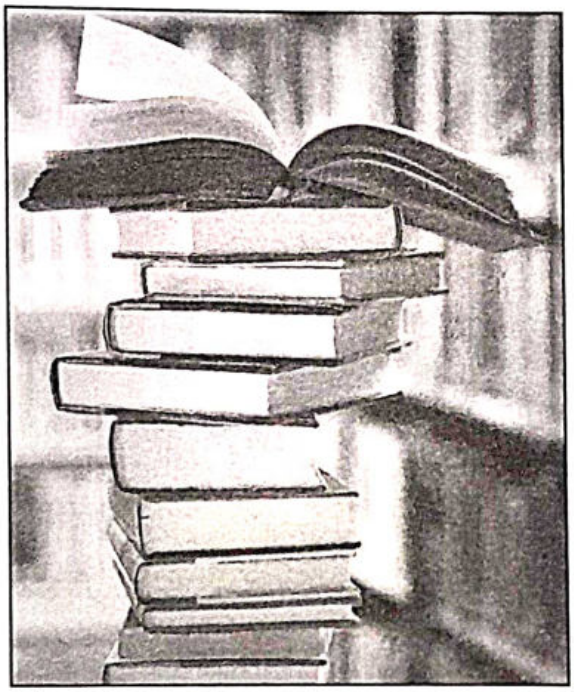

अक्सर बुजुर्गो को बच्चों या दूसरों का हिदायत देते सुना मैंने पर जब बात अपने पर आती है तो उन्ही समझदार लोगों को कहते सुना कि ये बातें किताबों तक ही अच्छी हैं पर असल में हकीक़त कुछ और ही होती है।

ये मत सोचिये कि मैं परेशान हूँ इस दुनिया, से नहीं...नहीं मैं तो बस उलझा हुआ हूँ अपने ही सवालों के जवाबों में। बात सीधी है मगर समझने के लिए याद है मुझे वो दहेज प्रथा और न जाने कितनी सामाजिक बुराइयों पर वो प्रतियोगिताएँ और वो बड़ों का बड़ी-बड़ी बातें करना।

खूब बढ़ा-चढ़ाकर लिखा था मैंने, लेकिन बस केवल प्रतियोगिता जीतने के लिए, कि दहेज बुराई है, दूर हमें करना है।

पर हकीक़त में जब आया तो यकीन मानिये दूल्हे बिकते हैं ये मुझे तब समझ आया जब बड़ी-बड़ी बातें करने वाले बिकने वालों की लाईन में सबसे आगे नज़र आए।

फिर वही सवार क्यों बड़ी-बड़ी और अच्छी बातें किताबों तक की सीमित हैं, क्यों वो हकीकत नहीं बनतीं, गर हकीकत कुछ और ही है तो क्यों पढ़ाई, क्यों समझाई, और क्यों लिखाई जाती है हमें वो बड़ी-बड़ी बातें जिनका हकीकते ज़िन्दगी से ताल्लुक ही नही।

सवाल ये नहीं, किताबों में अच्छी बातें हैं, अच्छी सीख है, सवाल तो यह है कि वो किताबों की बातें हकीकत क्यों नहीं।

ये लिखता हुआ डर रहा हूँ मैं, कि कहीं ये भी सिर्फ किताबों तक ही सीमित न रह जाए।

पर फिर भी उम्मीदों के सहारे कि कोई इसे पढ़कर शायद मुझे ग़लत साबित कर दे, और किताबों की अच्छी बातें हकीकत-ए-ज़िन्दगी में तब्दील हो जाएँ।

मनुष्य जन्म अनमोल रे

शिवानी पाल
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

मनुष्य जन्म अनमोल रे, इसे माटी में न रोल रे,
अभी तो मिला है फिर न मिलेगा,
कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।
सतसंगत में जाया कर गीत प्रभु के गाया कर,
रोज़ सवेरे उठ कर बन्दे, प्रभु का ध्यान लगाया कर,
नहीं लगता कुछ मोल रे, इस माटी में न रोल रे
अभी तो मिला है, फिर न मिलेगा
कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।
तू बुलबुला है पानी का, मत कर मान जवानी का,
नेक कमाई कर ले बन्दे, पता नहीं ज़िन्दगानी का,
मीठा सबसे बोल रे, इस माटी में न रोल रे,
अभी तो मिला है, फिर ना मिलेगा
कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।
मतलब का संसार है, इसका नहीं ऐतबार है,
सम्भल-सम्भल कर चलना रे प्राणी, फूल नहीं अंगारे हैं,
मन की आंखे खोल रे, इस माटी में न रोल रे,
अभी तो मिला है, फिर न मिलेगा
कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।
श्री सत्गुरू श्रीमान् है, ज्ञान का ये भण्डार है,
जो कोई प्रभु की शरण में आए, उसका बेड़ा पार है,
नहीं लगता कुछ मोल रे, इस माटी में न रोल रे,
अभी तो मिला है, फिर न मिलेगा
कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।

मत बाँटो इन्सान को

रोहित कुमार सैनी
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

मन्दिर मस्जिद गिरजाघर ने, बांट दिया इन्सान को।
धरती बांटी सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को॥

अभी राह तो शुरू हुई है, लेकिन मंज़िल दूर है।
उजियारा महलों में बंद है, हर दीपक मजबूर है॥

मिला न सुख का सन्देश, हर घाटी मैदान को।
धरती बांटी सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को॥

अब भी हरी-भरी धरती है, ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो, जग सूना लगता रेगिस्तान है॥

नहीं भूलूंगा किसी भी राह पर, प्यार के निशां को।
धरती बांटी सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को॥

अभी प्यार का जल देना है, हर जलती चट्टान को।
धरती बांटी सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को॥

ज़िन्दगी एक सफर

पारूल
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

कभी-कभी जब हम अपनी ज़िन्दगी से निराश हो जाते हैं लेकिन दुनिया में उसी समय कुछ लोग आपके जैसी ज़िन्दगी जीने का सपना देख रहे होते हैं। जमीन पर खड़ा हुआ बच्चा आकाश में उड़ते हुए हवाई-जहाज को देखकर उड़ने का सपना देख रहा होता है लेकिन उसी हवाई-जहाज का पायलट नीचे खड़े हुए बच्चे को देखकर घर लौटने का सपना देख रहा होता है, यही ज़िन्दगी है। जो तुम्हारे पास है उसका आनन्द लो। अगर धन-दौलत, रुपया-पैसा ही खुशहाल होने का सीक्रेट होता तो अमीर लोग नाचते दिखाई देते, लेकिन सिर्फ गरीब लोग ही ऐसा करते हुए दिखाई देते हैं। अगर पॉवर मिलने से सुरक्षा आ जाती तो नेता-अभिनेता बिना सिक्योरिटी के नज़र आते, लेकिन जो सामान्य जीवन जीते हैं वो हमेशा चैन की नींद सोते हैं। अगर खूबसूरती और प्रसिद्धी मजबूत रिश्ते कायम करती तो सेलेब्रेटी की शादियां सफल होतीं जबकि सबसे ज्यादा तलाक इन्हीं के देखने को मिलते हैं। इसलिए ज़िन्दगी सभी के लिए है, और बहुत खूबसूरत है। इसका भरपूर आनन्द उठाओ क्योंकि ज़िन्दगी दोबारा मिलने का नाम नहीं, जानते हैं, कि स्वर्ग यहीं है। एक ट्रक के पीछे लिखा था-"ज़िन्दगी एक सफर है, आराम से चलते रहो उतार-चढ़ाव तो आते रहेंगे बस गियर बदलते रहो।"

जिंदगी को इतना सीरियस लेने की ज़रूरत नहीं है यहाँ से जिन्दा बचकर कोई नहीं जाएगा। पैसा इन्सान को ऊपर ले जाता है लेकिन इन्सान पैसे को ऊपर नहीं ले जाता। कमाई छोटी या बड़ी कुछ भी हो सकती है पर रोटी का नाप लगभग सबके घर में एक ही होता है। मुसीबत सब पर आती है, कोई बिखर जाता है और कोई निखर जाता है। जलेबी तो आपने देखी ही होगी, लेकिन उससे हमें एक सीख मिलती है-

"खुद कितने भी उलझे रहो मगर दूसरों को हमेशा मिठास दो"

वक़्त नहीं

सोनम सलमानी
बी.ए.-तृतीय वर्ष

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हंसी के लिए वक़्त नहीं
दिन रात दौड़ती दुनिया में
ज़िन्दगी के लिए ही वक़्त नहीं।
माँ की लोरी का अहसास तो है
पर माँ को माँ कहने का वक़्त नहीं
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके
अब उन्हें दफनाने का भी वक़्त नहीं।
सारे नाम मोबाइल में हैं
पर दोस्तों के लिए वक़्त नहीं
गैरों की क्या बात करें
जब अपनों के लिए ही वक़्त नहीं।
आंखों में है नींद बड़ी
पर सोने का वक़्त नहीं
दिल है गमों से भरा हुआ
पर रोने का भी वक़्त नहीं।
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े
कि थकने का भी वक़्त नहीं
पराये अहसानों की क्या कद्र करें
जब अपने सपनों के लिए ही वक़्त नहीं।
तू ही बता ऐ ज़िन्दगी
इस ज़िन्दगी का क्या होगा
कि हर पल मरने वालों को
जीने के लिए भी वक़्त नहीं।

आज की दुनिया में

मोनिका
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

इंसान को खाने को अन्न नहीं पैसा चाहिए,
पीने को पानी नहीं मिनरल वॉटर चाहिए।

पहनने को कपड़ा नहीं फैशन चाहिए,
काम करने के लिए इन्सान नहीं कम्प्यूटर चाहिए।

पढ़ने के लिए स्कूल नहीं ट्यूशन चाहिए,
नौकरी के लिए डिग्री नहीं, रिश्वत चाहिए।

खुशी के लिए खिलौना नहीं, वीडियो गेम चाहिए,
मनोरंजन के लिए दूरदर्शन नहीं, टी.वी. चैनल चाहिए।

संतान भी हर किसी को लड़की नहीं, लड़का चाहिए,
शादी में दुल्हन नहीं, दहेज चाहिए।

घूमने के लिए देश नहीं, विदेश चाहिए,
पेड़ पौधों के लिए जंगल नहीं गमले चाहिए,
मरने के बाद जलने के लिए लकड़ी नहीं बिजली चाहिए।

स्वयं को ऐसा बनाओ

मन्जु रानी
कनिष्ठ सहायक

जहाँ तुम हो, वहाँ तुम्हें
सब प्यार करें
जहाँ से तुम चले जाओ, वहाँ
तुम्हें सब याद करें
जहाँ तुम पहुँचने वाले हो
वहाँ सब तुम्हारा इन्तज़ार करें।
इंसान के परिचय की शुरूआत भले ही
चेहरे से होती होगी, लेकिन उसकी
सम्पूर्ण पहचान तो उसकी वाणी,
विचार एवं कार्यों से ही होती है।

बहुत आसान होता है
कोई उदाहरण पेश करना,
बहुत कठिन होता है।
खुद कोई उदाहरण बनना॥
कामयाब व्यक्ति अपने चेहरे पर दो ही चीज़ें रखते हैं।
'मुस्कुराहट और खामोशी'
मुस्कुराहट समस्याओं को हल करने के लिए
और
खामोशी समस्याओं से दूर रहने के लिए।

खुश रहने के दो उपाय
न अपेक्षा, न उपेक्षा।

अजब भारत के गज़ब किस्से

सलोनी
बी.ए.-तृतीय वर्ष

दुनिया में कई ऐसे स्थान हैं जिनके बारे में घोषित तौर पर यह कहा जाता है कि यह प्रेत बाधित स्थान है लेकिन अभी भी कई स्थान ऐसे हैं जिनके बारे में लोगों को नहीं पता है। भारत में भी ऐसे बहुत सारे स्थान है जो प्रेत बाधित नाम से जाने जाते हैं। यहां लोगों के साथ अजब सी घटनाएं हो जाती हैं। कही जाने पर लोग गायब हो जाते हैं तो कहीं भूत लोगों से मिठाई तो कहीं लिफ्ट मांगते हैं। तो आईये भारत के कुछ प्रेत बाधित स्थानों के सफर पर चलते हैं-

1. 1976 में बनी मुंबई की ग्रैंड पैराडी टॉवर को भूतहा माना जाता है क्योंकि इस टॉवर की आठवीं मंजिल से कई लोगों ने कूद कर जान दी है। इसमें हैरानी की बात तो यह है कि 2009 में एक दम्पत्ति ने इस टॉवर से कूदकर जान दे दी, इसके बाद से सालभर के अन्दर उसी परिवार से सभी सदस्यों ने एक-एक कर जान दी।

2. दिल्ली कैंट के बारे में कहा जाता है कि यहाँ एक 'भूतनी' भटकती है जो रात में यहाँ से गुज़रने वाले मोटरसाइकिल और कार सवारों से लिफ्ट मांगती है। अगर लिफ्ट मांगने पर व्यक्ति नहीं रूकता तो वह व्यक्ति को गिरा देती है। आज तक यह पता नहीं चल पाया कि वह ऐसा क्यों करती है।

3. गुजरात के सूरत में दमास बीच को प्रेतबाधित माना जाता है। यहां पर कभी मृतकों का अन्तिम संस्कार किया जाता था। ऐसी धारणा है कि इस स्थान पर कई प्रेतात्माओं का वास है। लोगों के अनुभव हैं कि जब यहां आसपास कोई नहीं होता है तब भी एहसास होता है कि कई लोग आपस में बात कर रहे हों। यहां से कई लोगों के लापता होने की बात कही जाती है।

भारत में कुछ ऐसे स्थान भी हैं जो वाकई में हैरान करने वाले हैं। इतना ही नहीं कुछ जानकार मानते हैं कि भारत में कई ऐसी इमारतें हैं जो भूत-प्रेत या भटकती आत्माओं के कारण सुर्खियों में रही हैं। ऐसे स्थान हजारों वर्षों से एक भयानक श्राप को झेल रहे हैं।

कर्म ज्योति

मौ.सोबान
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

मुस्कुराते रहो
गुनगुनाते रहो
गीत अपने हृदय का
सुनाते रहो।
चार चंचल चमक की
किरण साथ ले
नव दिशाओं में लौ को
जलाते रहो।
चार दिन की चमक पर न
करके अहं
अपने कर्मों का दीपक
जलाते रहो
मीत बन इस अंधेरे
के दीपक
महा निज चमक को
विधाते रहो
आंधियां तेरी राहों में
आएं बहुत
डर के बैठो न
इनको हराते रहो

विश्वव्यापी जगत में
महाअंध को
कर्म की ज्योति से
जगमगाते रहो
चांदनी चार दिन की
ये जीवन सखा
सूर्य बनकर जियो
जगमगाते रहो।
लोग आंखें उठाकर
न देखें भले
पर जियो जब तलक तुम
हराते रहो।
सूर्य की भांति जीना सखा
चार दिन
कर्मपथ पर सदा
पथ दिखाते रहो।
जन्म और अन्त निर्मित्त
विधि हाथ है।
नित्य की लौ ले जगत
जगमगाते रहो।

हौंसला

दिलबाग सिंह
बी.ए.-तृतीय वर्ष

चिड़िया रूक मत तुझमें जान बाकी है,
मंज़िल दूर हैं, बहुत उड़ान बाकी है,

आज या कल मुट्ठी में होगी दुनिया,
लक्ष्य पर अगर तेरा ध्यान बाकी है।

यूं ही नहीं मिलती रब की मेहरबानी,
एक से बढ़कर एक इम्तेहान बाकी है,

ज़िन्दगी की जंग में है हौंसला ज़रूरी,
जीतने के लिए सारा जहान बाकी है।

शिक्षा का अधिकार

नितिन गिरी
बी.एससी.-तृतीय वर्ष

महान देश की माटी पर शिक्षा के दीप जलाएंगे,
नहीं रहे अज्ञान-अंधेरा, ऐसा कुछ कर जाएंगे।
ज्ञान के दम पर हमने हर वक़्त लोहा मनवाया है,
दर्शन-नैतिकता का विदेशों में डंका बजवाया है।
मुश्किल राहों पर निष्ठा से बढ़ते जाना है,
विवेकानन्द, गांधी के सपनों को भारत बनाना है।
वीर सपूतों ने हमको अमन-चैन की सांस दी,
बलिदानों के दम पर विदेशी सत्ता उखाड़ दी।
अपने देश में अब अपना संविधान है,
तभी तो बच्चों तुम्हारे पास 'शिक्षा का अधिकार' है।

शिक्षा के इस अधिकार को जन-जन तक पहुंचाना है,
नहीं रहे अज्ञान-अंधेरा ऐसा कुछ कर जाना है।
खुशहाल देश का सपना तभी तो साकार होगा,
पढ़ा लिखा जब हर बच्ची-बच्चा होगा।
'ड्रॉप-आउट' की दर को तुरन्त घटाना है,
'शिक्षा के अधिकार' को धरातल पर अब लाना है।
अ,आ,इ,ई,क,ख,ग की मात्रा अब पिरोनी है,
बालिका शिक्षा तो अब हर हाल में होनी है।
नहीं रहेगा अनपढ़ कोई ऐसा कुछ कर जाना है,
'उत्तराखण्ड' को भी यारों 'केरल' हमें बनाना है।

शिक्षा

साक्षी
बी.ए.- प्रथम वर्ष

बहुत ज़रूरी होती है शिक्षा,
सारे अवगुण खोती है शिक्षा।
चाहे जितने पढ़ लें हम,
कभी न होती पूरी शिक्षा।
कर्त्तव्यों का बोध कराती शिक्षा,
अधिकारों का ज्ञान
शिक्षा से ही मिल सकता है,
सर्वोपरि सम्मान।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से बन सकता है,
भारत देश महान॥

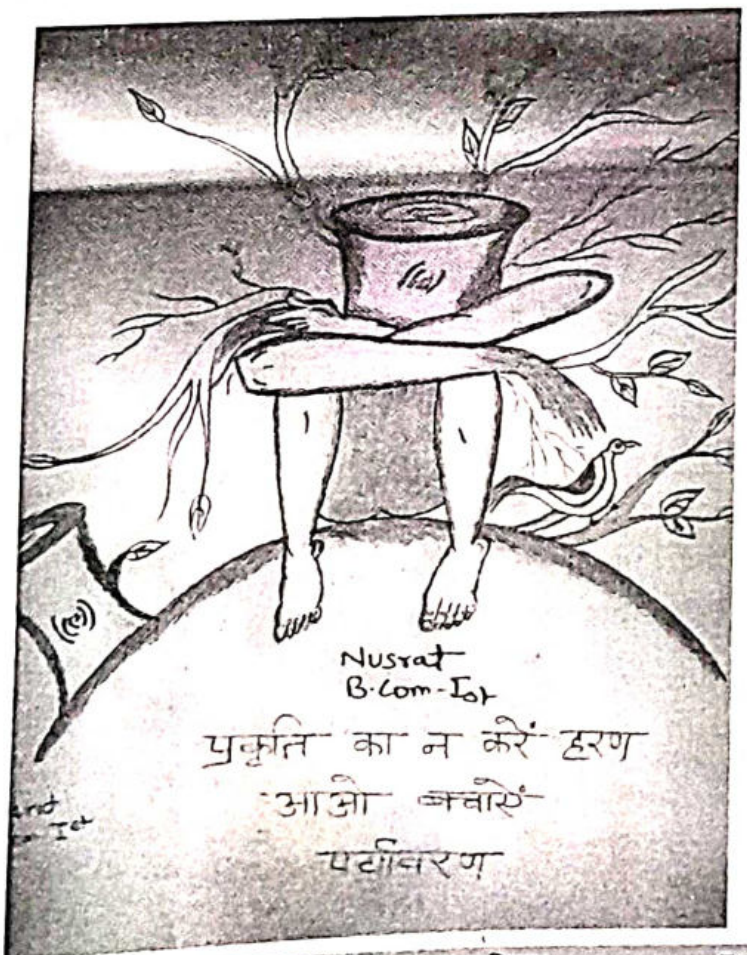

ईर्ष्या और अभिमान छोड़ो स्वाभिमान नहीं

नावेद आसिफ़
प्रयोगशाला सहायक, भूगोल विभा

ईर्ष्यालु व्यक्ति अपने दु:ख से इतना परेशान नहीं होता जितना दूसरे के सुख से परेशान रहता है। ईर्ष्या से वह स्वयं जितना जलता है, उतना दूसरा नहीं। ईर्ष्या हमारी अधिकांश ऊर्जा को बर्बाद कर देती है। ऐसे में हम अपना कार्य ढंग से नहीं कर पाते। प्राय: देखने में आता है कि दूसरों की सफलता हम आसानी से नहीं देख पाते।

लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ईर्ष्या रूपी इस जलन से बचना होगा। न ईर्ष्या करें और न ही ईर्ष्यालु व्यक्ति के समक्ष अपनी योग्यता का प्रदर्शन करें। ऐसे कोई कार्य न करें जिससे हमारा आत्मविश्वास कमज़ोर पड़े।

अहंकार और सफलता कभी एक साथ नहीं रह सकते। इतिहास गवाह है कि अहंकारी चाहे कितना ही बलशाली क्यों न हो, अन्तत: नाकाम हुआ है। जहां अहंकार होता है वहां सुख-शान्ति की बात करना बेईमानी है। अपने व्यक्तित्व की पहचान सदैव दूसरों के द्वारा ही होती है। छात्र है, तो शिक्षक का अस्तित्व है, रोगी है तो चिकित्सक का अस्तित्व है। जिस प्रकार फल से लदा वृक्ष झुक जाता है, उसी प्रकार महत्त्वपूर्ण व सफल व्यक्तियों को विनम्र हो जाना चाहिए।

जब कोई बड़ी जीत हमारे हिस्से में आती है तो हम अक्सर आक्रामक और घमंडी होने लगते हैं। यहीं से सफलता की उल्टी गिनती शुरू हो जाती है। अत: कामयाब व्यक्ति बनने के लिए सदैव 'मैं' को छोड़ना होगा।

घमण्डी के लिए कहीं कोई ईश्वर नहीं,
ईर्ष्यालु का कोई पड़ोसी नहीं,
और क्रोधी का कोई मित्र नहीं!!

तृष्णा

मौ. शाहबाज
बी.ए.-प्रथम वर्ष

तृष्णा इक ऐसी डायन है,
कभी पेट न भरता है जिसका।
इसके वश जो भी हो जाता,
दु:खी और अशान्त सदा रहता।।

दस हों तो सौ की चाह उसे,
फिर चाह कि अब तो हज़ार मिले।
पर तृप्त न होता मानुष वो,
धन का चाहे अंबार मिले।।

यदि अरब खरब भी मिल जायें,
तो भी न आये करार उसे।
सदा और-और करता रहता,
धन और सदा दरकार उसे।।

होता वशीभूत जो तृष्णा के,
खो देता अपनी बुद्धि वो।
इसलिये ही सन्त चेताते सदा,
है मानव तृष्णा को छोड़ो।।

पागलों की तलाश

नूतन
बी.एससी.-तृतीय वर्ष

बड़ा बनना है अगर जीवन में, तो छोटे बन जाओ,
मग्न हो इतना लक्ष्य में तुम पागल कहलाओ।
पागल कहेंगे जो आज मत करना उनकी परवाह,
जल्दी ही करने लगेंगे वो तुम्हारी वाह-वाह।
भरा पड़ा है इतिहास ज़रा उठाकर तो देखो,
पागलों वाले चैप्टर ज़रा पढ़कर तो देखो।
जब-जब भी इस दुनिया में कोई पागल कहलाया,
हमेशा ही वह कुछ-न-कुछ नया लेकर आया।
एडिसन को स्कूल में, गुरु जी कहते थे पागल,
पूरी दुनिया को दे गया वह रोशनी का आँचल।
खोज की उसने बल्ब की किया नई रोशनी का आगाज़,
करते हैं आज सभी उस पागल पर नाज़।
पागल कहते थे अनेकों जब भीमराव जाते थे स्कूल,
लज्जित होकर भी पढ़ते रहे, दिमाग रखा अपना कूल।
कोई दुत्कारता, कोई मारता, कोई बार-बार कहता अछूत,
हद तो जब होती थी जब गुरूजी भी करते छुआछूत।
तब किसने सोचा था कि ऐसा दिन भी आएगा,
भारत का संविधान निर्माता यही अछूत बन जाएगा।

एक फूल की व्यथा

नेहा राठी
बी.ए.-तृतीय वर्ष

एक दिन मन्दिर के पास गुज़रते हुए देखे
बहुत हैं फूल खिलकर महकते हुए
सोचा क्यों न भगवान के दर्शन किए जाएं
फूल भगवान को अर्पित कर कहा मैंने।
हे ईश्वर मेरा ध्यान रखना
बनाना मेरे बिगड़े काम
तभी एक फूल ने सिसकते हुए कहा
कहां गई पूजा तुम्हारी उजाड़ के
मेरी दुनिया सारी तुम क्या समझती हो,
पूजा सिर्फ तुमने ही की है
मैं एक तपस्वी हूँ, और तपस्या मैंने भी की है
कांटों के बीच मुस्कुराता हूँ, मैं और तुमने तोड़
लिया मुझे भगवान को रिझाने के लिए।
थोड़ी देर में सूखकर मर जाऊंगा
या तुम जैसे भक्तों के पैरों से कुचला जाऊंगा।
बता इस चमन को कौन महकाएगा
कुछ पल बाद मेरा तो जीवन खत्म हो जाएगा।

ज़िन्दगी की अजब पहेली

तौहिद
बी.ए.-तृतीय वर्ष

एक अजीब सी पहेली है ज़िन्दगी,
सबसे साथ होते हुए भी अकेली है ज़िन्दगी।
कभी तो एक प्यारा सा अहसास है ज़िन्दगी,
तो कभी कांटों से भरा रास्ता है ज़िन्दगी।
कभी फूलों का भरा गुलदस्ता है ज़िन्दगी,
तो कभी कांटों से भरा रास्ता है ज़िन्दगी।
कभी फूल जैसी मासूम हो जाती है ज़िन्दगी,
कभी गुनाहों सी बन जाती है ज़िन्दगी।
कोई तो बता दे क्या चीज है ज़िन्दगी,
सुना है खुदा की मेहरबानी है ज़िन्दगी।
ज़िन्दगी को छोड़कर एक दिन जाना पड़ेगा,
चन्द रोज की मेहमान होती है ज़िन्दगी।
ज़िन्दगी को चाहो तुम कितना प्यार कर लो,
लेकिन बेवफा होती है ज़िन्दगी।

अंग्रेजी भाषा का विरोध सही या ग़लत?

शीतल सैनी
बी.लिब.आई.एस.सी.

मैं शायद पहली बिल्कुल भी नहीं हूँ जो अंग्रेजी पर होने वाले विवाद पर चर्चा कर रही हूँ। ऐसे कई नेता भी हैं जिन्होंने अंग्रेजी भाषा का विरोध किया। ऐसा विरोध करने वाले नेताओं की कमी बिल्कुल भी नहीं है।

आज अगर अंग्रेजी नहीं होती तो आप इंजीनियर, डॉक्टर और आई.टी. विशेषज्ञ नहीं मिल पाते। भारत की पहचान इन्हीं सब क्षेत्रों में बनी है। आज भारत का हर दूसरा नागरिक इंजीनियर बनना चाहता है, उनके परिवार भी इस बात पर सहमति जताते हैं। इंजीनियर बनने वाले इतने छात्र हैं कि अब इन्जीनियर्स को रोज़गार तक मिलना मुश्किल हो रहा है क्योंकि अब समाज का हर तीसरा नागरिक इन्जीनियर है।

मेरी इस मामले में सोच थोड़ी अलग है। मैं अंग्रेजी की विरोधी नहीं हूँ या मैं नहीं कहती कि अंग्रेजी का प्रयोग न करें पर मैं बस इस बात का आग्रह करती हूँ कि ज्यादा से ज्यादा लोग हिन्दी को अपनाएं।

आज देश भर के गांव-कस्बों में अंग्रेजी सीखने की चाह है। जिसका कारण जाति और समुदाय से निकलकर समाज में ऊंचा सोचने की इच्छा है। इसीलिए मध्यमवर्गीय लोगों में भी अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों के बजाय निजी अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ाने की भीड़ मची है। सिर्फ इसीलिए ताकि वो जाति, समुदाय की सोच से ऊपर उठकर आगे बढ़ पाएंगे।

इतने सारे लोग अंग्रेज बनने के लिए अंग्रेजी नहीं सीख रहे। उनको लगता है कि अंग्रेजी सीखकर ही आज की दुनिया में आगे बढ़ा जा सकता है। सिर्फ भारत में ही नहीं चीन, यूरोप, अफ्रीका में भी अंग्रेजी का प्रचलन बढ़ा है। लोगों ने अंग्रेजी भाषा को लेकर अपनी दिलचस्पी ज़ाहिर की है। इसके बाद भी बात चाहे कुछ भी हो पर हमारे भारत में आज भी 70 प्रतिशत भारतियों को सुबह उठकर 'नमस्ते' सुनने की आदत है न कि 'गुड मॉर्निंग'।

स्काउट एण्ड गाइड्स मेरा प्रथम अनुभव

मुसर्रत
बी.ए.-तृतीय वष

संसार में जीवन व्यतीत करने के लिए हर मनुष्य के पास एक अच्छा अनुभव होना चाहिए। जैसे हम अपना जीवन दूसरे की सहायता में व्यतीत कर सकें। ये अनुभव मैं आपके समक्ष इसीलिए रख रही हूँ क्योंकि ये मुझे चमनलाल महाविद्यालय के स्काउट एण्ड गाइड्स कैम्प से मिला।

चमनलाल महाविद्यालय के स्काउट गाइड कैम्प की ट्रेनिंग से मुझे ज्ञात हुआ कि दूसरों की सहायता करना संसार की सबसे बड़ी मानवता या पूजा है। और इसका मेरे पास एक प्रमाण है कि जब मनुष्य दूसरों की सहायता बिना किसी मोह के करें तो मन की प्रशंसा अविश्वसनीय हो जाती है। स्काउट गाइड से मुझे कुछ ऐसे अनुभव प्राप्त हुए जिससे कि मैं कठिनाइयों के समय में उन समस्याओं का समाधान कर सकती हूँ।

मैंने सीखा जब मनुष्य आपदा या भूकम्प के कारण कठिनाई में फंस जाता है तो उन्हें उस मुश्किल से किस प्रकार निकाला जा सकता है। मैं चाहती हूँ कि मैं ही नहीं हर विद्यार्थी इस स्काउट गाइड की ट्रेनिंग लेकर भविष्य में विपदाएं आने पर उन कठिनाइयों का निवारण कर सके। स्काउट एण्ड गाइड़ के कैम्प में मेरे अनुभव ने मेरे जीवन के मायनों को ही बदल दिया। इस कैम्प के दौरान हमें नर सेवा और नर सेवा से ही ईश्वर सेवा प्राप्त होती है यह सिखाया। इसके साथ ही ईश्वर द्वारा दी गई सुन्दर प्रकृति को कैसे सुरक्षित करके रखा जा सकता है जिसकी हालत आज बहुत दयनीय व चिंताजनक हो गई है।

अर्थात् हमें प्रकृति प्रेमी बना दिया गया है। इस कैम्प को करने के बाद मैं हर वक्त मानव सेवा व जीव सेवा के लिए तैयार रहती हूँ।

इसलिए मैं चमनलाल महाविद्यालय तथा सभी शिक्षकगणों को कोटि-कोटि धन्यवाद देना चाहती हूँ।

सकारात्मक विचार

जलाल
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

दूध को दु:खी करो तो दही बनती है। दही को सताने से मक्खन बनता है। मक्खन को सताने से घी बनता है। दूध से महंगी दही है, दही से महंगा मक्खन है और मक्खन से महंगा घी है। किन्तु इन चारों का रंग एक ही है-सफेद। इसका अर्थ है कि बार-बार दु:ख और संकट आने पर भी जो इंसान अपना रंग नहीं बदलता, समाज में उसी का मूल्य बढ़ता है।

दूध उपयोगी है किन्तु एक ही दिन के लिए, फिर वह खराब हो जाता है। दूध में एक बूंद छाछ डालने से वह दही बन जाता है जो केवल और दो दिन टिकता है। दही के मथने से मक्खन तैयार होता है और यह तीन दिन टिकता है। मक्खन को उबालकर घी बनता है, घी कभी खराब नहीं होता। इसी तरह आपका मन भी अथाह शक्तियों से भरा है। उसमें कुछ सकारात्मक विचार डालो। अपने आपको मथो, अपने जीवन को और तपाओ। तब देखना आप कभी हार नहीं मानने वाले सदाबहार व्यक्ति बन जाओगे।

सकारात्मक बदलाव

भुवन चन्द्र ब्रजवासी
प्रयोगशाला सहायक, जन्तु विज्ञान

ज़िन्दगी में बहुत सारे अवसर ऐसे आते हैं जब हम बुरे हालात का सामना कर रहे होते हैं, और सोचते हैं कि क्या किया जा सकता है क्योंकि इतना जल्दी तो सब कुछ बदलना सम्भव नहीं है, और क्या पता मेरा ये छोटा सा बदलाव कुछ क्रान्ति लेकर आयेगा या नहीं? लेकिन मैं आपको बता दूं, हर चीज़ या बदलाव की शुरूआत बहुत ही बेसिक ढंग से होती है। कई बार तो सफलता हमसे बस थोड़े ही कदम दूर होती है, कि हम हार मान लेते हैं। जबकि अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखकर किया जाने वाला कोई भी बदलाव छोटा नहीं होता और वो हमारी ज़िन्दगी में एक नींव का पत्थर भी साबित हो सकता है।

यदि हम किसी जरूरतमंद की मदद या कोई भी अच्छा कार्य कर रहे हैं तो मन में प्रश्न उठता है कि इस तरह की मदद की जरूरत तो दुनिया में और भी न जाने कितनों को है, और अकेले के बदलने से तो कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा।

इस प्रश्न का बड़ा ही संक्षिप्त उत्तर यह है कि भले ही मेरे इस कर्म से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा लेकिन हम किसी एक ही सहायता या किसी की मदद कर उस एक ज़िन्दगी में तो बदलाव ला पाये, तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरूआत करें।

शिक्षक वर्ग

बैठे हुये (बाँये से दाँये)– डॉ. मो. इरफान, डॉ. प्रभात कुमार सिंह, डॉ. देवपाल, श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य), डॉ. दीपा अग्रवाल, डॉ. तरूण कुमार गुप्ता, डॉ. किरन शर्मा

खड़े हुये(बाँये से दाँये)– श्री विमलकान्त तिवारी, डॉ. मीरा चौरसिया, डॉ. अनीता रानी, कल्पना पँवार, डॉ. विधि त्यागी, डॉ. अपर्णा शर्मा, डॉ. ऋचा चौहान, श्रीमति शबनम

द्वितीय पंक्ति (बाँये से दाँये)– श्री विपुल सिंह, श्री विनीत कुमार, श्री राजेश कुमार, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, श्री कुलदीप कुमार, डॉ. नीशू कुमार, श्री आशुतोष शर्मा, श्री नवीन कुमार, डॉ. नवीन कुमार, डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

प्रयोगशाला सहायक वर्ग

बैठे हुये (बाँये से दाँये)– श्री रामकुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य)
खडे हुये (बाँये से दाँये) प्रथम पंक्ति – श्री अमित बहादुर, कु. सोनिया, कु. प्रणीता भण्डारी, कु. दीपाक्षी शर्मा, श्रीमति प्रियंका शर्मा, श्रीमति रीना गुप्ता
(बाँये से दाँये) द्वितीय पंक्ति– श्री नवेद आसिफ, श्री भुवनचन्द ब्रजवासी, श्री अभिषेक, श्री जितेश बगडवाल, श्री गौरव अग्रवाल

लिपिक वर्ग

बैठे हुये (बाँये से दाँये)– श्रीमति मन्जू रानी, श्री दिनेश कुमार (कार्यालय अधीक्षक), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य), श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति), श्री अतुल हरित (कोषाध्यक्ष), श्री निशिथ कुमार

खडे हुये (बाँये से दाँये)– श्री विपिन कुमार, श्री विशाल कुमार, श्री दीपक चौधरी, श्री दिनेश कौशिक, श्री सुमित कौशिक, श्री रविन्द्र सिंह, श्री सचिन शर्मा

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

बैठे हुये (बाँये से दाँये)– श्री दिनेश कुमार (कार्यालय अधीक्षक), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य), श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष प्रबंध समिति), श्री अतुल हरित (कोषाध्यक्ष)
खडे हुये (बाँये से दाँये) प्रथम पंक्ति– श्री सत्तार, श्री दुष्यन्त शर्मा, श्री अंकुर, श्री फारूख, श्री प्रदीप कुमार, श्रीमति अर्चना
(बाँये से दाँये) द्वितीय पंक्ति– श्री अनुज, श्री अनुराग पाल, श्री अर्जुन, श्री विशाल, श्री अमित

अंग्रेजी अनुभाग

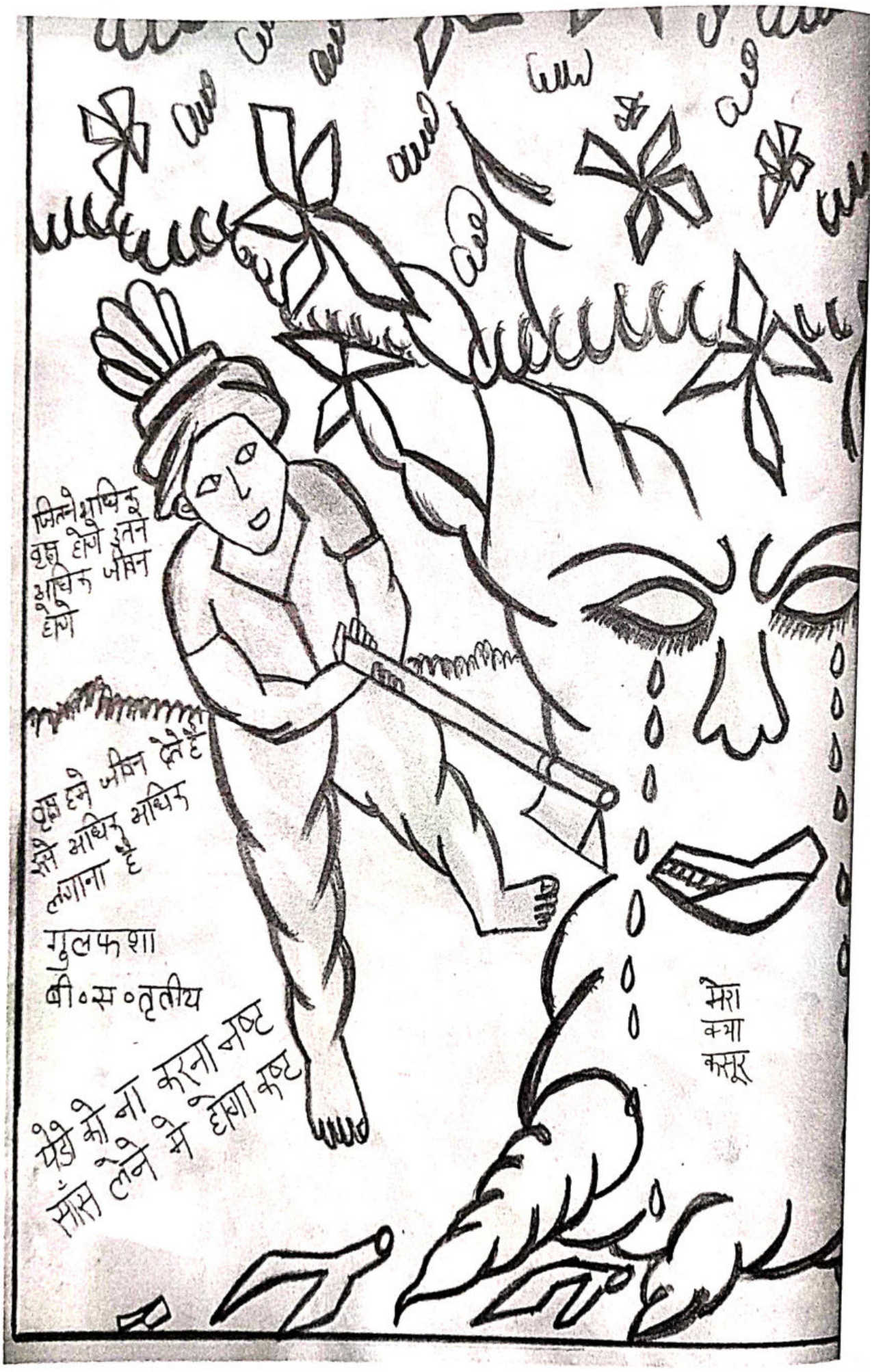
जितने अधिक वृक्ष होंगे उतने अधिक जीव होंगे
वृक्ष हमें जीवन देते हैं
इसे अधिक अधिक लगाना है
गुलफशा
बी०स०तृतीय
पेड़ों को ना करना नष्ट
साँस लेने में होगा कष्ट
मेरा क्या कसूर

Be an Optimist

Dr. Deepa Agarwal
Assistant Professor
Department of English

This is the golden rule to maintain a positive attitude. It is easy to hear but often not easy to implement. Our life is made of habits and even Buddha once said: "We are what we think." In today's life there is lots of tensions and worries all around. When there is no work in accordance with our wishes and choice. We take it is our defeat. But actually it is not a failure. Failure as a new start. Failure is not the end, in fact it is often the beginning of something great. It is the opportunity to learn from our mistakes. We all make mistakes and learn from them too. It's very important to constantly choose positive way of thinking and take an optimistic attitude. Every task of the world cannot be in accordance to our wishes and expectations. Norman who is the father of positive thinking urges that "If you are thinking thoughts of defeat, rid yourself of such thoughts for as you think defeat you tend to get it." So it's clear that positive attitude of mind can literally change our life. The mind is everything so a negative frame of mind will ultimately destroy our life. but a positive frame of mind can help us in many ways and in many situations. It can keep us calm in troubles, not to lose hope, and to continue whatever we are doing, despite difficulties or failure. Always believe in ourselves. Being an optimist not only mean to see the brighter side of life. To be an optimist means to view the surrounding wherein we maximize our strengths and achievements and minimize our weakness and apprehension

Keep your thought positive
Because your thought become your words.
Keep your words positive
Because your words become your behavior.
Keep your behavior positive
Because your behavior become your habits.
Keep your habits positive
Because your habits become your values.
Keep your values positive
Because your values become your destiny.

Mahatma Gandhi

The subconscious mind works continually for the common good. The subjective self within our works continuously for the general good, reflecting an innate principle of harmony behind all things. Our subconscious mind has its own will, and it is very real something in itself. It acts night and day whether we act upon it or not. It is the builder of our body, but we cannot see, hear, or feel it building, as all this is a silent process. Our subconscious has a life of its own which is always moving towards harmony, health and peace. This is the divine norm within it seeking expression through us at all times.

If our thoughts are in harmony with the creative principle of our subconscious mind, we are in tune with the innate principle of harmony. If we entertain thoughts which are not in accordance with the principle of harmony, these thoughts cling to us, harass us, worry us, and finally bring about disease, and if persisted in, possibly death.

In the healing of disease, we must increase the inflow and distribution of the vital forces our subconscious mind throughout our system. This can be done by eliminating thoughts of fear, worry anxiety, jealously, hatred and every other destructive thought which tends to tear down and destroy our nerves and glands-body tissue which control the elimination of all waste material.

Thoughts of jealously, fear, worry and anxiety tear down and destroy our nerves and glands bringing about mental and physical disease of all kinds.

What we affirm consciously and feel as true will be made manifest in our mind, body and affairs. Affirm the good and enter into the joy of living.

So stop saying: I can't instead say, "I'll try my hardest" or "I'll do my best."

Every morning speak five lines of APJ Abdul Kalam

I am the best.
I can do it.
God is always with me.
I am a winner.
Today is my day.

Because if our heart loses in any situation, our loss is fix. But if we are determined to win by heart then our triumph is fix.

Mathematics in Vedas

Dr. Tarun Kumar Gupta
Assistant Professor
Department of Mathematics

Vedic Mathematics is the name given to the ancient system of Mathematics, which was rediscovered from the Vedas between 1911 and 1918 by Sri Bharati Krishna Tirthaji (1884-1960). At the beginning of the twentieth century,when there was a great interest in the Sanskrit Texts in Europe, it seems that some Scholars ridiculed certain texts which were titled 'Ganita Sutras' which means mathematics. Sri Bharati Krsna Tirthaji, who was himself a scholar of Sanskrit, Mathematics, History and Philosophy, studies these texts and after lengthy and careful investigation was able to reconstruct the mathematics of the Vedas.

Sri Bharati Krsna wrote 16 volumes expounding the Vedic system but these were unaccountably lost and when the loss was confirmed in his final years he wrote a single book: Vedia Mathematics, currently available. It was published in 1965, five years after his expiry.

The simplicity of Vedic Mathematics means that calculations can be carried out mentally. There are many advantages in using a flexible mental system.

Interest in the Vedic system is growing in education where mathematics teachers are looking for something better and finding the Vedic system is the answer. Research is being carried out in many areas including the effects of learning Vedic Maths on children, developing new, powerful but easy applications of the Vedic Sutras in Geometry, Calculas, Computing etc.

My Soul

Tamanna
B.A.-I[st] year

O Spiritual Sun! Everyday my life,
Thou brighten,
Thy heavenly light my soul,
Thou enlighten.
Bestoweth thou sweetest joy,
One ever knoweth.
Thou, the cosmic font
Whence all beings Floweth.
Thou, the breath of my life,
I pray to Thee,
Bestow me Thou strength
To always obey Thee.
Make me worthy, O Lord!
Of Thy Infinite Grace,
Steadfast may I remain
And all types of ego efface.

Meditation

Sana
B.A.-I[st] year

Meditation is an essential spiritual discipline of Advait mat. It paves the way for fruition of all Sadhna, as it is in meditation that one scales Spiritual heights and reaches the Divine Destination, for which, one yearns. It is the key to union of Atman with Parmatman.

Mahatma Buddha meditated for years to reach the Arena of Truth. The preach, "Search with sincerity and preserve in your quest. Success will surely smile upon you sooner or later, commensurate with your determined pursuit." Swami Rama Krishna advised; "The secret is that Union with the Lord can be attained only when mind is equanimous and equi-poised. This can be achieved by meditation alone, in which state, by constant practice, the mind does become quiet, controlled and serene."

Voice of God

Shivani Kapoor
B.A.-I[st] year

O Lord, it is Thy Grace
To explain all the meditation ways.
But in it, rests not my mind unstable,
To control it, I find myself incapable.
The mind is impetuous and obstinate
Very difficult for one to concentrate.
O Lord like the wind turbulent
Tis uncontrolled and very potent.
Undoubtedly this restless mind
Is very difficult to restrain and bind
But by constant practice and renunciation,
It can be subdued to perfection.

Sparks of Wisdom

Afroz Janha
B.A.-I[st] year

1. You can realize the Eternal only through purity, devotion and meditation.
2. Introspect within and dive deep into the heart. There is a font of Eternal Bliss awaiting you.
3. The world is a vast school of experience, which you can pick up with humility, patience, forbearance and freedom.
4. Meditation dispels, ignorance, breaks the shackles of illusion and leads to the front of wisdom.
5. Be a little child, innocent and alluring. You will soon envision your beloved, the Lord.

Indian Historiography and Ambedkar: Reading History from Dalit Perspective.

Dr. Suryakant Sharma
Assistant Professor
Department of History

Dalit historigraphy throws a challenges to colonial, nationalist, marxist and right wing and even to the so called historians of Subaltern studies. In this context, Ambedkar's method of constructing the history from dalit perspective is path breaking, and provides insights for contemporary historians of all shades.

Ambedkar came to forefront in Indian academics from the decade of nineties with the intensified struggles of Dalits. The struggles of the ordinary people forced the centers of power and knowledge to consider the importance of Ambedkar and his ideas in social reconstruction of the nation. With Ambedkar as the source of aspiration, Dalits are struggling to write their own history by interrogating the dominant Brahiminical traditions. The relevance of Ambedkar has to be read with the fifty years developments of post Ambedkar of post independent India. His approach to Indian society and its history are crucial in understanding contemporary India and the struggles of the oppressed. The Article will focus on the importance of historical method of Ambedkar in relation to the theories of contemporary historiography of India. Ambedkar's notion of history is identified with moral community imbibed with the principles of equality, liberty and fraternity. His historical method borrows tools from marxism in understanding history.

Rather than mechanically applying marxism, he had creatively used it in keeping the specific context of Indian society. He approached Indian society from the point of religion and finds the religion as source for the different ideological position. Buddhism is considered as revolutionary and Hinduism as counter revolutionary. Rationality is the guiding principle in evaluating the principles and practices of religion.

To construct the Indian history in proper, he avail all convincing ideas of his times, from liberal to marxist. This may go in tune of pragmatism. The pragmatism of Ambedkar differs from the western societies. The pragmatic method of Ambedkar came out of his social responsibility and in presenting the history from the victim's point of view. Dalit historiography establishes its own method by challenging the colonial, nationalist, marxists and subaltern approaches of India historiography.

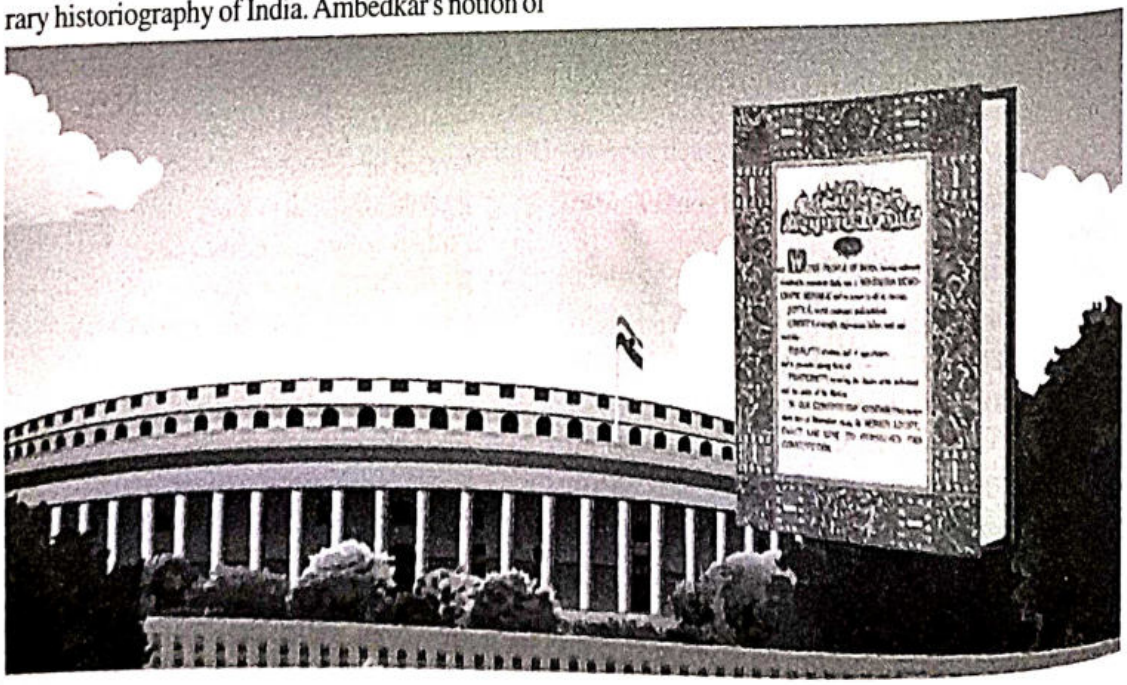

A Study on Issues and Challenges of Women Empowerment in India

Dr. Aprana Sharma
Assistant Professor
Department of English

Here, we analyze the status of Women Empowerment in India and highlights the issues and challenges of Women Empowerment. Today the empowerment of women has become one of the most important concerns of 21st century. But practically women empowerment is still an illusion of reality. We observe in our day to day life how women become victimized by various social evils. Women Empowerment is the vital instrument to expand women's ability to have resources and to make strategic life choices. Empowerment of women is essentially the process of upliftment of economic, social and political status of women the traditionally underprivileged ones, in the society. It is the process of guarding them against all forms of violence. The study is based on purely from secondary sources. The study reveals that women of India are relatively disempowered and they enjoy somewhat lower status than that of men in spite of many efforts undertaken by Government. It is found that acceptance of unequal gender norms by women are still prevailing in the society.

Women empowerment refers to increasing the spiritual, political, educational, gender or economic strength of individuals and communities of women. Women's Empowerment in India is heavily dependent on many different variables that include geographical location as in urban/ rural educational status. Policies on women's empowerment exist at the national, state and local (Panchayat) levels in many sectors, including health, education, economic opportunities, gender based violence and political participation. However, there are significant gap between policy advancements and actual practice at the community level.

Women empowerment involves the building up of a society, a political environment, wherein women can breathe without the fear of oppression, exploitation, apprehension, discrimination and the general feeling of persecution which goes with being a woman in a traditionally male dominated structure. As far as we see their social status that is concerned, they are not treated as equal as men in all walks of life. But gender discriminations and disabilities are found in India even today. The paradoxical situation has such that she was sometimes treated as Goddess and at other times merely as slave.

The Role of a Teacher

Priyanka
B.Sc. - I[st] year

Education is like a train
The teacher is like a driver
Syllabus is like a journey
The student is like a traveller.

As a driver takes pain to handle his vehicle and makes it reach towards its destination. Similarly a teacher makes the syllabus interesting. So what is the student may have attention. The teacher is not only a guide, gardener and a charioteer but also a guard ceaselessly and tirelessly. Always drive for student upward.

In some respect teacher is a God, so I respect my teacher like a God.

Inspirational Facts

Shabeen
B.A.-I[st] year

1. Time is the herald of truth.
by- (Cicero)
2. I wasted time and now doth time waste me.
by- (Shakespeare)
3. My books are friends,that never fail me.
by- (Carlyle)
4. A good book is the precious life-blood of a master spirit.
by- (Milton)
5. To choose time is to save time.
by- (Bacon)
6. Do not work with haste but do not rest.
by- (Goethe)
7. I trust in God and in good books.
by- (Compbell)

Try Try Again

Kartik
B.A.- I[st] year

Tis a lesson you should need,
If at first you don't succeed,
Try, try again;

Then your courage should appear,
For if you will persevere,
You will conquer, never fear
Try, try again;

Once or twice, though you should fail,
If you would at last prevail,
Try, try again;

If we strive', tis no disgrace
Though we do not win the race;
What should you do in the case?
Try, try again;

If you find your task is hard,
Time will bring you your reward,
Try, try again;

All that other folks can do,
why, with patience, should not you?
Only keep this rule in view;
Try, try again.

Co-Education Matters

Praneta Bhandari
Lab Assistant

In choosing a school or a college, there's often confusion about which environment offers the best for each child. There are compelling new arguments for co-education. Following are the reasons why "Co-Education Matters":-

CONFIDENCE- According to a research in Canada students attending a Co-ed college/school over there that feel more confident expressing their views in the presence of opposite-sex peers.

RESPECT- Co-ed college students are more likely to agree that their peers respect members of the opposite gender than students of single-gender colleges.

MAKING FRIENDS- Students at Co-ed colleges indicate that they make friends easily with members of their own sex (80%) and members of the opposite sex (72%). For these students there's a stark contrast with their peers attending independent single-gender colleges, of whom only 58% report making friends easily with students of the other gender.

'BEST OF BOTH WORLDS' OPPORTUNITIES- Students at Co-ed colleges agree that there are opportunities to participate in activities with opposite gender peers. Conversely only 32% of students at single gender colleges report occasions to participate in activities with members of the opposite gender.

ABILITIES IN MATHEMATICS AND SCIENCE-Girl's perception of their abilities in maths and science are not affected by the gender composition of their schools. Girls attending colleges (both co-ed and single gender) agree with the statements, "I get good marks in Science" and "Maths is one of my best subjects." Their perceptions are nearly identical on these points.

'Save Girl '

Yusra
B.Sc. - I[st] year

I sleep, I eat, I kick and I play
I hear your sweet voice throughout the day
Immense joy and no sorrow to hide
Mom, how is the world outside?

I can sense your love for me
I am eagerly waiting to come out and see
What is there in this worldly ride
Mom, how is the world outside?

I spend my time hearing you sing
Songs of happiness, songs of spring
I sensed your hurt last night when you cried
Mom, how is the world outside?

Your hurt and vibrations make me nervous
Your cry and emotions make me anxious
I whispered, I kicked but you never replied
Mom, how is the world outside?

Shh, they want a boy and not a girl
Boy is treated as diamond and pearl
I feel sorry, your life is short inside
Sweetheart, the world is sick and unsafe outside!

Internet : Pros and Cons

Deepakshi Sharma
Lab Assistant

Some people think that the Internet is the most necessary thing which helps gaining education but there are also those who blame it for making people addicted. In this article, I am going to write about pros and cons of the Internet.

One of the advantages of using Internet is that we can find every information we want to. The thing we are searching will be for sure found in one of the millions of pages. If we have internet at home, we don't have to go anywhere. In this way, we are sparing our priceless time . Another advantage is that we can communicate almost with everyone through the Internet .

On the other hand, the disadvantages of Internet are a serious problem for today's life. The Internet is causing one of the worst diseases the Internet addiction. People are wasting their time taking part in the useless chats. There is also a danger for the teens because of the presence of paedophiles on the Net and lot of pages, which includes videos for adults.

To sum up, Internet is very necessary but we have to learn how to use it and avoid all the dangers of usage.

Bhagat Singh

Reshma
B.A.-Ist year

Childhood and Early life- Bhagat Singh was born on 27th September 1907 at Banga in Lyallpur district (now Pakistan) to Sardar Kishan Singh and Vidyavati. At the time of his birth, his father Kishan Singh, uncles Ajit and Swaran Singh were in jail for demonstrations against the Colonization Bill implemented in 1906. His uncle, Sardar Ajit Singh was a proponent of the movement and established the Indian Patriot's Association. He was well supported by his friend Syed Haidar Raza in organizing the peasants against the Chenab Canal Colony Bill. Ajit Singh had 22 cases against him and was forced to flee to Iran. His family was the Supporter of the Ghadar Party and the politically aware environment at home helped incite a sense of patriotism in the heart of young Bhagat Singh.

Bhagat Singh studied till the fifth class in his village school, after which his father Kishan Singh got him enrolled at the Dayanand Anglo Vedic High School in Lahore. At a very young age, Bhagat Singh started following Non-Cooperation Movement, initiated by Mahatma Gandhi.

He was pursuing B.A. examination when his parents planned to have him married. He vehemently rejected the suggestion and said that, if his marriage was to take place inslave-India, my bride shall be only death.

Execution- On March 23, 1931, 7:30 am Bhagat Singh was hanged in Lahore Jail with his comrades Rajguru and Sukhdev. It is said that the trio proceeded quite cheerfully towards the gallows while chanting their favourite slogans like "Inquilab Zindabad" and "Down with British Imperialism". Singh and his peers were cremated at Hussainiwala on the banks of Sutlej river.

He died a martyr at the age of just 23 years.

Following his execution, on March 23, 1931, the supporters and followers of Bhagat Singh regarded him as a "Shaheed" (martyr).

मीडिया दर्पण

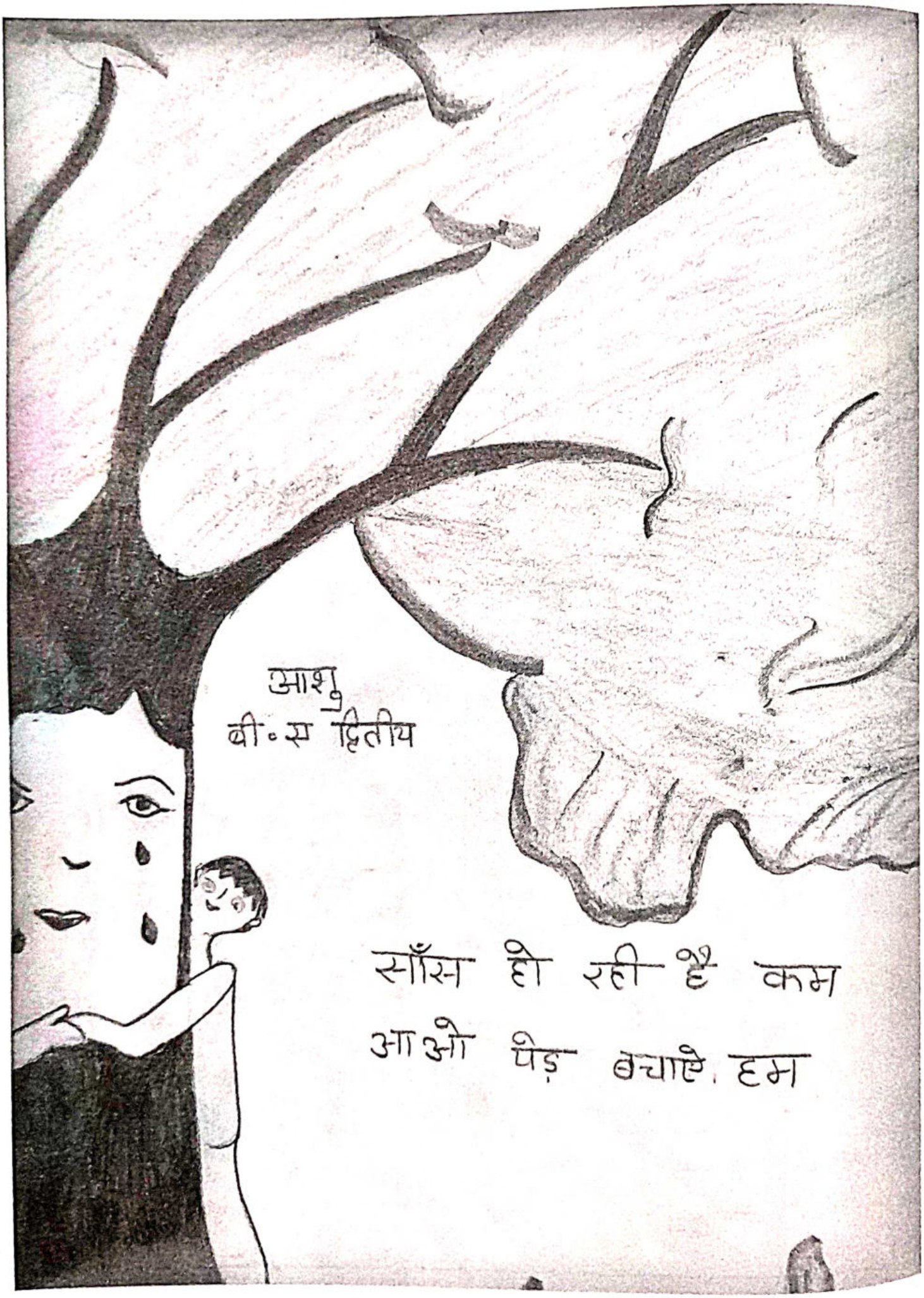
आशु
बी॰ स द्वितीय
साँस हो रही है कम
आओ पेड़ बचाएँ हम

महाविद्यालय समाचार-पत्रों के आइनें में

जयंती पर डा. कलाम को प्रतियोगिताओं के जरिये किया याद

गांधी व लाल बहादुर शास्त्री जयंती पर हुए कार्यक्रम

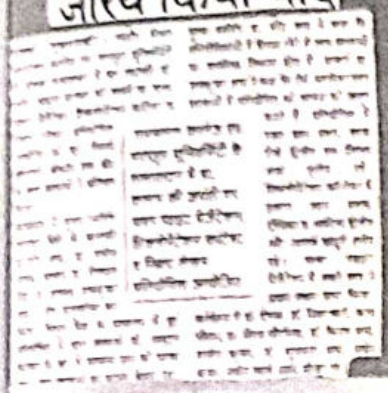

23 सितंबर 2017

पांच दिवसीय शिविर शुरू

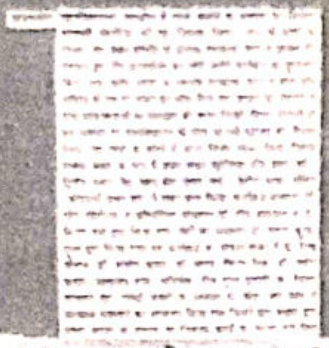

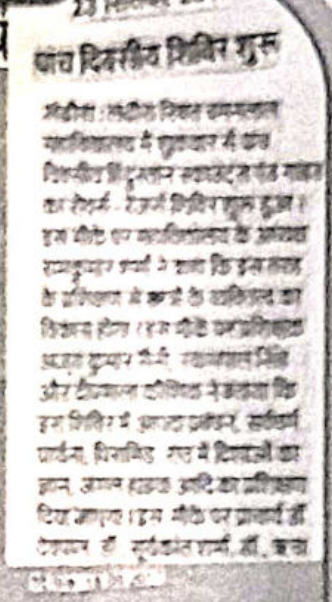

लंढौरा : लंढौरा स्थित चमनलाल महाविद्यालय में गुरुवार से पांच दिवसीय हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स का रोवर्स-रेंजर्स शिविर शुरू हुआ। इस मौके पर महाविद्यालय के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास होगा। इस मौके पर प्रशिक्षक अजय कुमार सैनी, ... सिंह और दीपचन्द कौशिक ने बताया कि इस शिविर में प्राथमिक उपचार, सर्वधर्म प्रार्थना, सिगनलिंग, रात में दिशाओं का ज्ञान, आपदा प्रबंधन आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस मौके पर प्राचार्य डॉ. देवपाल, डॉ. सूर्यकांत शर्मा, डॉ. प्रभा ...

स्वयंसेवकों ने सीखे घायलों को बचाने के गुर

शनिवार • 23 सितम्बर • 2017

शिविर में छात्रों को दिलाई शपथ

रुड़की। लंढौरा स्थित चमन लाल महाविद्यालय स्काउट्स एवं गाइड्स का पांच दिवसीय रोवर्स रेंजर्स शिविर का आयोजन किया गया। कैंप का शुभारंभ महाविद्यालय के अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने ध्वजारोहण कर किया। उन्होंने बच्चों को अच्छा रोवर्स-रेंजर्स बनने के लिए शुभकामनाएं दीं। प्राचार्य डॉ. देवपाल ने अपने स्कूल समय के स्काउट्स एवं गाइड्स का अनुभव साझा करते हुए बच्चों को स्काउट्स गाइड्स के मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा दिलाई। इस दौरान सृष्टि प्रभारी डॉ. सूर्यकांत शर्मा, डॉ प्रभा चौहान, प्रशिक्षक अजय कुमार सैनी, राकेश पाल, दीपचन्द कौशिक, दीप अग्रवाल, डॉ किरण शर्मा, डॉ नवीन, विपुल सिंह, विशाल कश्यप तिवारी, हरप्रसाद आदि उपस्थित रहे।

चमन लाल विद्यालय में ... पर कवि सम्मेलन एवं मुशायरा किया गया आयोजित

बुधवार, 1 नवंबर 2017

जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन:

लंढौरा। लंढौरा के चमन लाल महाविद्यालय में सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें स्वतंत्रता संग्राम में वल्लभ भाई पटेल के योगदान के विषय पर चर्चा की गई। संगोष्ठी में प्रथम पुरस्कार मोहम्मद अब्दुलरहमान, द्वितीय पुरस्कार शिवानी धीमान, तृतीय पुरस्कार मोहित कुमार को दिया गया। ब्यूरो

दिनांक18.09.2017

चमन लाल विद्यालय ने हिमालय बचाने के लिये जागरूक रैली निकाली

लंढौरा–चमन लाल महाविद्यालय की ओर से रैली निकालकर हिमालय बचाने की अपील की। कालेज के प्राचार्य डा0 देवपाल ने कहा कि हिमालय बचने से ही हमारा देश बचेगा। इस मौके पर प्रबंध समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने झंडी रैली निकालकर शुरूआत की। इस अवसर पर रैली संयोजक डा0 दीपा अग्रवाल,सह संयोजक डा0 संजीव कुमार,डा0 नवनी कुमार, डा0 किरण शर्मा,डा0 रिचा चौहान ,अतुल हरित, विपुल कुमार, डा0 निशु कुमार, डा0 तरूण कुमार, डा0 इरफान, आशुतोष शर्मा, डा0 सूर्यकान्त शर्मा,सचिन शर्मा, नावेद, आसिफ, भुवन चन्द, बृजवासी, दीपाक्षी शर्मा,रीना गुप्ता आदि मौजूद रहे।

शुक्रवार, 22 सितंबर 2017

नुक्कड़ नाटक से नशा मुक्ति की सीख

शुक्रवार 15 सितंबर 2017

छात्रों ने रैली निकाल कि स्वच्छता को जागरूक

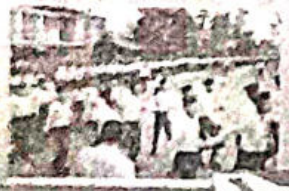

स्वयंसेवकों ने किया पथ संचलन

शनिवार, 02 सितम्बर 2017

स्थापना दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम

कवियों ने लूटी खूब वाहवाही

देहरादून
बृहस्पतिवार, 27 जुलाई 2017

कारगिल दिवस पर छात्रवृत्ति देने की घोषणा

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय की ओर से कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष कारगिल युद्ध में शहीद हुए थीथकी निवासी जितेंद्र शर्मा के नाम से 2100 रुपये की छात्रवृत्ति देने की घोषणा की गई। इस मौके पर प्रबधन समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक दिनेश कुमार, दीपा अग्रवाल, डा. किरण शर्मा मौजूद रहे। आरपी मार्डन जूनियर थिथौला में कारगि

शुक्रवार 13 अक्टूबर 2017

छात्रों को दिलाई सफाई रखने की शपथ

जागरण संवाददाता, रुड़की : चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा की ओर से गुरुवार को स्वच्छता अभियान के तहत कस्बे में जागरुकता रैली निकाली गई। साथ ही लंढौरा बाजार में साफ-सफाई की। इसमें छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डा. देवपाल ने कहा कि स्वच्छता अभियान का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के लिए कार्य करना और सभी नागरिकों को जागरूक करना है। प्रबंध समिति के अध्यक्ष राम कुमार ने कहा कि साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखने से डेंगू, चिकनगुनिया समेत अन्य बीमारियां होती हैं।

सभासद नगर पंचायत लंढौरा मनोज नायक ने छात्र-छात्राओं को अपने घर और आसपास साफ-सफाई रखने की शपथ दिलाई। इस मौके पर विपुल सिंह, डा. संजीव कुमार, डा. इरफान, आशुतोष शर्मा, विमल कांत तिवारी, डा. सूर्यकांत शर्मा, डा. नीशू कुमार, डा. ऋचा चौहान, डा. वंदना, डा. मीरा चौरसिया, शबनम, कल्पना, अनुराधा, शिवानी, विनीत कुमार, निशिथ कुमार, दिनेश शर्मा, सुमित कौशिक, दिनेश कौशिक, सचिन शर्मा, दीपक चौधरी, विपिन कुमार, विशाल कुमार, रविंद्र सिंह, मंजू, सोनिया, रीना गुप्ता, अमित बहादुर, गौरव गोयल आदि उपस्थित रहे।

बुधवार, 26 जुलाई 2017

श्रीदेव सुमन की याद में पौधे लगाए

लंढौरा के विद्यालय में मंगलवार को पौधारोपण किया गया। • हिन्दुस्तान

बुधवार • 10 जनवरी • 2018

पथ संचलन से स्वयंसेवकों ने दिया देशभक्ति का संदेश

बुधवार, 10 जनवरी 2018

राष्ट्र की उन्नति ही नागरिकों का विकास

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने किया पथ संचलन

बुधवार, 10 जनवरी 2018

लंढौरा में आरएसएस ने किया पथ संचलन

लंढौरा। चमनलाल डिग्री कॉलेज में आरएसएस का आठ दिवसीय ट्रेनिंग कैंप के समापन पर कार्यकर्ताओं ने पथ संचलन किया। रास्ते में मुस्लिम मंच ने कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। प्रवीण कुमार, बालेश्वर, सुशील, प्रदीप, रोहित नायक, संदीप सैनी इसका नेतृत्व किया गया।

दो दिवसीय संगोष्ठी

रुड़की : चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा में राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से दो दिवसीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने बताया कि 14 और 15 अक्टूबर तक होने वाली इस संगोष्ठी में जम्मू कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद की समस्या विषय पर वक्ता विचार रखेंगे।

रविवार, 17 सितंबर 2017

विश्व ओजोन दिवस पर रोपे गए पौधे

रुड़की। चमल लाल महाविद्यालय में विश्व ओजोन दिवस पर पौधे रोपे गए। इसके साथ ही स्वच्छ भारत, प्राणी एवं पर्यावराण विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता भी हुई। प्रतियोगिता में बीए द्वितीय वर्ष के रोहित कुमार प्रथम एवं बीएससी तृतीय वर्ष के दिलबाग सिंह द्वितीय रहे। इस मौके पर प्रतियोगिता संयोजक डा. मीरा चौरसिया ने ओजोन पर बढ़ते संकट से अवगत कराया। विद्यार्थियों को पर्यावरण एवं ओजोन की रक्षा के लिए संकल्प दिलाया गया। प्रतियोगिता का संचालन आशुतोष व कल्पना ने किया। इस अवसर पर डा. दीपा अग्रवाल, डा. ऋचा अग्रवाल, डा. नवीन कुमार, शबनम, रीना गुप्ता, सोनिया, अमित बहादुर विशेष योगदान दिया।

शनिवार • 2 सितम्बर • 2017

धूमधाम से मना चमनलाल कालेज का स्थापना दिवस

रुड़की। चमन लाल महाविद्यालय का पांचवां स्थापना दिवस शुक्रवार को धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शरद ने की एवं मुख्य अतिथि उत्तराखंड संस्कृत विवि हरिद्वार के कुलपति प्रो. पीयूष कांत रहे। विशिष्ट अतिथि उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति गिरीश कुमार अबस्थी रहे। कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. पीयूष कांत, गिरीश कुमार अवस्थी, शरद, ईश्वर चंद शर्मा, राम कुमार शर्मा, अरुण हरित ने की। प्राचार्य डॉ. देवपाल ने मां सरस्वती के समाचार दीप प्रज्वलन कर किया। तत्पश्चात विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर छात्र छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में तरुण कुमार गुप्ता, डॉ ऋचा चौहान, संदीप अग्रवाल, मीरा चौरसिया, डॉ. किरण शर्मा आदि मौजूद रहे।

देहरादून, गुरुवार 17 अगस्त 2017

शिक्षण सस्थानों व सरकारी दफ्तरों में जोशखरोश से मनाया गया आजादी जश्न

लंढौरा के चमनलाल महाविद्यालय में आजादी को 70वीं वर्षगांठ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि खानपुर विधायक कुंवर प्रणव सिंह चैम्पियन ने विद्यालय में ध्वजारोहण कर शौय का उदघाटन करा। संस्थापक अध्यक्ष ईश्वरचंद शर्मा, अध्यक्ष राम कुमार हरित, प्रणव सिंह चेम्पियन ने किया। इस दौरान छात्र छात्राओं ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। संस्था प्रबंध समिति के अध यक्ष राम हरित ने कहा कि देश को आजाद करानेवाल उन शहीदों को नही बुरलाया जा सकता है। जिन्होंने अपना बलिदान देकर देश को आजाद कराया। विध यक प्रणव सिंह चैम्पियन ने कहा कि देश की अखंडता, सम्प्रभुता, में कोई समझौता नही किया जा सकता। सबको एकजुट होकर देश की तरक्की के लिए कार्य करना होगा। इस अवसर पर प्राचार्य, देववाल, लॉ कालेज के सचिव अरूण हरित, निदेशक अतुल हरित, पालिकी चैयरमेन खलील अहमद, मनोज नायक, शोभाराम, तौफीक, शिव कुमार, नौशाद आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. तरूण, डॉ. विशु, डॉ. दीपा, डॉ. किरण, मीरा, संजीव, नवीन, सूर्यकांत, इरफान, रिचा, आशुतोष, विपुल, विमल, विनीत, दिनेश, रविंद्र, दीपक, मंजु, सचिन, अभिषेक, सुमित, विशाल, रीना, अमित, गौरव, दीपाक्षी, नावेद आदि का योगदान रहा।

[illegible] 2017

हर्षोल्लास से मनाया राज्य स्थापना दिवस

शिक्षण संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित

[illegible]

गुरुवार, 15 सितंबर 2017

शिक्षकों ने लिया हिंदी को बढ़ावा देने का संकल्प

हिंदी राष्ट्र की सबसे समृद्ध भाषा

[illegible]

[illegible]

गणित ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित

राष्ट्रीय गणित दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते विद्यालय के प्रबंध समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा। (छाया: नसीम रहमान)

लंढौरा, 23 दिसम्बर (नसीम रहमान): चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा जनपद हरिद्वार में भारत के महान गणितज्ञ निवास रामानुजन के जन्म दिवस के उपलक्ष में राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में लिखित गणित ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम पुरस्कार इफ्त खान व द्वितीय पुरस्कार शुभम कुमार, मयंक, प्रियंका एव तृतीय पुरस्कार गुरमीत, दीपशिखा, अर्शी ने प्राप्त किया। द्वितीय चरण में कार्यक्रम का शुभारम्भ विद्यालय के प्रबंध समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने किया। मुख्य अतिथि डा. आईडी कंसल व प्राचार्य डा. सुशील कुमार व डा. देवपाल ने दीप प्रज्वलित कर किया। संचालन डा. दिपा अग्रवाल ने किया। डा. तरुण कुमार गुप्ता ने भारत के महान गणितज्ञों व वैदिक गणित के संदर्भ में एक चलचित्र प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को संबोधित किया बाद में पुरस्कृत विजेताओं को उपहार व प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। इस मौके पर डा. ऋचा चौहान, डा. किरण शर्मा, डा. नवीन त्यागी, डा. संजीव कुमार, डा. नीशु कुमार, विमल, कान्ति तिवारी, डा. प्रभात कुमार, डा. सूर्यकान्त शर्मा आदि शिक्षक मौजूद रहे।

सोमवार, 16 अक्तूबर 2017

कश्मीर समस्या को विदेशी ताकतों से मिल रहा बढ़ावा

लंढौरा। चमन लाल महविद्यालय में राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रो. आई एस सेठी ने कहा की जम्मू-कश्मीर में कश्मीर की समस्या को विदेशी ताकतों से वढ़ावा मिल रहा है। जम्मू-कश्मीर को मुख्य धारा में लाने का प्रयास करना होगा ताकि वहां की सामाजिक व आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके। संगोष्ठी में प्रोफेसर आशुतोष भटनागर, प्रोफेसर बीएल शाह ने भी विचार रखे। समापन पर ईश्वरचंद शर्मा, अध्यक्ष रामकुमार शर्मा, सचिव अरुण कुमार, अतुल हरित, डा. तरुण कुमार गुप्ता, डा. निशु कुमार प्रोफेसर किशोर कुमार, डॉ राजेश पालीवाल एवं दीपमाला कौशिक आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

सोमवार • 8 जनवरी • 201

आरएसएस का प्रशिक्षण वर्ग साधना स्थली

[illegible]

शनिवार 2 सितंबर 201

छात्र-छात्राओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुति

लंढौरा: चमन लाल महाविद्यालय लं
में शुक्रवार को पांचवां स्थापना दि
समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया।
मौके पर छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों
जरिये मनमोहक प्रस्तुतियां दी।
कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उत्तरा
संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार
कुलपति प्रो. पीयूष कांत ने छात्रों
सत्यम- शिवम-सुंदरम का संदेश दि
विशिष्ट अतिथि उत्तराखंड संस्
विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलस
गिरीश कुमार अवस्थी ने छात्रों को जी
में सकारात्मक सोच रखने के लिए प्रे
किया। इससे पूर्व गुरुवार रात को कॉले
में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन एवं मुशायरे
आयोजन किया। इस दौरान कवियों
शायरों ने समाज को सद्भावना से ओ
प्रोत, देश प्रेम, हिंदू-मुस्लिम एकता
भाईचारे का संदेश दिया। इस मौके
प्राचार्य डा. देवपाल, प्रबंध समि
अध्यक्ष रामकुमार शर्मा, शरत
चंद शर्मा, अरुण हरित

शनिवार, 2 सितंबर 2017

कवि सम्मेलन में कवियों ने बांधा समां

चमनलाल महाविद्यालय की चौथी वर्षगांठ पर कवि सम्मेलन

अमर उजाला ब्यूरो

लंढौरा।

चमनलाल महाविद्यालय की चौथी वर्षगांठ पर कवि सम्मेलन और मुशायरे का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर समां बांध दिया।

बृहस्पतिवार शाम को आयोजित कवि सम्मेलन का शुभारंभ पूर्व राज्यमंत्री मनोहर लाल शर्मा ने किया। समारोह की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष कल्पना सैनी ने की। इस दौरान शायर अलीम ने 'नबी-ए-पाक का जो भी गुलाम हो जाये' कविता पेश कर वाहवाह लूटी। वहीं, अफजल भाई ने 'ये मंजर देखते ही आंखों से आंसू निकल आए' कविता प्रस्तुत की। विराट, भुवनेश्वर, साहिल माधोपुरी, पंकज गर्ग, मेहताब आजाद, प्रवीण पुरी, हरी प्रकाश, महेंद्र अश्क ने भी अपने-अपने कलाम पढ़े। इस मौके पर रुड़की विधायक प्रदीप बत्रा, झबरेड़ा विधायक देशराज कर्णवाल, विद्यालय के संस्थापक ईश्वर चंद शर्मा, प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार शर्मा, प्राचार्य डॉ. देवपाल, अरुण हरित, अतुल हरित, रितुराज, ममतेश शर्मा आदि उपस्थित थे।

लंढौरा स्थित चमन लाल डिग्री कालेज की चौथी वर्षगांठ के मौके पर आयोजित मुशायरे में उपस्थित छात्र व अन्य।

रविवार, 26 नवम्बर 2017

संविधान दिवस पर प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा मे संविधान दिवस के उपलक्ष में एक प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे महाविद्यालय के सभी संकाय के छात्र-छात्राओ ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में भारतीय संविधान से सम्बधित प्रशन पूछे गये। प्रतियोगिता का शुभारम्भ चमनलाल महाविद्यालय के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया। प्रतियोगिता में ग्रुप - अ के छात्र - राहुल गिरी, अब्दुल रहमान , विनीत शर्मा, वकार आलम व अनीस के प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. नवीन त्यागी व सूर्यकान्त शर्मा ने किया। प्रश्नोतारकर्ता का कार्य विनीत कुमार ने किया प्रतियोगिता को सफल बनाने में तरुण कुमार डॉ. नीशु कुमार, डॉ. दीपा अगरवाल, डॉ. किरन शर्मा, विमलकान्त तिवारी, गोरव अग्रवाल, नवेद, आसिफ ने योगदान दिया।

शनिवार, 14 अक्तूबर 2017

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आज से

लंढौरा(ब्यूरो)। चमन लाल महाविद्यालय में रातनीति विज्ञान विभाग की ओर से 14 और 15 अक्तूबर को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगाष्ठी का आयोजन होगा। महाविद्यालय की प्रबंधन समिति के अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने बताया कि महाविद्यालय में भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोज़ित जंम्मू एवं कश्मीर में आतंकवाद की समस्या, दशा एवं दिशा पर दो दिंवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। इसमें उत्तराखंड, उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, नई दिल्ली आदि राज्यों के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रोफेसर ... छात्र छात्राओं के द्वारा प्रस्तुति की जाएगी।

मंगलवार 19 सितंबर 2017

नशा मुक्ति पर संगोष्ठी

रुड़की : चमन लाल महाविद्यालय में लंढौरा पुलिस चौकी के सहयोग से नशा मुक्ति पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पुलिस चौकी प्रभारी प्रमोद कुमार ने कहा कि नशा एक सामाजिक बुराई है। इससे मुक्ति दिलाने के लिए हम सभी को संकल्पित होने की जरुरत है। इस दौरान प्राचार्य डा. देवपाल, डा. तरुण कुमार गुप्ता, डा. दीपा अग्रवाल, डा. ऋचा चौहान आदि मौजूद रहे।

राहुल गिरी को प्रथम स्थान

रुड़की : चमन लाल महाविद्यालय में गुरुवार को सामान्य ज्ञापन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मौके पर राहुल गिरी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आदित्य दूसरे और अनु कुमार ने तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया। इस मौके पर प्रतियोगिता संयोजक डॉ. मीरा चौरसिया, डॉ. तरुण गुप्ता, डॉ1 दीपा अग्रवाल, विपुल सिंह, डॉ. ऋचा चौहान, विनीत कुमार, विमल कांत तिवारी, डॉ. नवीन त्यागी, आशुतोष शर्मा, डॉ. सूर्यकांत शर्मा आदि मौजूद रहे।

रविवार, 26 नवंबर 2[illegible]

महाविद्यालय में प्रतियोगिता का आयोजन

रुड़की (ब्यूरो)। संविधान दिवस के उपलक्ष्य में चमन लाल महाविद्यालय में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के सभी संकाय के छात्र-छात्रों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में भारतीय संविधान से संबंधित प्रश्न पूछे गये। शनिवार को प्रतियोगिता का शुभारंभ चमनलाल महाविद्यालय के अध्यक्ष रामकुमार ने संबोधन करके किया। प्रतियोगिता में ग्रुप- अ के छात्र राहुल गिरी, अब्दुल रहमान, विनित शर्मा, [illegible] आलम व अनीश ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. नवीन त्यागी व सूर्यकांत ने किया। एंकर का कार्य विनित कुमार ने किया प्रतियोगिता को सफल बनाने के लिए दीपमाला कौशिक, तरुण कुमार, डॉ. नीशु कुमार, डॉ दीपा अग्रवाल, डॉ. किरण शर्मा, विमल कांत तिवारी, गौरव अग्रवाल, नावेद आसिफ आदि ने योगदान [illegible]

जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटायी जाए

लंढौरा | हमारे संवाददाता

चमनलाल महाविद्यालय में हुई गोष्ठी में [illegible] कश्मीर से धारा 370 और अनुच्छेद 35ए खत्म करने पर जोर दिया गया। [illegible] आतंकवाद के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराया गया। [illegible] गोष्ठी में प्रोफेसर डॉ. संजीव शर्मा ने कहा कि आतंकवाद समस्या को संवाद के माध्यम से दूर किया जा सकता है। [illegible] [illegible] दिन बताया।

अधिकतर वक्ताओं ने जम्मू कश्मीर से धारा 370 और अनुच्छेद 35ए हटाये जाने पर जोर दिया। डॉ. आशुतोष भटनागर ने कहा कि मीडिया विमर्श से धारणाओं का निर्माण किया गया। वास्तविक तथ्यों को समझने प्रयास नहीं हुआ। इतिहास को तोड़ मरोड़कर देश की जनता के सामने प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में प्रचार्य विधायक देशराज कर्णवाल, प्रो. संजीव कुमार शर्मा, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. अजय परमार, डॉ. [illegible] शर्मा, रामकुमार शर्मा, प्राचार्य डॉ. देवपाल, डॉ. नीशु कुमार, मंजीव शर्मा समेत कई विशेषज्ञ मौजूद रहे।

जम्मू कश्मीर को विशेष अधिकार करें समाप्त

लंढौरा: चमन लाल महाविद्यालय में चल रही राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन वक्ताओं ने कहा कि संविधान ने जम्मू कश्मीर को जो विशेषाधिकार दिया है, उसको समाप्त किया जाए। जम्मू के अंदर आतंकवाद को विदेशी ताकतें बढ़ावा दे रही हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रो. आइएस सेठी ने कहा कि जम्मू कश्मीर की समस्या को बढ़ावा देने में विदेशी ताकतों का हाथ है। सरकार को एक जनमत संग्रह भी कराना चाहिये। इसके अलावा वहां के लोगों को दिये गये विशेषाधिकार को समाप्त कर अन्य राज्यों की भांति ही जम्मू कश्मीर को भी अधिकार दिये जाए। प्रो. आशुतोष भटनागर ने कहा कि 70 साल से भारत विरोधी शक्तियां इस समस्या को बढ़ाने का काम कर रही है। इस मसले को सुलझाने के लिये निरर्थक वार्ता की जा रही है। भारत को पाकिस्तान और चीन के पैंतरों से सावधान रहना होगा। प्रो. बीएल शाह ने कहा कि संवाद से ही इस समस्या का हल निकलेगा। इस मौके सह संस्थापक ईश्वरचंद शर्मा, अध्यक्ष राजकुमार शर्मा, सचिव अरुण कुमा[illegible] [illegible]

मंगलवार, 9 जनवरी 2018

किसी भी धर्म का विरोधी नहीं संघ

आरएसएस का शिविर चमनलाल महाविद्यालय में

[illegible]

शनिवार, 14 अक्तूबर 2017

लंढौरा में आतंकवाद समस्या पर चर्चा आज

लंढौरा। चमनलाल महाविद्यालय में शनिवार को गोष्ठी में आतंकवाद की समस्या पर चर्चा की जाएगी।

विद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से आयोजित हो रहा है। कार्यक्रम में यूपी, उत्तराखंड, राजस्थान, मध्य प्रदेश, दिल्ली पंजाब के विश्वविद्यालयों के कई प्रोफेसर और शोध छात्र-छात्राएं शिरकत करेंगे।

सोमवार • 16 अक्टूबर • 20

संगोष्ठी आयोजित

लंढौरा। चमनलाल डिग्री कालेज में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रोफेसर आईएस सेठी ने कहा कि विदेशी फंडिंग से जम्मू कश्मीर में आतंकवाद चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर को मुख्यधारा में लाने के लिए वहां की सामाजिक, सांस्तिक, आर्थिक संरचना को मजबूत करना होगा। इस मौके पर प्रो. आशुतोष भटनागर, रामकुमार शर्मा, वरुण गुप्ता, प्राचार्य देवपाल, डॉ. नीशू कुमार, दिनेश कौशिक, किशोर कुमार, अतुल हरित, वरुण, संजीव कुमार, विमल कांता आदि रहे।

शुक्रवार • 15 सितम्बर • 2017

हिंदी व्याकरण स्पर्धा में शिवानी ने बाजी मारी

रुड़की (एसएनबी)। लंढौरा स्थित चमन लाल महाविद्यालय में गुरुवार को हिंदी दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में [illegible] हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

प्रतियोगिता में बीए तृतीय वर्ष की छात्रा शिवानी चौहान प्रथम, बीए द्वितीय वर्ष की [illegible] द्वितीय व बीए तृतीय वर्ष की छात्रा [illegible] ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय के प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने विद्यार्थियों को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। हिंदी हमारी मातृभाषा है, जो व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ती है। हिंदी ने ही पूरे देश को एक सूत्र में पिरोया है।

इस मौके पर कॉलेज प्राचार्य डा. देवपाल, डा. पी० चौरसिया, आशुतोष शर्मा, डा. दीपा अग्रवाल, डॉ. रिचा चौहान, कल्पना, दीपाली शर्मा, रीना गुप्ता, डॉ. इरफान, डॉ. वरुण गुप्ता, डॉ. किरण शर्मा आदि मौजूद रहे।

इफत ने मारी बाजी

रुड़की : चमन लाल डिग्री कॉलेज में गणितज्ञ श्रीनिवास रासमानुज के जन्मदिवस के मौके पर एक विज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें इफत खान प्रथम, शुभम कुमार, मयंक, प्रियंका द्वितीय एवं गुरमीत, दीपशिखा, अर्शी तृतीय रहे। इस मौके पर मुख्य अतिथि डॉ. आईडी कंसल, महाविद्यालय के प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार शर्मा, प्राचार्य डॉ. सुशील कुमार डॉ. दीपा अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

गुरुवार, 27 जुलाई 201

हर को सर्वश्रेष्ठ रोवर्स, मोनिका को सर्वश्रेष्ठ रेंजर का पुरस्कार

राज्य को स्वच्छ और पूर्ण साक्षर बनाने का संकल्प

रंगोली सजाकर किया राज्य स्थापना दिवस का स्वागत

गुरुवार, 27 जुलाई 201

स्वर्ण पदक और छात्रवृत्ति मिलेगी

लंढौरा। चमनलाल महाविद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने कहा इतिहास में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा को कारगिल शहीद जितेंद्र शर्मा के नाम से स्वर्ण पदक और 2100 रुपये की छात्रवृत्ति दी जाएगी।

कार्यक्रम में कारगिल शहीद जितेंद्र शर्मा पुत्र रामगोपाल शर्मा निवासी थिथकी की कुर्बानी पर प्रकाश डाला गया। प्रबंध समिति अध्यक्ष ने कहा कि कॉलेज में स्नातक इतिहास विषय में सर्वोच्च अंक हासिल करने वाले छात्र छात्रा को हर वर्ष

बृहस्पतिवार • 17 अगस्त • 2017

चमनलाल कालेज में धूमधाम से मनाया स्वतंत्रता दिवस

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

लंढौरा।

नगर के मंगलौर रोड स्थित चमनलाल महाविद्यालय में, स्वाधीनता की 71वीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। मुख्य अतिथि विधायक कुंवर प्रणव सिंह चैंपियन ने इस अवसर पर ध्वजारोहण किया।

... के लिए हमेशा तत्पर रहें। विधायक ने बच्चों को भी अपने देश के गौरव से परिचित होने के लिये इतिहास को पढ़ने की सलाह दी। विधायक ने ढौरागी निवासी अरविंद सैनी

कहा, आजादी की सुरक्षा के लिए सभी को तत्पर रहना होगा

नमक फोर्सेस में चयनित युवक को

रविवार, 24 दिसम्बर 2017

गणित प्रतियोगिता में इफत खान ने बाजी मारी

रुड़की। चमनलाल महाविद्यालय में महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन का जन्म दिवस राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर गणित ज्ञान प्रतियोगिता में इफत खान ने बाजी मारी। प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में इफत खान ने प्रथम, शुभम कुमार, मयंक, प्रियंका ने द्वित्तीय व गुरमीत, दीपशीख और अर्शी ने तृतीय स्थान हासिल किया। अव्वल छात्रों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर अध्यक्ष रामकुमार शर्मा, डा. आईडी कंसल, प्राचार्य डा. सुशील उपाध्याय, डा. ऋचा शर्मा, किरण शर्मा, एन. त्यागी, आशुतोष, मीरा, इरफान

प्रतियोगिता में इफत खान ने मारी बाजी

लंढौरा। चमनलाल महाविद्यालय में आयोजित लिखित गणित ज्ञान प्रतियोगिता में छात्रा इफत खान ने बाजी मारी।

महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन जन्म दिवस लंढौरा चमनलाल महाविद्यालय में राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया गया। इसमें लिखित गणित ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में इफत खान ने प्रथम, शुभम कुमार, मयंक, प्रियंका ने द्वित्तीय व गुरमीत, दीपशीख और अर्शी ने तृतीय स्थान हासिल किया।

प्रतियोगिता में अव्वल रहने वाले छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस मौके पर रामकुमार शर्मा, डॉ. आईडी कंसल, प्राचार्य डॉ. सुशील कुमार, डॉ. ऋचा शर्मा, किरण शर्मा, एन

सोमवार, 16 अक्टूबर 2017

...में जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने पर दिया जोर

[illegible]

...इंडेन हो रहे है यंहा के लोग को पत्थर फेंकने के लिए पैसा मिलता है जिस के कारण वह काम नहीं करते। प्रो. रेड्डी ने कहा अगर वंहा धारा 370 हटा दी जाए तो वंहा के लोग भारत के पक्ष में पक्ष करेंगे क्योंकि उन्हें भारत से ही मुक्त की अनेक सुविधाएं मिलती है। प्रो रेड्डी ने कहा कि धारा 370 की वजह से वंहा रोजगार उद्योग आदि को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अब हमारी सेना इतनी सक्षम है कि वो किसी आतंकी घटना से निपट सकती है। मुख्य समस्या जम्मू एवं कश्मीर को मुख्य धारा में लाने की है। इसके लिए वंहा सामाजिक, सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में जम्मू एवं कश्मीर अध्यक्ष केंद्र के निर्देशक प्रो आशुतोष भटनागर ने कहा कि आज जम्मू एवं कश्मीर कि नहीं बल्कि भारत की समस्या है। भारत को ही इस का समाधान ढूंढना होगा। पिछले 70 सालो में भारत विरोधी शक्तिया ने अपने प्रयासों से हमें समाधानो से दूर किया है। निराधार तर्कों और तथ्यहीन बहसो के चलते हम कही नहीं पहुंच सके। आज समय की मांग है कि तथ्यों वे तर्को के आधार पर बात करे। प्रो बी एल शाह वैश्विक कूटनीति को को समझ भारत की क्षमताओ को पहचानने निर अपराधियो के हत्यारे का आम निवासी हमारा अपना भाई है वह स्थापित करने और मनो को जोड़ने की है साथ ही हमें पकिस्तान पैंतरों और चीनी चलो से भी सावधान रहना होगा, यदि हम सब मिलकर यह कर सके तो विजय भारत की होगी। संगोष्ठी का मंच संचालन डॉ. तरुण कुमार गुप्ता ने किया महा विद्यायलय के प्राचार्य डॉ देवपाल ने सभी अतिथियों को धन्यवद दिया तथा संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए समन्वयक डॉ. निशु कुमार एवम सभी अध्यापक एवं कर्मचारियों को बधाई दी संगोष्ठी में प्रो. आशुतोष भटनागर, डॉ. एस एम् सेमवाल, प्रो किशोर कुमार, डॉ. राजेश पालीवाल, डॉ दीपा अग्रवाल, डॉ संजी...

संस्कृत अनुभाग

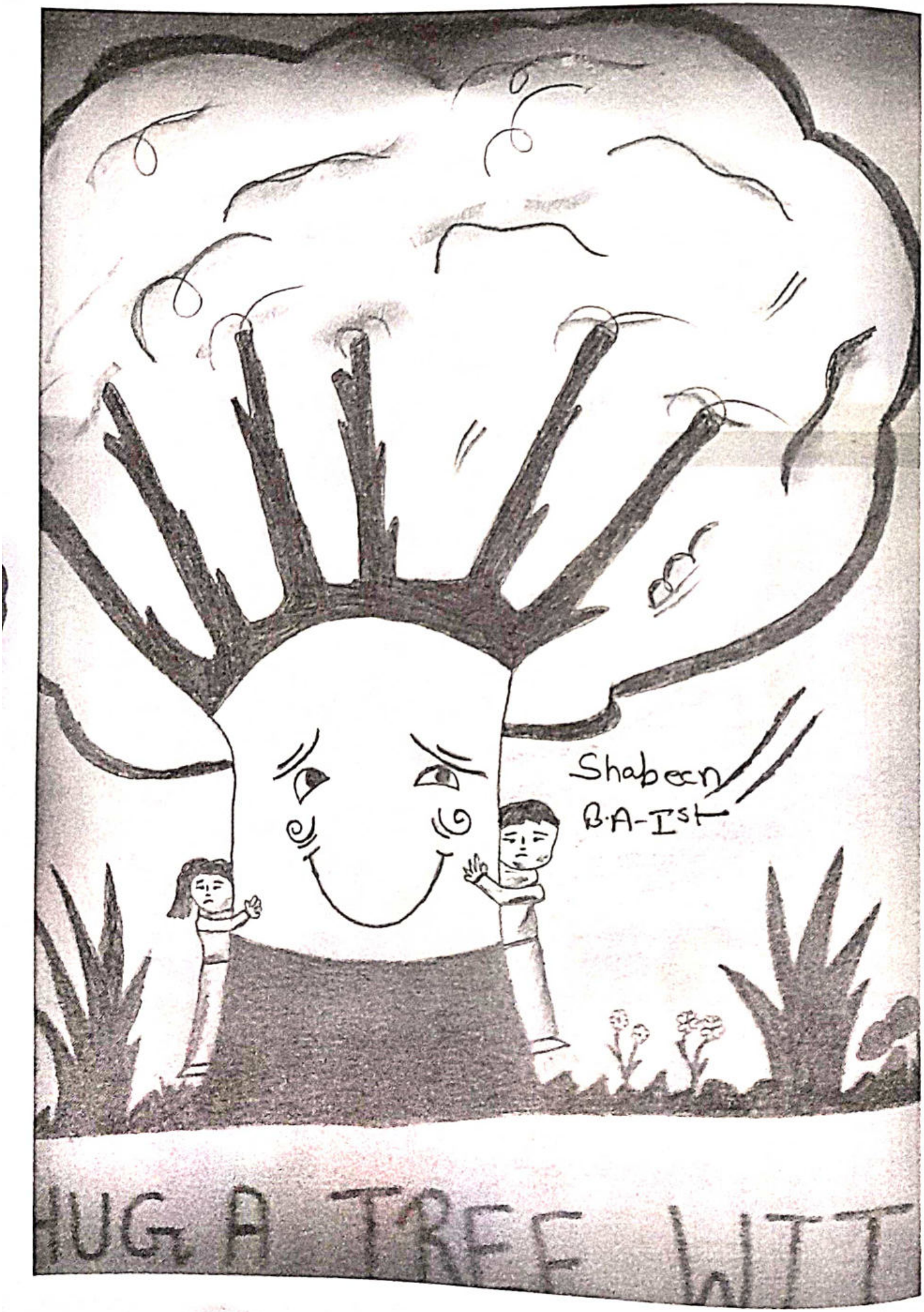
Shabeen
B.A-Ist
HUG A TREE WIT

संस्कृतवाङ्मये वैकल्पिकचिकित्सापद्धतयः

डॉ. अनिता रानी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

इदं शरीरं पञ्चभूतैर्विनिर्मितं वर्त्तते। अस्मिन् शरीरे स्थितेऽल्पज्ञोऽल्पशक्तिमान् अयुक्ताहारविहारादिकारणेन स्वशरीरं रूजाग्रस्तमनुभवति। स्वस्थो रोगग्रस्तो न भवेद् रोगग्रस्तश्च नीरोगः भवेदित्यत्र चिकित्साविज्ञानस्य अथवा आयुर्वेदशास्त्रस्य प्रयोजनमस्ति। चरक, सुश्रुत, वाग्भट्टाश्च आयुर्वेदस्य वृद्धत्रयी। आयुर्वेदस्य प्रतिष्ठापकाः आचार्याः निर्विवादरूपेण स्वीकुर्वन्ति यत् वातपित्तादि-दोषेषु धातुषु च विषमता तथा, शरीरस्य विपरीतानुपातेन विकासवृद्धिना शारीरिकविकारः रोगः अस्ति। एषां सम्यगवस्थास्थितिः आयोग्यम् उच्यते। आयुर्वेदः कथयति- प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थस्यक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च। प्राचीनग्रन्थचरणव्यूह आयुर्वेदं ऋग्वेदस्योपवेदोमन्यते। प्रसिद्धः कोषकार आप्टेमहाशयोऽपि एवमेवामन्यत। महर्षिदयानन्दोऽपि ऋग्वेदस्योपवेदमायुर्वेदममन्यत। तत्र वस्तुतः ऋग्वेद आयुर्वेदज्ञस्य दार्शनिकदृष्टया सिद्धान्तानां प्रतिपादनं जातमिति दृष्टमेव। बाहयोपयोगि-चिकित्सा अथर्ववेदेन व्यापकरूपेण प्रत्यपाद्यत। ऐतत निर्विवादरूपेण सत्यम् अस्ति, यत् आयुर्वेद, योग, प्रकृतिक चिकित्सा च विश्वस्य प्राचीनतम् चिकित्सा विधाः सन्ति। ताः विशुद्धरूपेण भारतीयाणां ऋषिणां पद्धतयः सन्ति। यथा 'सा प्रथमा संस्कृतिविश्वारा'।

अथर्ववेदानुसारं व्यावहारिकोपचारैश्चिकित्सा रोगादिविनाशिका तथा आध्यात्मिक (योगादि) दृष्ट्या रोगादिनां समूलोन्मूलनं सम्भवति। श्वेताश्वरोपनिषद चाप्याह- 'न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निनमयं शरीरं। अर्थात् पञ्चभूतानां वशीकराणान्तरण वार्धक्यं व्यथयति ईश्वर प्राणिधाने न मृत्युरपि वा। वस्तुतः आयुर्वेद आयुषो विज्ञानमेव।

पुरूषार्थचतुष्टयेषु धर्मस्य प्रमुखं स्थानमिति सर्वविदितम्। शरीरं सर्वथा संरक्षणीयमिति शास्त्रविदामाकूतम्। आचार्याः 'आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि' कथयन्तः तावदेतच्छरीरस्य निरतिशयं महत्त्वमेवोद्भावयन्ति।

आयुर्वेददृष्टया अथर्ववेद अत्यन्तमहनीयः ग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन् आयुर्वेदस्य समस्तरोगाणां वर्णनमस्ति। अथर्ववेद आयुर्वेदस्य मूलाधारोऽस्ति। अत्र आयुर्वेदसम्बद्ध-विषयाणां वर्णनं प्राप्यते। यथा- भिषक, भिषग्गणाः, भिषककर्माणि- भैषज्यं-शरीराङ्गनि-दीर्घायुष्यं-नैरोग्यम्-तेजःवर्चः-वशीकरण-- वाजीकरण -रोगनाशकर्मण्यः-विविधौषधीनां, नाम गुण-कर्माणि रोगनामानि-चिकित्सा-कृतिनाशनं-सूर्य-चिकित्सा जल-चिकित्सा विष-चिकित्सा पशु-चिकित्सा प्राण-चिकित्सा शल्य-चिकित्सादयः। ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदार्थर्ववेदेभ्यः पञ्चमोऽमायुर्वेदः।

भारतीय संस्कृतिः

किरन लता
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

पुरातनः इतिहासः, अनन्या भौगोलिकरचना, वैविध्यमयाः जनसमूहाः, धर्माः, विभिन्नाः सम्प्रदायाः, अनेके उत्सवाः, नैकानि आचरणनि, प्राचीनपरम्परा, परितः विद्यमानानां देशानां प्रभावः-एवं विभिन्नाः विषयाः भारतीयसंस्कृतिम् अरचयन।

सिन्धुखावतः आरवधा भारतीय संस्कृतिः वेदकाले महता प्रमाणेन विकसिता अभवत्। बौद्धधर्मस्य उन्नतिः-अवनतिः च, भारतस्य सुवर्णयुगं, यवनानाम् आक्रमणं, यवनानां शासनं, अन्यदेशीयानां शासनम् इत्येतेषु कालेषु भारतीयसंस्कृतेः विस्तारः, विविधता च अधिका अभवत। भारतस्य धार्मिकाणि आचरणनि, भाषाः पद्धतयः सम्प्रदायाः च गतेभ्यः 5000 वर्षेभ्यः अस्याः अनन्यसंस्कृते साक्षिरूपेण सन्ति। विभिन्नानां धर्माणां, सम्प्रदायानां संयोजनम् अपि जातम् अस्ति भारतीयसंस्कृतौ। एतस्याः संस्कृतेः प्रभावः जगतः अन्यासां संस्कृतीनाम् उपरि अपि जातः अस्ति महता प्रमाणेन। हिन्दूधर्मस्य बौद्धधर्मस्य, जैनधर्मस्य, सिख-धर्मस्य जन्मभूमिः भारतम्। समग्रे विश्वे एव अब्रह्मं धर्माणाम् अनन्तरस्य स्थानम् अस्ति एव तृतीयः महाधर्मः। चतुर्थे स्थाने अस्ति बौद्धधर्मः। एतयोः द्वयोः धर्मयोः अनुयायिनः 1.4 शतकोटयपेक्षया अधिकाः सन्ति। भारतं विश्वे एव महान धार्मिकवैधिताया: देशः। अत्रत्यानां जनानां जीवने अद्यापि धर्मः निर्णायकं पात्रं निर्वहति। भारतस्य प्रमुखः धर्मः हिन्दुधर्मः। यतः अत्रायाः जनसंख्यायाः 80.4 प्रतिशतः अपि अधिकाः जनाः हिन्दुधर्मम् अनुसरन्ति। 13.4 प्रतिशतं जनाः इस्लांधर्मम् अनुसरन्ति। सिख-जैन बौद्धधर्माणां जनाः न केवलं भारते अपितु विश्वस्य सर्वेषु भागेषु व्याप्ताः सन्ति।

माननीयः नरेन्द्रमोदीवर्यः

बी.ए.-तृतीय वर्ष

नरेन्द्र दामोदरदासमोदीवर्यस्य समर्थत्वेन दूरदर्शी नेतुः स्वरूपे आदरं कुर्वन्ति। यः पारदर्शि निश्चितरित्या च सर्वेषां। जीवनं परिवर्तयन समीकुर्वन च वर्तते। महोदयः कुशलः वक्ता निपुणः मन्त्रणाकार चास्ति। श्री नरेन्द्रमोदीक्षेत्रे ग्रामीणानां-नागरिकानां समानं स्नेहं प्राप्नोति। तस्य अनुयायिषु समाजस्य प्रत्येकसम्प्रदायस्य धर्मस्य-आर्थिकवर्गस्य च जनाः समाविष्टाः सन्ति। उत्तरगुजरातराज्यस्य महेसाणामण्डलस्य वड़नगरनामकः कश्चन: लघुग्रामः, यत्र 1950 तमे वर्षे सितम्बरमासस्य सप्तदशे दिनाङ्के नरेन्द्रमहोदयस्य जन्म अभवत्। श्री नरेन्द्रमोदीवर्येण भ्रष्टाचारविरूद्धे आन्दोलने 1975 तमे वर्षे। आपत्यकाले यदा भारतीयनागरिकाणां मूलाधिकाराणां हननं जायमानम् आसीत् तदा नरेन्द्रमोदीवर्येण महत्त्वपूर्णा भूमिका निरूढा। श्री नरेन्द्रमोदीवर्यः नेतृत्त्वे शिक्षणं क्षेत्रे-कृषि क्षेत्रे -आरोग्यसेवया सहितं नैकेषु क्षेत्रेषु महत् परिवर्तनं। तेन राजयस्य उज्ज्वलभविष्याय स्वदृष्टिः स्थिरिकृता। श्री नरेन्द्रमोदीवर्यः स्वकारीयानां प्रशासनविभागानां पुनः व्यवस्थां कृत्वा गुजरातप्रान्तं सफलतापूर्वकं आर्थिक समृद्धौ प्रथम स्थाने आनीतवान्। माननीयः नरेन्द्रमोदीवर्यः 2014 तमस्य वर्षस्य मई मासस्य षडविंशतितमे दिनाङ्के। राष्ट्रपति प्रणबमुखर्जी महोदयः प्रधानमन्त्रिपदस्य गृहीतवान्। अधुना सः प्रधानमन्त्रित्वेन देशस्य मार्गदर्शनं कुर्वन् अस्ति।

संस्कृत–भाषायाः महत्वम्

प्रियंका
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

किं नाम संस्कृतमिति जिज्ञासितं चेत् परिष्कृतं, परिशुद्धं, व्याकरणादिदोषरहितं यत् तत् संस्कृतम्। प्राचीनैः ऋषिभिर्मुनिभिश्च भाषागतदोष-परिष्कारेण, अपशब्दादिदोषवारणेन या परिष्कृता भाषा व्यवहृतिमानीता सैव संस्कृत-भाषा-नाम्ना सम्बोध्यते, प्रशस्यते, आद्रियते च। 'विद्वांसो हि देवाः' विद्वज्जनव्यवहृता चेयं भाषा। सैव देवभाषा, देववाणी, गीर्वाणवाणी, गीर्वाणगीरित्यादिभिर्नामधेयैः व्यवह्रियते। इयमेव भाषा विकृतिमापन्ना प्राकृतभाषापदमुपगतवती। सेयं भाषा भारतीयानां प्राणरूपिणी, जीवनोन्नयिका, सत्पथप्रदर्शिनी, आचारविचारप्रवर्तिनी, कर्तव्याकर्तव्यबोधिनी, लोकद्वयहितसम्पादिनी च!

भारतवर्षस्य समस्तमपि प्राचीनं वाङ्मयं संस्कृतभाषामाश्रित्यैवावतिष्ठते। निखिलमपि वैदिकं वाङ्मयं, रामायणं, महाभारतं, पुराणानि, स्मृतिग्रन्थाः, दर्शनानि, धर्मग्रन्थाः, महाकाव्यानि, काव्यानि, नाटकानि, गद्यकाव्यानि, गीतिकाव्यानि, आख्यानसाहित्यम्, नीतिग्रन्थादयश्च संस्कृतभाषायामेवोपलभ्यन्ते। न केवलमेतदेव, व्याकरणं, काव्यशास्त्रं, गणितं, ज्योतिषम्, आचारशास्त्रं, काव्यशास्त्रम्, आयुर्वेदः, धनुर्वेदः, वास्तुकलाशास्त्रम्, अर्थशास्त्रम्, राजनीतिशास्त्रम्, ऐतिह्यम्, छन्दःशास्त्रम्, कोशग्रन्थाश्च संस्कृतभाषा गौरवमभिवर्धयन्ते ज्ञानस्य विज्ञानस्य न तादृशं किमप्यङ्गम् यन्नैवोपलभ्यते संस्कृतभाषायाम् प्राचीनभारतीयसहित्यानुशीलानेन स्फुटमेतदवगम्यते यद् ईसवीयसंवत्सरात् पूर्वं गीर्वाणगीरिय जनसाधारणे व्यवहृताऽभूत। न केवलं विद्वज्जनव्यहृतभाषारूपेणैवेय प्रायुज्यत, अपितु लौकिकानामपि व्यवहारास्पदम भूत।

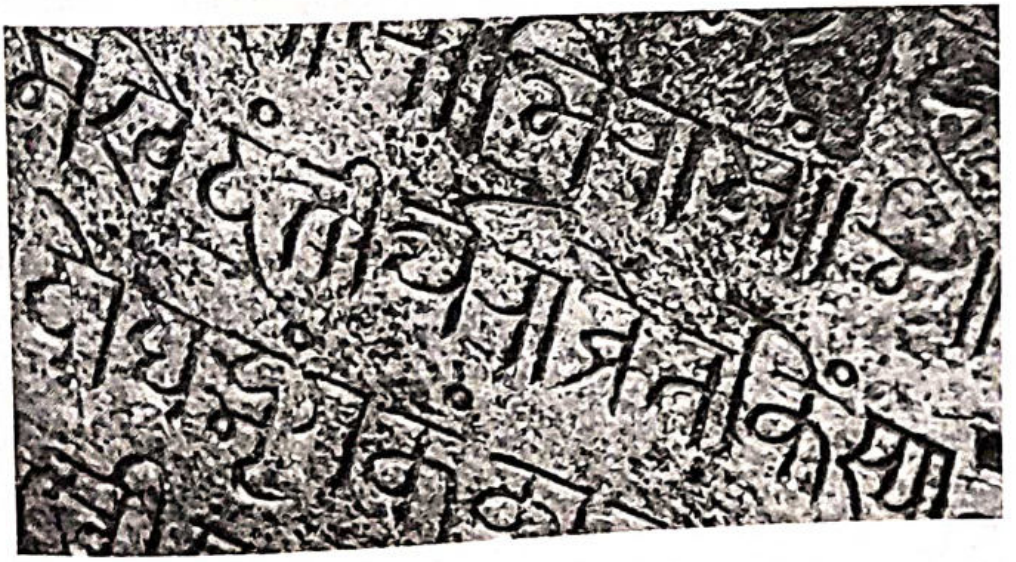

वर्णव्यवस्था आश्रम व्यवस्थाश्च

स्वाति
बी.ए.-प्रथम वर्ष

वर्णव्यवस्था- ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्यशूद्राश्चत्वार इमे वर्णाः। वेदानां वेदाङ्गानां चाध्ययनमध्यापनं, यजनं, याजनं, विद्याया धनस्य च दानं, धनादि-दानस्य स्वीकरणं च ब्राह्मणस्य कर्त्तव्यम्। 'अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्रह्मकर्म स्वभावजम्। देशस्य समाजस्य च, रक्षणं क्षत्रियस्य परमो धर्मः। स विपत्ते क्षताद् वा लोकं त्रायते। अतः साधु निगदितं कविवरेण्येन कालिदासेन-'क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ़ः' (रघु.)। कृषिर्गोरक्षा वाणिज्यं च वैश्यस्य प्रमुखं कर्म। 'कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्' (गीता 17.44)। एषु कर्मसु वैश्यैः समुन्नतिः कार्या। श्रमसाध्यं शारीरिकं च कार्यं शूद्रस्य प्रधानं कर्त्तव्यम्। 'परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्' (गीता 17.44)। यो यादृशं कर्म कुरुते तादृशं वर्णमवाप्नोति। सर्वे वर्णोः स्वं स्वं कर्म विदधीरन्।

आश्रमव्यवस्था- ब्रह्मचर्यगृहस्थवानप्रस्थसन्यासाश्चत्वार एते आश्रमाः। स्ववयोऽनुरूपमाश्रममाश्रयेत्, तदाश्रमनिर्दिष्टनियमान् पालयेच्च। आपञ्चविंशतिवर्ष ब्रह्मचर्याश्रमः। विधाध्ययनं, तपोमयजीवनयापनं सर्वविधगुणानां सङ्ग्राह्याश्रमेऽस्मिन् प्रधानं कर्त्तव्यम्। आपञ्चाशद्वर्ष गृहस्थाश्रमः। भौतिकी शारीरिकी मनासिकी च समुन्नतिः भौतिकविषयाणामुपभोगः दाम्पत्यजीवनयापनं, वंशप्रतिष्ठायै सन्तानोत्पत्तिश्चाश्रमऽस्मिन् विशिष्टं कर्म। पञ्चाशद्वर्षानन्तरं वानप्रस्थाश्रमे प्रवेशः। सपत्नीके ईश्वराराधनं, संयमपालनं योगादिकर्मसु विशिष्टा प्रवत्तिश्च तत्र प्रमुखं कर्म। षष्टिवर्षानन्तरं यदैव वैराग्यभावना समुत्पद्यते, तदैव संन्यासाश्रम आश्रयणीयः। यदहरेव विरजते तदहरेव प्रव्रजेत। भौतिकविषयान् परित्यज्य योगाभ्यासे रतिः, पुण्यार्जने प्रवृत्तिः समाधौ मनसः स्थितिः, लोकोपकरणे च विनियुक्तिः परिव्राजकानां प्रथमं कर्तव्यम्।

स्त्रीशिक्षाया आवश्यकतोपयोगिता च

सोनम
बी.ए.-प्रथम वर्ष

शिक्षा नाम जीवने शुभाशुभावबोधनी पुण्यापुण्यविवेचिनी हिताहितनिदर्शिनी कृत्याकृत्यनिर्देशिनी समुन्नतिसाधिकाऽवनतिनाशिनी सद्भावाविर्भावयित्री दुर्भावतिरोधात्री आत्मंसस्कृतिहेतुर्मनसः प्रसादयित्री धियः परिष्कर्त्री, संयमस्य साधयित्री, दमस्य दात्री, धैर्यस्य धात्री, शीलस्य शीलयित्री, सदाचारस्य संचारयित्री, पुण्यप्रवृत्तेः प्रेरयित्री, दुष्प्रवृत्तेर्दमयित्री, समग्रसुखनिधाना, शान्तेः सरणिः पौरूषस्य पावनी, काचिदपूर्वी शक्तिरिह निखिलेअपि भुवने।

स्त्रीशिक्षाया आवश्यकता- यदि विचारदृशा विमृश्यते परिक्ष्यिते चेद् भूयस्यावश्यकता अनुभूयते स्त्रीशिक्षायाः। स्त्रिय एवैता मातृशक्तेः प्रतीकभूताः।

निसर्गादेवैतासु पतत्युत्तरदायित्वं शिशोर्भरणस्य पोषणस्य च, गृहस्य संचालनस्य संस्थापनस्य। गृहस्थजीवनस्थसुखस्य, शान्तेचश्र, परिवारप्रपुष्टेः कुटुम्बभरणस्य च, श्वशुरश्वश्र्वोः शुश्रूषायाः परिचर्यायाश्च, शिशोः शैशवे शिक्षणस्य प्रशिक्षणस्य च, शिशौ सत्संस्काराधानस्य सच्छीलनिधानस्य च, भर्तुः सहयोगस्य सद्भावोन्नयनस्य च, अभ्यागतसपर्यायाः लोकहितसम्पादनस्य च। अनासाद्य वैदुष्यं न सम्भाव्यते स्त्रीभिः स्वीयोत्तरेदायित्वपरिपालनम्। वैदुष्यलाभाय च न केवलं विविधग्रन्थपरिशीलनमेव पर्याप्तम्, अपितु व्यावहारिकीणा विविधिनां विद्यानां च परिज्ञानमपि तासां कृते अनिवार्यम्। विविधकलाकलाप-कौशलवा पारयते दाम्पत्यजीवनं मधुरं सुखावहम् आनन्दरसावसिक्तं च सम्पादयितुम्। विशदीभवत्येस्माद् यत-पुरुषाशिक्षातव नारी-शिक्षाऽपि नितरामावश्यकी। ज्ञानविज्ञानकौशलमा धि गच्छति चेद् नारी। द्वयोपि नरनार्योस्तर्हि न केवलं तेषामेव जीवनं सुखशान्तिसमन्वितं भविताअपि तु समाजहितं राष्ट्रहितं विश्वहितं च सम्भाव्यते तैः सम्पादयितुम्।

सत्सगंति का महत्व

निशा सैनी
बी.ए.-तृतीय वर्ष

सत्सङ्गति संसार की सभी सिद्धियों की प्राप्ति का साधन है। सत्सङ्गति मनुष्य की मूर्खता को दूर करती है, व्यक्ति को सत्य का पक्ष्पाती बनाती है। उसके सम्मान में वृद्धि करती है, पापों का नाश करती है। मन की प्रसन्नता को बढ़ाती है। व्यक्ति की कीर्त्ति को चारों दिशाओं में फैलाती है। भर्तृहरि जी ने नीतिशतकम् में बताया है-

"जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नति दिशति, पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति, दिक्षु तनोति कीर्ति,
सत्सङ्गति कथय किं न करोति पुंसाम्॥"

सत्सङ्गति व्यक्ति को न्यायप्रिय, सदाचारी, स्वाभिमानी, धैर्यशाली और महान् बनाती है। सत्सङ्गति से स्वाभिमानी बना व्यक्ति स्वयं ही प्रतिष्ठा को उसी प्रकार प्राप्त करता है, जिस प्रकार पुष्पों का गुच्छा या तो लोगों के सिर पर चढ़ता है अथवा वन में नष्ट हो जाता है। भर्तृहरि जी ने नीतिशतकम् में बताया है-

"कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वने एव वा॥"

ऐसे सज्जनों को संसार का प्रत्येक व्यक्ति नमस्कार करता है, जो सज्जनों से मिलने की इच्छा करते हैं, दूसरों के गुणों में प्रसन्न होते हैं, बड़ों के प्रति नम्रता रखते हैं, अपनी पत्नी से प्रेम करते हैं, लोकनिन्दा से डरते हैं, शिव की भक्ति में आस्था रखते हैं एवं दुष्टों की सङ्गति का त्याग करते हैं। भर्तृहरि जी ने नीतिशतकम् में बताया है-

"वाञ्छा सज्जनसङ्गमें परगुणे प्रीतिर्गुरौ नम्रता
विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकापवादाद् भयम्।
भक्तिः शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्गमुक्तिः खले
येष्वेते नि वसन्ति निर्मलगुणास्तेभ्यो नरेभ्यो नमः॥"

फलों के भार से वृक्ष झुक जाते हैं। नवीन जल भरने पर, मेघ भूमि की ओर लटक जाते हैं। समृद्धि से सत्पुरूष अधिक विनीत हो जाते हैं। सत्सङ्गति से बने परोपकारियों का स्वभाव यही है। नीतिशतकम् में भर्तृहरि जी ने कहा है-

"भवन्ति नम्रास्तरवः फलोदद्रगमै-
र्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरूषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥"

महात्माओं के ये स्वाभाविक गुण बताए गए हैं- विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय में क्षमा, सभा में वाक्पटुता, युद्ध में पराक्रम, यश में अभिरूचि और शास्त्र में व्यसन अर्थात् रूचि। नीतिशतक्रम में भर्तहरि जी ने कहा है-

"विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता युधिः विक्रमः।
यशसि चाभिरूचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥"

यह सत्सङ्गति का ही प्रभाव है कि जल कमलिनी के पत्ते पर स्थित होकर मोती के आकार के रूप में शोभित होता है, सीप के बीच में गिरकर मोती बन जाता है।

विद्या और वाणी का महत्व

सोनम सैनी
बी.ए.-तृतीय वर्ष

इस संसार में विद्या ही सबसे प्रमुख धन है। विद्या व्यक्ति में सभी गुणों का विकास करके उसका संस्कार करती हैं। जो लोग विद्याविहीन होते हैं वे तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म से भी हीन होते हैं और पृथ्वी पर भार के समान पशु की भांति विचरण करते घूमते हैं। नीतिशतकम् में भर्तृहरि जी ने कहा है-

"येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥"

विद्या धन का राजा भी अपहरण करने में समर्थ नहीं है। अन्य धन को तो भाइयों द्वारा बाँटा जा सकता है किन्तु विद्या को नहीं। विद्यारूपी धन में भार नहीं होता। जैसे कहा गया है

"न चौरहार्य न च राजहार्य
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्ययेकृते वर्धते एव नित्यं,
विद्या धनं सर्वधन प्रधानम्॥"

मनुष्य को कोई भी आभूषण सुशोभित नहीं करते केवल पानी ही ऐसा भूषण है जो शुद्ध रूप से धारण किया जाता हुआ मनुष्य को सुशोभित करता है। नीतिशतकम में भर्तृहरि जी ने कहा है कि विद्या से ही व्यक्ति की वाणी संस्कारित होती है-

"केदूराणि न विभूषयन्ति पुरूषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्.कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरूषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्॥"

विद्याधन को चोर भी नहीं चुरा सकता है। यह सदैव व्यक्ति के अलौकिक कल्याण को पुष्ट करता है। व्यय किया जाने पर अथवा याचकों को दिया जाता हुआ भी निरन्तर परम्वृद्धि को प्राप्त होता है। जो लोग इस विद्याधन से सम्पन्न होते हैं, उनसे राज भी स्पर्धा नहीं कर सकता। नीतिशतकम् में भर्तृहरि जी ने कहा है-

"हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा-
प्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धि पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तेः सह स्पर्धते॥"

विद्या मनुष्य का अधिक रूप हैं, ढका हुआ गुप्त अर्थात् छिपा हुआ सुरक्षित धन है। विद्या भेगों को देने वाली और यश तथा सुख को उत्पन्न करने वाली है। विद्या गुरु की गुरु है। विदेश जाने में विद्या मित्र के समान है। विद्या परम् देवता है। विद्या राजाओं में पूजित है न कि धन! विद्या से रहित मनुष्य पशु के समान हैं। नीतिशतकम् में भर्तृहरि जी ने कहा है-

"विद्या नाम नारस्य रूपमधिकं प्रछन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकारी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः॥"

अतः मनुष्य को विद्या का अर्जन करते रहना चाहिए। निरन्तर अभ्यास से विद्या निर्मल होती है और अभ्यास के अभाव में यह विष के समान हो जाती है- "अनभ्यासे विषं विद्या॥"

पर्यावरणम्

नेहा शर्मा
बी.ए.-तृतीय वर्ष

अस्मान् परितः यानि पञ्चभूतानि सन्ति। तेषां समवायः एव परिसरः अथवा पर्यावरणम् इति पदेन व्यवहीयते। इत्युक्ते मनुष्यो यत्र निवसति, यत् खादति, यत् वस्त्रं धारयति यज्जलं पिबति यस्य पवनस्य सेवनं करोति, तत् सर्व पर्यावरणम् इति शब्देनाभिधीयते। अधुना पर्यावरणस्य समस्या न केवलं भारतस्य अपितु समस्य विश्वस्य समस्या वर्तते। यज्जलं यश्चवायुः अद्यः उपलभ्यते तत् सर्व मलिनं दषितं च दृश्यते अथवा भारतस्य राजधानी अस्ति। पर्यावरणम् पश्यतु। भारतस्य राज्येषु अन्यतमम् अस्ति। भारतदेशस्य राजधानी विश्वस्य अतिविशालासु नागरिषु अन्यतामा इति गण्यते।

ऐषा भारतस्य तृतीया बृहति नगरी वर्तते। इत्यपि विश्रुता इयं नगरी प्राचीनकाले हस्तिनापुरमिति ख्याता आसीत्। इन्द्र सभायामपि सभाजितानां भरतकुलोत्पन्नां महिपालानां राजधानी अद्यतनीय एव पर्यावरणम् मुगलवंशियानां चक्रवर्तिनां राजधानी तथा आड.ग्लानामापि अधिकारिणां केन्द्रभूमिर्भूत्वा अधुनापि भारतीयगणराज्यस्य राजधानीमदलड.करोति। पर्यावरणम् सर्वेषु प्रेक्षणीयेषुस्थानेषु बिरलामन्दिरमिति ख्यातं लक्ष्मीनारायणंमन्दिरं विशेषतया उल्लेखनीयम्। यतः मंदिरमिद भारतीय चरित्र- सस्कृतिञ्च प्रकटयति तथा भ्रंश विस्मयमपि जनयति। भारत देशस्य जीवननिरूपकं सुसद्धवनम् अस्ति। अत्रैव उच्चतमन्यायप्रदाता अत्युच्चन्यायलयो वर्तते। सर्वप्रधानपदमलडकृतवान् राष्ट्रपतिः एव विराजते। अतः भारतस्य हृदयमेव यमुनातीरे परिविस्तृता दशाधिकक्रोशमितभूभागम् आक्रमस्य अवतिष्ठते। क्रिस्यपूर्वप्रथमशतकस्य मौर्याधियेन छिलिना छिल्लीति नामाड.कितेयं नगरी तदन्तरं पर्यावरणम् बभूव। पर्यावरणम् नगरीयं पुराणनवोपभागाभ्यां द्विधा विभक्ता। अस्मान् परितः यानि पञ्चभूतानि सन्ति। तेषां समवायः एव परिसरः अथवा पर्यावरणम् इति। पदेन व्यवहीयते।

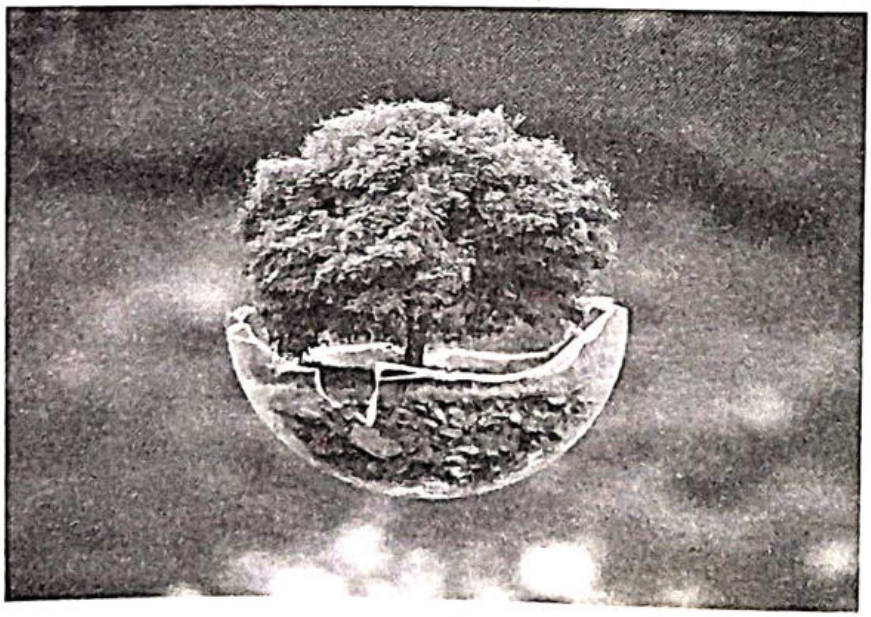

महाविद्यालय परिवार

डॉ. सुशील उपाध्याय, प्राचार्य

शिक्षक वर्ग

अनुप्रयुक्त विज्ञान (Applied Science)

रसायन विज्ञान विभाग :

डॉ. संजीव कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

भौतिक विज्ञान विभाग :

श्री विपुल सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. अरविन्द कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

गणित विभाग :

श्री विनीत कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science)

वनस्पति विज्ञान विभाग :

डॉ. मो. इरफान, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. ऋचा चौहान, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग :

डॉ. प्रभात कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

जन्तु विज्ञान विभाग :

डॉ. विधि त्यागी

कला मानविकी और सामाजिक विज्ञान (Arts/ Humanities & Social Science)

अंग्रेजी विभाग :

डॉ. दीपा अग्रवाल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. अपर्णा शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग :

डॉ. मीरा चौरसिया, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

श्री आशुतोष शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग :

डॉ. अनीता रानी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

भूगोल विभाग :

डॉ. नवीन कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग :

डॉ नीशू कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

वाणिज्य विभाग :

डॉ. किरन शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. देवपाल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

अर्थशास्त्र विभाग :

श्री विमल कान्त तिवारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग :

श्री नवीन कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

इतिहास विभाग :

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

पुस्तकालय विभाग :

श्री कुलदीप कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

चित्रकला विभाग :

कल्पना पंवार, अंशकालिक प्रवक्ता

गृहविज्ञान विभाग :

श्रीमती शबनम, अंशकालिक प्रवक्ता

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग :

श्री राजेश कुमार, अंशकालिक प्रवक्ता

प्रयोगशाला सहायक वर्ग

क्र.स.	नाम	विभाग
1.	श्री अभिषेक	भूगर्भ विज्ञान
2.	श्रीमती रीना गुप्ता	गृह विज्ञान
3.	कु. सोनिया	गृह विज्ञान
4.	कु. प्रणीता भण्डारी	कम्प्यूटर विज्ञान
5.	श्री जितेश बगडवाल	कम्प्यूटर विज्ञान
6.	श्री अमित बहादुर	चित्रकला
7.	श्रीमती प्रियंका शर्मा	रसायन विज्ञान
8.	कु. दीपाक्षी शर्मा	सूक्ष्म जीव विज्ञान
9.	श्री नवेद आसिफ	भूगोल विज्ञान
10.	श्री गौरव अग्रवाल	भौतिक विज्ञान
11.	श्री भुवन चन्द्र ब्रजवासी	जन्तु विज्ञान

लिपिक वर्ग

क्र.स.	नाम	पद
1.	श्री दिनेश कुमार	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री निशिथ कुमार	स्टेनो
3.	श्री दिनेश कौशिक	कनिष्ठ सहायक
4.	श्री सचिन शर्मा	कनिष्ठ सहायक
5.	श्रीमती मंजू रानी	कनिष्ठ सहायक
6.	श्री दीपक चौधरी	कनिष्ठ सहायक
7.	श्री विपिन कुमार	कनिष्ठ सहायक
8.	श्री विशाल कुमार	कनिष्ठ सहायक
9.	श्री सुमित कौशिक	कनिष्ठ सहायक
10.	श्री रविन्द्र सिंह	पुस्तकालय कनिष्ठ सहायक

चतुर्थ श्रेणी वर्ग

क्र.स.	नाम
1.	अमित कुमार गुप्ता
2.	अंकुर शर्मा
3.	अनुज कुमार
4.	अनुराग पाल
5.	अर्चना
6.	अर्जुन कुमार
7.	अश्वनी शर्मा
8.	बलेन्द्र
9.	दिनेश कुमार
10.	दुष्यंत कुमार

क्र.स.	नाम
11.	मालती
12.	प्रदीप कुमार
13.	प्रमोद कुमार मलिक
14.	राजन हरित
15.	संजय कुमार
16.	सतीश कुमार
17.	सत्तार
18.	सुनील
19.	विनय कुमार

गौतम बुद्ध

लक्ष्मी देवी
बी.ए.–प्रथम वर्ष

"बुद्धं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
संघम् शरणं गच्छामि"

महाविद्यालय के प्रांगण में स्थित मंदिर में
मूर्ति स्थापना हेतु सामूहिक यज्ञ
HAPPY DIWALI
रंगोली प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती हुई छात्रायें

स्वतंत्रता दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियां

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह – 2017
चमनलाल महाविद्यालय

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम

राष्ट्रीय गणित दिवस पर पुरस्कृत छात्र-छात्रा
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा (हरिद्वार)
राष्ट्रीय गणित दिवस
(NATIONAL MATHEMATICS DAY)
22 दिसम्बर 2017
हिमालय बचाओ जागरूकता रैली
चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा
हिमालय बचाओ जागरूकता रैली

स्थापना दिवस की पुर्व संध्या पर कवि सम्मेलन में

कवियों का अभिनन्दन स्वागत

स्काउट एंड गाइड का प्रशिक्षण शिविर

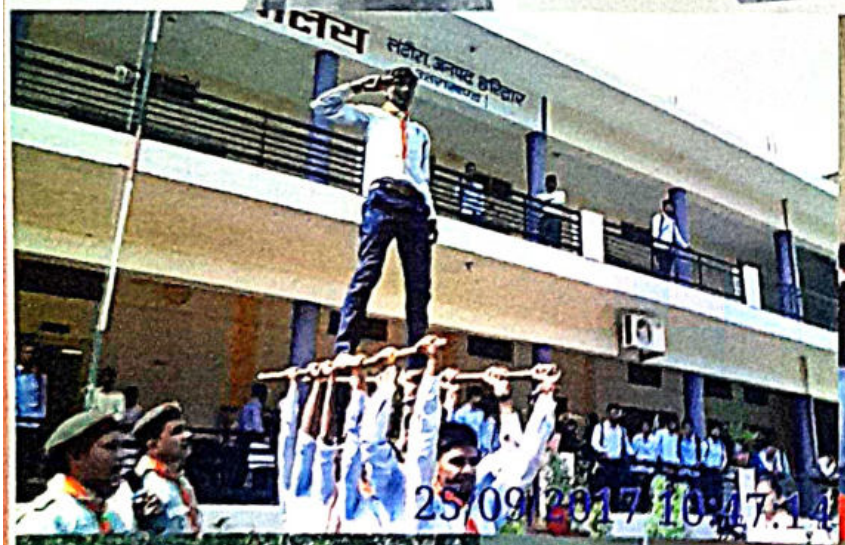

महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

महाविद्यालय स्थापना दिवस 1 सितम्बर, 2017

गर्वानुभूति के क्षण

शौर्य दीवार का अनावरण माननीय कुँवर प्रणव सिंह 'चैम्पियन' के कर कमलों द्वारा

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सम्बद्ध : श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
बादशाही थौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड-249149

श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, टिहरी गढ़वाल से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

बी.ए.	:	(विषय-हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, चित्रकला, अर्थशास्त्र, भूगोल, गृहविज्ञान, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र)	3 वर्षीय
बी.कॉम	:	(सी.एफ.ए./नॉन सी.एफ.ए.)	3 वर्षीय
गणित संवर्ग			
बी.एससी.	:	भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित भौतिक विज्ञान, गणित, भूगर्भ विज्ञान भौतिक विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान	3 वर्षीय
प्राणी विज्ञान संवर्ग			
बी.एससी.		वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान भूगर्भ विज्ञान	
बी.एससी.:		गृहविज्ञान	3 वर्षीय
बी.लिब.	:	पुस्तकालय विज्ञान	1 वर्षीय

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

एम.लिब.	1 वर्षीय
एम.ए. (योगाचार्य)	2 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (योग)	1 वर्षीय
पी.जी.डी.सी.ए.	1 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (ज्योतिष)	1 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (वास्तुशास्त्र)	1 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (पुरोहित, कर्मकाण्ड)	1 वर्षीय

Visit us at:
Website: www.cldcollege.com Fax/Phone 01332-251492, 251493
E-mail: cldegree21@gmail.com
Contact no. : 7456099119, 9719757846, 7017590322